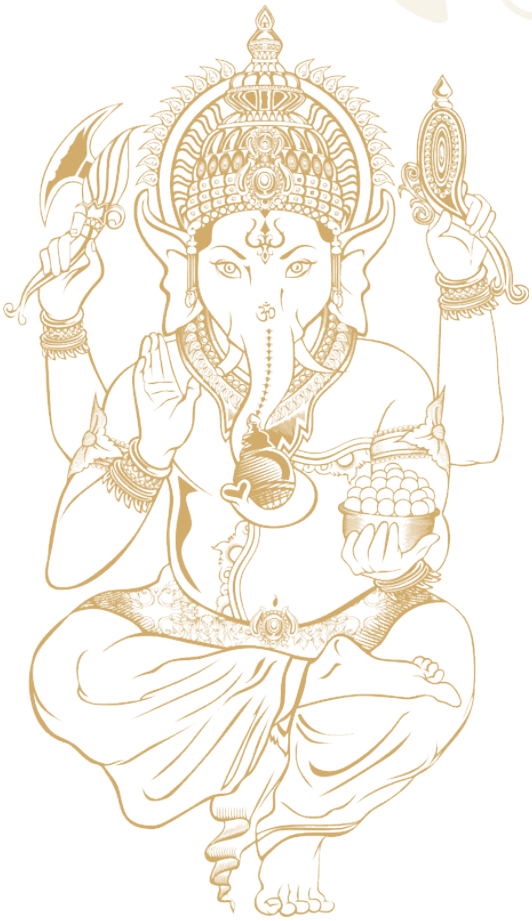

Prisa Thosar

26 Aug 2015

09:20 AM

Pune

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119811901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**26/08/2015**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**09:20:00 घंटे**
इष्ट	07:34:21 घटी
स्थान	**Pune**
राज्य	Delhi
देश	India

अक्षांश	18:34:00 उत्तर
रेखांश	73:58:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:34:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	08:45:52 घंटे
वेलान्तर	-00:01:58 घंटे
साम्पातिक काल	07:02:12 घंटे
सूर्योदय	06:18:15 घंटे
सूर्यास्त	18:53:27 घंटे
दिनमान	12:35:12 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	08:32:36 सिंह
लग्न के अंश	20:41:11 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कन्या - बुध
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**पूर्वाषाढ़ा - 2**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	आयुष्मान
करण	विष्टि
गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	धा-धारिणी
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1937	भाद्रपद	4
पंजाबी	संवत : 2072	भाद्रपद	10
बंगाली	सन् : 1422	भाद्रपद	9
तमिल	संवत : 2072	आवनी	10
केरल	कोल्लम : 1191	चिगंम	10
नेपाली	संवत : 2072	भाद्रपद	10
चैत्रादि	संवत : 2072	श्रावण	शुक्ल 11
कार्तिकादि	संवत : 2072	श्रावण	शुक्ल 11

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 11
तिथि समाप्ति काल _____: 11:40:29
जन्म तिथि _____: 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पूर्वाषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 21:59:18 घंटे
जन्म योग _____: पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग ____: प्रीति
योग समाप्ति काल _____: 07:27:40 घंटे
जन्म योग _____: आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण ____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 11:40:29 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 25:53:01
भभोग _____: 57:31:15
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 11 वर्ष 0 मा 28 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

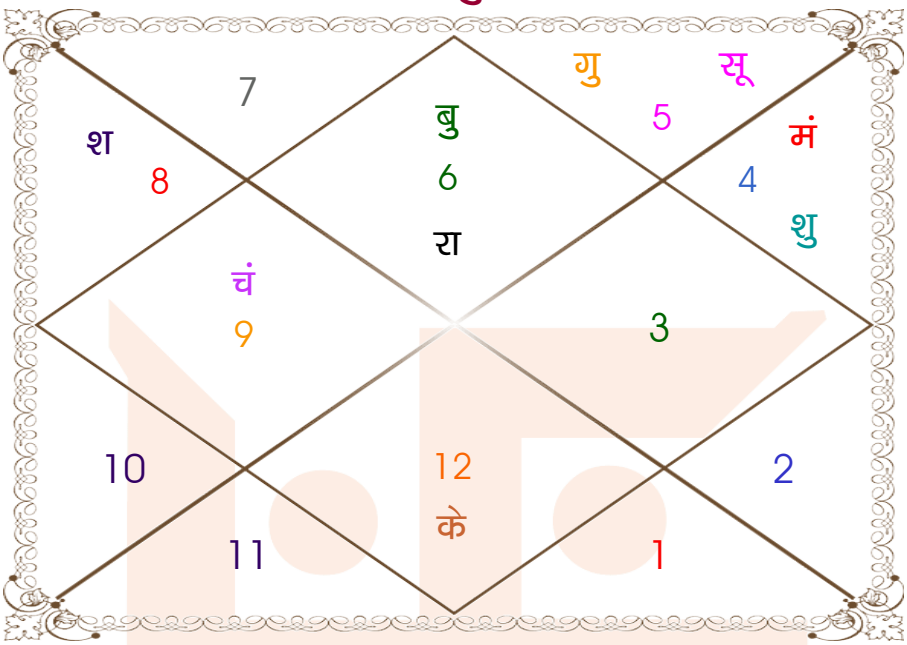

चन्द्र कुंडली

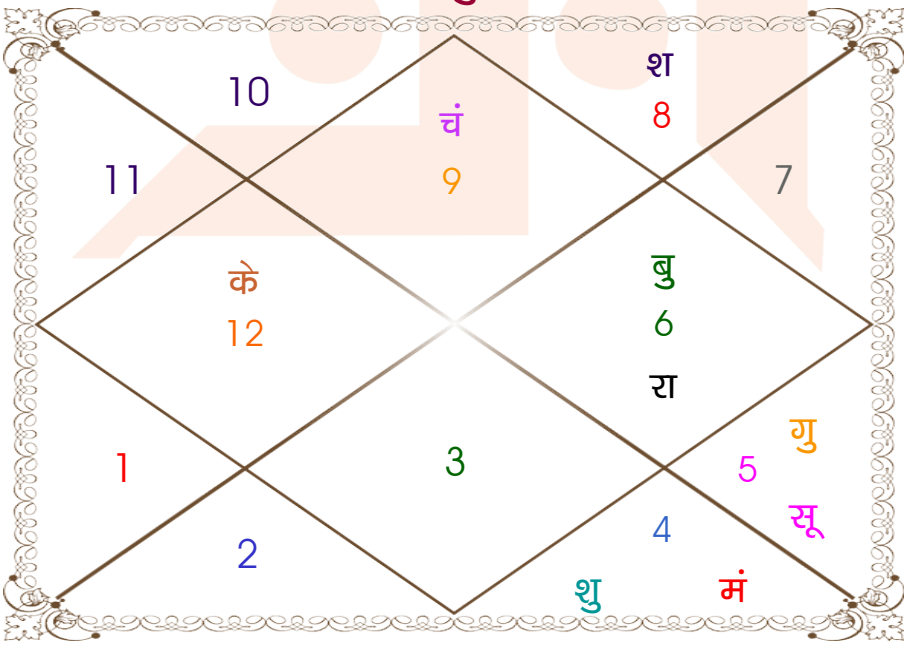

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

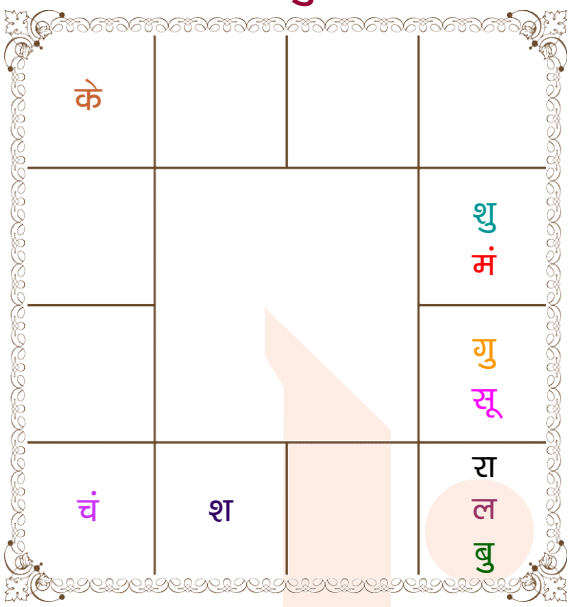

लग्न कुंडली

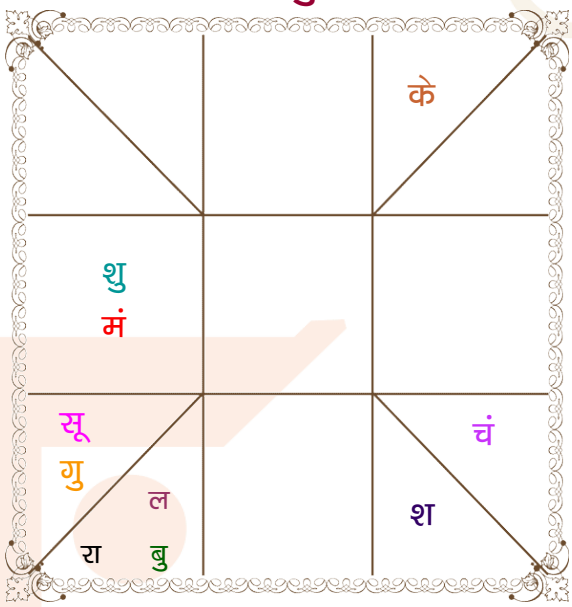

विंशोत्तरी
शुक्र 11वर्ष 0मा 28दि

शुक्र

26/08/2015

25/09/2126

शुक्र	24/09/2026
सूर्य	23/09/2032
चन्द्र	24/09/2042
मंगल	23/09/2049
राहु	24/09/2067
गुरु	24/09/2083
शनि	25/09/2102
बुध	25/09/2119
केतु	25/09/2126

योगिनी
सिद्धा 3वर्ष 10मा 16दि

संकटा

12/07/2019

12/07/2027

संकटा	22/04/2021
मंगला	12/07/2021
पिंगला	21/12/2021
धान्या	22/08/2022
भ्रामरी	12/07/2023
भद्रिका	21/08/2024
उल्का	21/12/2025
सिद्धा	12/07/2027

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	20:41:11	341:02:47	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	---
सूर्य			सिंह	08:32:36	00:57:52	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	मूलत्रिकोण
चंद्र			धनु	19:16:50	13:53:12	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
मंगल			कर्क	16:58:53	00:38:22	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	नीच राशि
बुध			कन्या	04:01:53	01:17:14	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	उच्च राशि
गुरु		अ	सिंह	09:06:36	00:13:03	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	मित्र राशि
शुक्र	व		कर्क	22:48:15	00:26:04	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	चंद्र	शत्रु राशि
शनि			वृश्चि	04:40:01	00:02:17	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	शत्रु राशि
राहु	व		कन्या	07:13:37	00:03:27	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	केतु	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	07:13:37	00:03:27	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	मूलत्रिकोण
हर्ष	व		मीन	26:03:23	00:01:24	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	---
नेप	व		कुंभ	14:29:36	00:01:38	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	---
प्लूटो	व		धनु	19:07:02	00:00:50	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	---
दशम भाव			मिथु	20:14:53	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:04:34

लग्न-चलित

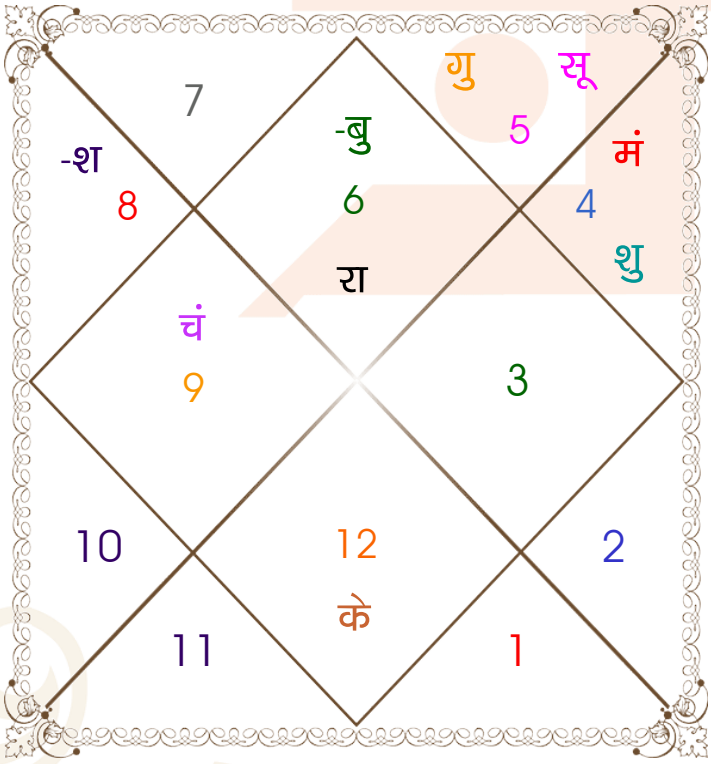

चन्द्र कुंडली

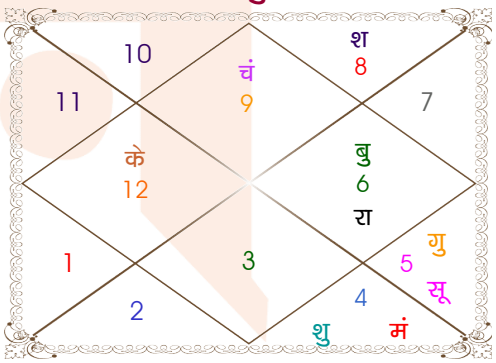

नवमांश कुंडली

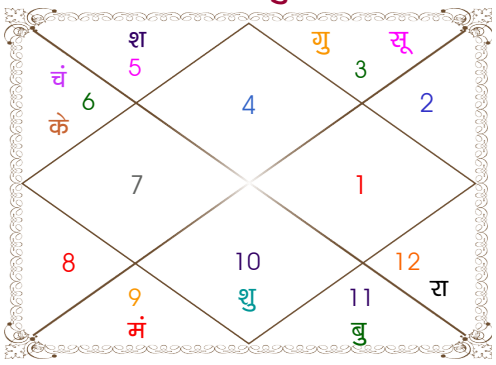

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	05:36:48	कन्या	20:41:11
2	तुला	05:36:48	तुला	20:32:25
3	वृश्चिक	05:28:02	वृश्चिक	20:23:39
4	धनु	05:19:16	धनु	20:14:53
5	मकर	05:19:16	मकर	20:23:39
6	कुम्भ	05:28:02	कुम्भ	20:32:25
7	मीन	05:36:48	मीन	20:41:11
8	मेष	05:36:48	मेष	20:32:25
9	वृष	05:28:02	वृष	20:23:39
10	मिथुन	05:19:16	मिथुन	20:14:53
11	कर्क	05:19:16	कर्क	20:23:39
12	सिंह	05:28:02	सिंह	20:32:25

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	20:41:11
2	तुला	20:13:16
3	वृश्चिक	20:08:55
4	धनु	20:14:53
5	मकर	20:53:47
6	कुम्भ	21:36:23
7	मीन	20:41:11
8	मेष	20:13:16
9	वृष	20:08:55
10	मिथुन	20:14:53
11	कर्क	20:53:47
12	सिंह	21:36:23

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

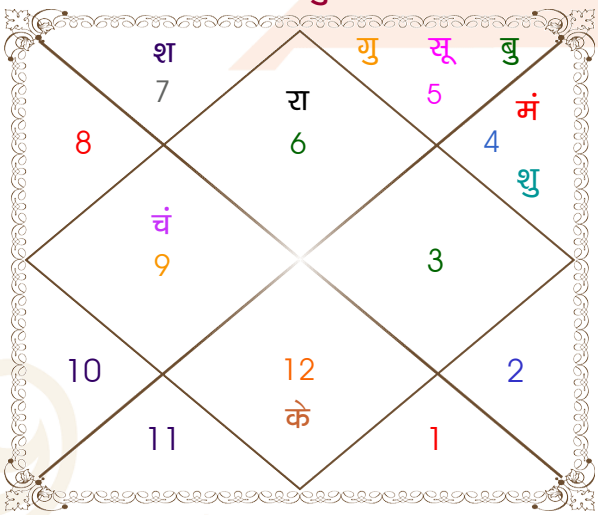

भाव कुंडली

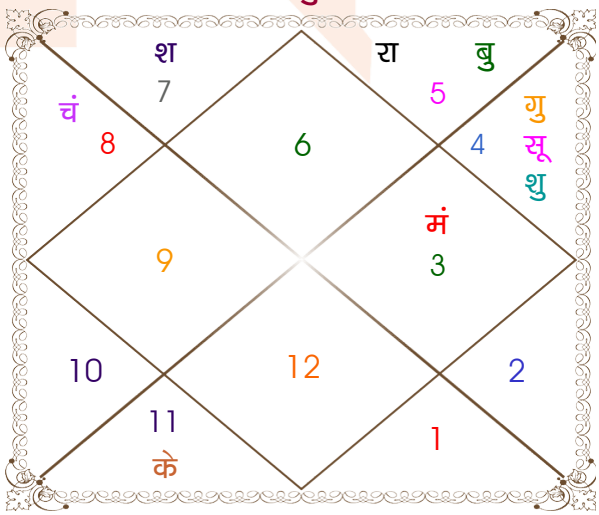

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	कुमार	स्वस्थ	नेत्रपाणि	6.83	74 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	वृद्ध	शक्त	भोजन	1.16	38 %
मंगल	भ्रातृ	भ्रातृ	युवा	भीत	नेत्रपाणि	0.31	33 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	मृत	दीप्त	भोजन	14.09	54 %
गुरु	मातृ	धन	कुमार	विकल	नेत्रपाणि	0.00	74 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	कुमार	खल	नेत्रपाणि	1.14	66 %
शनि	ज्ञाति	आयु	मृत	खल	सभा	1.84	9 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	स्वस्थ	भोजन	0.00	89 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	स्वस्थ	नेत्रपाणि	0.00	89 %
कुल						25.36	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

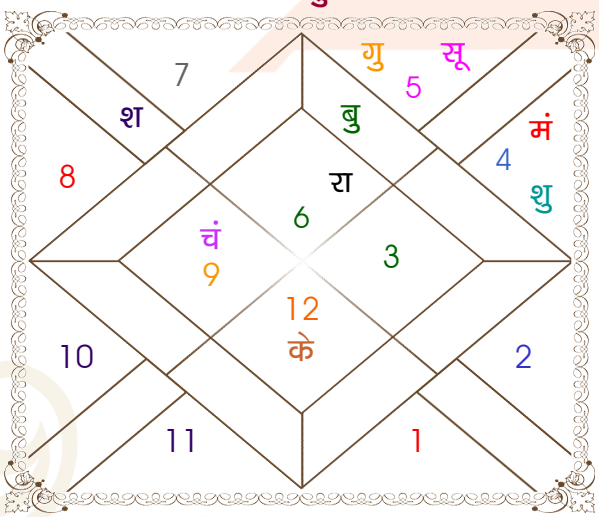

लग्न-चलित

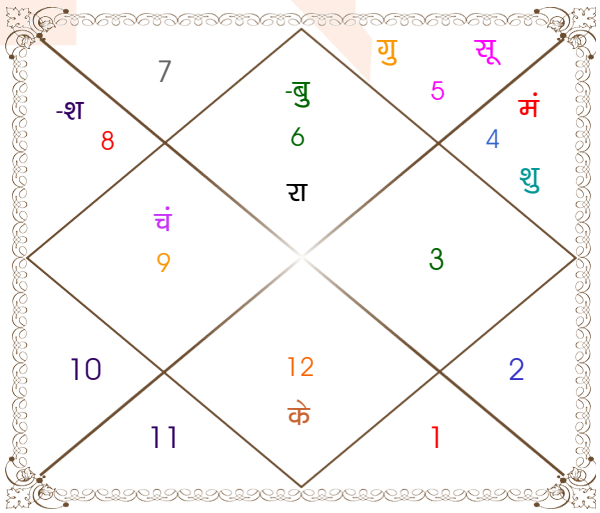

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

सुदर्शन चक्र

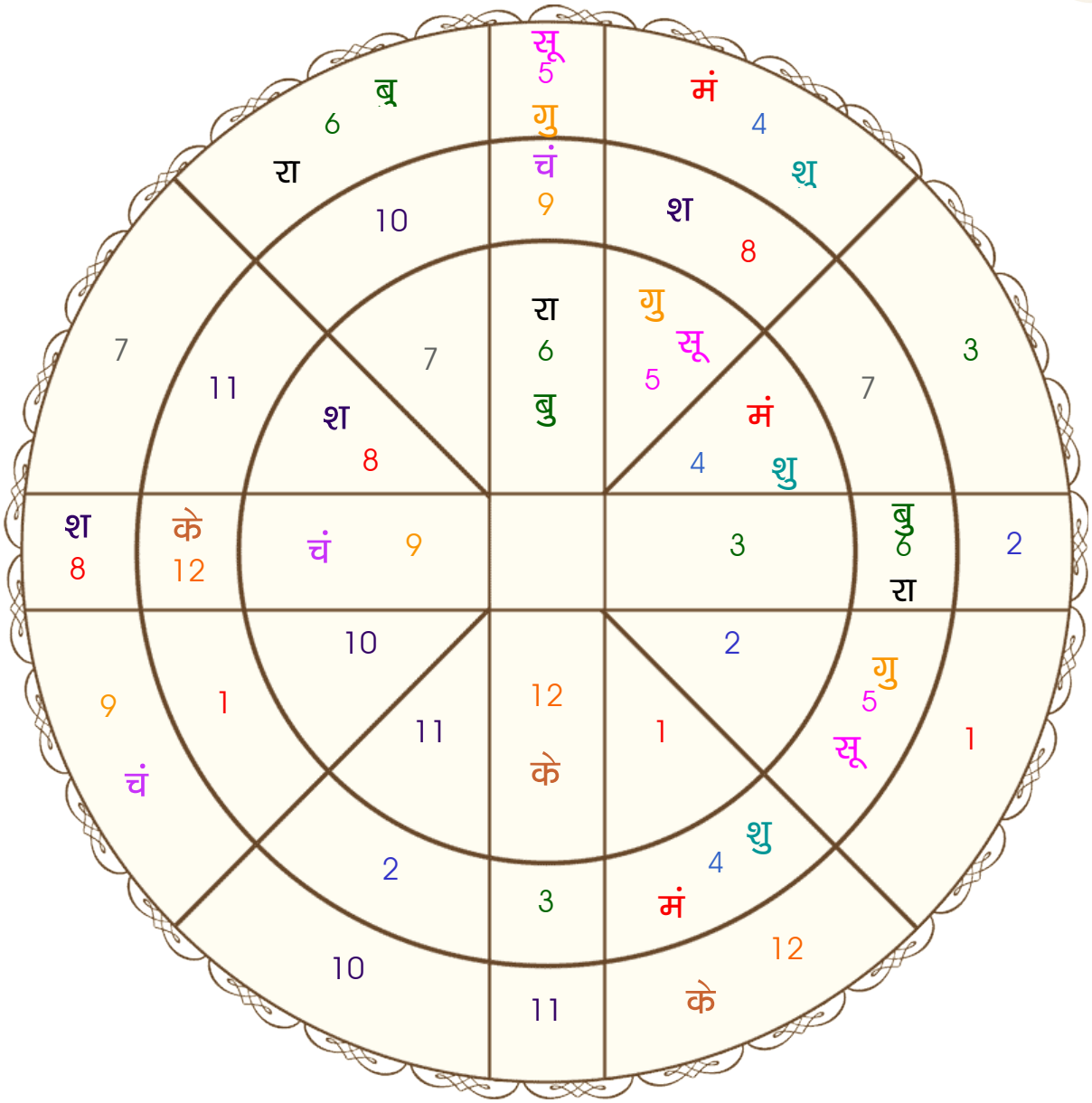

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 10 वर्ष 11 मास 1 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	08:38:57	सूर्य	केतु	गुरु	शुक्र
चंद्र		धनु	19:23:11	गुरु	शुक्र	राहु	केतु
मंगल		कर्क	17:05:14	चंद्र	बुध	बुध	शुक्र
बुध		कन्या	04:08:14	बुध	सूर्य	शनि	सूर्य
गुरु		सिंह	09:12:57	सूर्य	केतु	गुरु	राहु
शुक्र	व	कर्क	22:54:36	चंद्र	बुध	चंद्र	बुध
शनि		वृश्चि	04:46:22	मंगल	शनि	शनि	मंगल
राहु	व	कन्या	07:19:59	बुध	सूर्य	केतु	राहु
केतु	व	मीन	07:19:59	गुरु	शनि	बुध	शनि
हर्ष	व	मीन	26:09:45	गुरु	बुध	गुरु	गुरु
नेप	व	कुंभ	14:35:58	शनि	राहु	केतु	शुक्र
प्लूटो	व	धनु	19:13:24	गुरु	शुक्र	राहु	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कन्या	20:47:32	बुध	चंद्र	शुक्र	शुक्र
2	तुला	20:19:38	शुक्र	गुरु	गुरु	शनि
3	वृश्चि	20:15:17	मंगल	बुध	शुक्र	राहु
4	धनु	20:21:14	गुरु	शुक्र	गुरु	शनि
5	मक	21:00:08	शनि	चंद्र	शुक्र	चंद्र
6	कुंभ	21:42:44	शनि	गुरु	गुरु	राहु
7	मीन	20:47:32	गुरु	बुध	शुक्र	शनि
8	मेष	20:19:38	मंगल	शुक्र	गुरु	गुरु
9	वृष	20:15:17	शुक्र	चंद्र	केतु	शनि
10	मिथु	20:21:14	बुध	गुरु	गुरु	शनि
11	कर्क	21:00:08	चंद्र	बुध	शुक्र	शनि
12	सिंह	21:42:44	सूर्य	शुक्र	गुरु	राहु

के.पी. अयनांश : 23:58:13

फॉरच्युना : कुम्भ 01:31:46

लग्न कुंडली

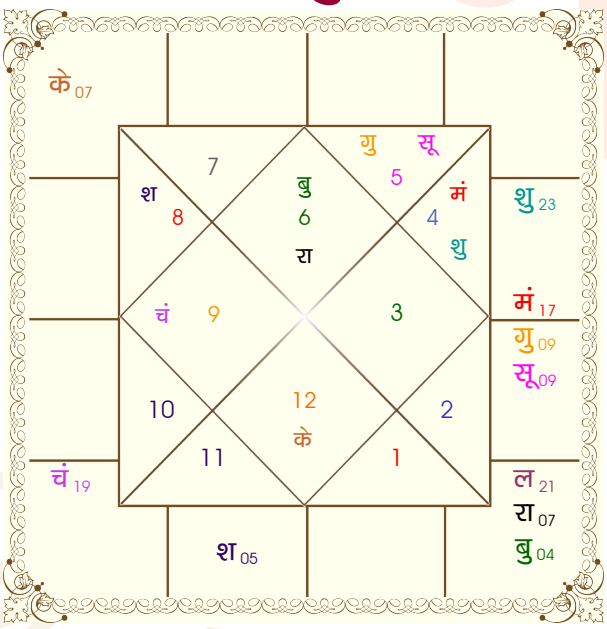

भाव कुंडली

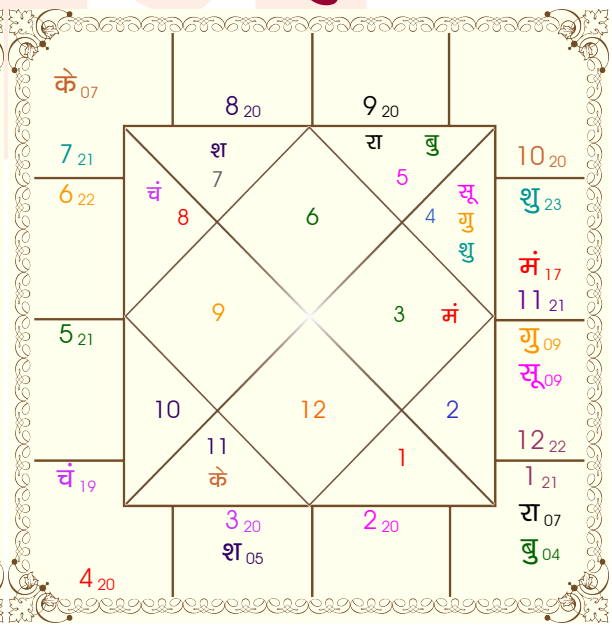

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- बुध- शुक्र-
2	चंद्र- शुक्र- शनि+ केतु,
3	चंद्र, मंगल-
4	गुरु-
5	शनि, केतु-
6	सूर्य, गुरु, शनि, केतु+
7	गुरु-
8	मंगल-
9	चंद्र- शुक्र-
10	मंगल+ बुध- शुक्र-
11	सूर्य, चंद्र+ बुध, गुरु, शुक्र, राहु,
12	सूर्य- मंगल, बुध+ शुक्र, राहु+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	6, 11, 12-
चंद्र	2- 3, 9- 11+
मंगल	1- 3- 8- 10+ 12,
बुध	1- 10- 11, 12+
गुरु	4- 6, 7- 11,
शुक्र	1- 2- 9- 10- 11, 12,
शनि	2+ 5, 6,
राहु	11, 12+
केतु	2, 5- 6+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	राहु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	मं शु	बु
2	श के	श	चं	शु
3	--	चं	--	मं
4	--	--	--	गु
5	--	--	श के	श
6	सू गु	के	श के	श
7	--	--	--	गु
8	--	--	--	मं
9	--	--	चं	शु
10	--	मं	मं शु	बु
11	चं बु रा	सू गु शु	--	चं
12	मं शु	बु रा	बु रा	सू

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	12	---	सिंह	11
चंद्र	11	1,5,9	धनु	3
मंगल	3,8	---	कर्क	10
बुध	1,10	3,7,11	कन्या	12
गुरु	4,7	2,6,10	सिंह	11
शुक्र	2,9	4,8,12	कर्क	11
शनि	5,6	---	वृश्चिक	2
राहु	---	---	कन्या	12
केतु	---	---	मीन	6

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	---	---	6	4,7	2,6,10	11
चंद्र	2,9	4,8,12	11	---	---	12
मंगल	1,10	3,7,11	12	1,10	3,7,11	12
बुध	12	---	11	5,6	---	2
गुरु	---	---	6	4,7	2,6,10	11
शुक्र	1,10	3,7,11	12	11	1,5,9	3
शनि	5,6	---	2	5,6	---	2
राहु	12	---	11	---	---	6
केतु	5,6	---	2	1,10	3,7,11	12

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य 128.54	चंद्र 259.28	मंगल 106.98	बुध 154.03	गुरु 129.11	शुक्र 112.80	शनि 214.67	राहु 157.23	केतु 337.23	हर्ष 356.06	नेप 314.49	प्लूटो 259.12
सूर्य 128.54	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.98	-- 0.00	चतु 1.58	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 8.12	-- 0.00
चंद्र 259.28	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	तृती 0.94	युति 10.00
मंगल 106.98	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 8.20	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	8वां 9.66	-- 0.00
बुध 154.03	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	तृती 2.96	युति 9.45	सप्त 9.45	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
गुरु 129.11	युति 9.98	5वां 4.84	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	चतु 1.19	-- 0.00	-- 0.00	9वां 2.02	सप्त 8.45	5वां 4.99
शुक्र 112.80	-- 0.00	-- 0.00	युति 8.20	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	अष्ट 0.62	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
शनि 214.67	10वा 9.19	अष्ट 0.82	-- 0.00	-- 0.00	10वा 8.94	10वा 3.23	-- 0.00	-- 0.00	पंच 2.35	-- 0.00	-- 0.00	अष्ट 0.65
राहु 157.23	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.45	-- 0.00	-- 0.00	तृती 2.35	-- 0.00	सप्त 10.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
केतु 337.23	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 9.45	-- 0.00	अष्टां 0.62	-- 0.00	सप्त 10.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
हर्ष 356.06	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	पंच 1.98	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
नेप 314.49	सप्त 8.12	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 8.45	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
प्लूटो 259.12	-- 0.00	युति 10.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	तृती 1.06	-- 0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	170.69	200.54	230.39	260.25	290.39	320.54	350.69	20.54	50.39	80.25	110.39	140.54
सूर्य	--	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
128.54	0.00	1.00	0.00	0.00	0.00	3.09	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.09
चंद्र	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
259.28	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	2.84	2.80	2.84	0.00	9.95	0.00	0.00
मंगल	तृती	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--
106.98	1.70	9.31	0.00	0.00	9.37	9.31	0.00	0.00	0.00	0.00	9.37	0.00
बुध	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
154.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.57
गुरु	--	पंचा	--	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति
129.11	0.00	0.63	0.00	3.93	0.00	3.65	0.00	3.65	0.00	0.00	0.00	3.65
शुक्र	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
112.80	2.55	2.49	2.42	0.00	9.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.68	0.00
शनि	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--
214.67	0.00	0.91	0.00	0.61	0.00	0.00	0.00	0.91	0.00	0.00	0.76	0.00
राहु	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
157.23	1.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
337.23	1.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--
356.06	8.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.46	0.00	0.26	0.00	0.26	0.00
नेप	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त
314.49	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.06	0.00	0.00	0.08	0.19	0.00	8.06
प्लूटो	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
259.12	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	2.79	2.75	2.79	0.00	9.93	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	170.69	200.22	230.15	260.25	290.90	321.61	350.69	20.22	50.15	80.25	110.90	141.61
सूर्य	--	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
128.54	0.00	0.87	0.00	0.00	0.00	2.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.01
चंद्र	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--
259.28	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	2.46	2.80	2.91	0.21	9.95	0.00	0.00
मंगल	तृती	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--
106.98	1.70	9.43	0.00	0.00	9.17	8.85	0.00	0.00	0.00	0.00	9.17	0.00
बुध	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
154.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.66
गुरु	--	पंचा	--	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति
129.11	0.00	0.17	0.00	3.93	0.00	2.59	0.00	3.96	0.00	0.00	0.00	2.59
शुक्र	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
112.80	2.55	2.34	2.30	0.00	9.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.80	0.00
शनि	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--
214.67	0.00	0.58	0.00	0.61	0.00	0.00	0.00	0.58	0.00	0.00	1.28	0.00
राहु	युति	--	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
157.23	1.61	0.00	0.12	0.00	0.00	0.00	1.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
337.23	1.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--
356.06	8.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.46	0.00	0.07	0.00	0.65	0.00
नेप	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त
314.49	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.35	0.00	0.21	0.27	0.19	0.00	7.35
प्लूटो	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
259.12	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	2.39	2.75	2.88	0.00	9.93	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

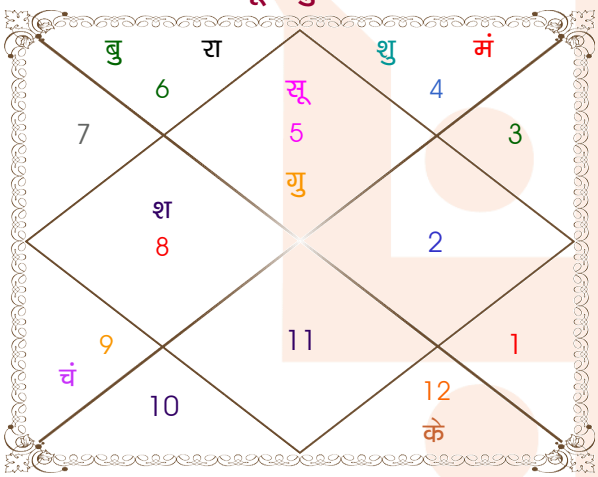

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

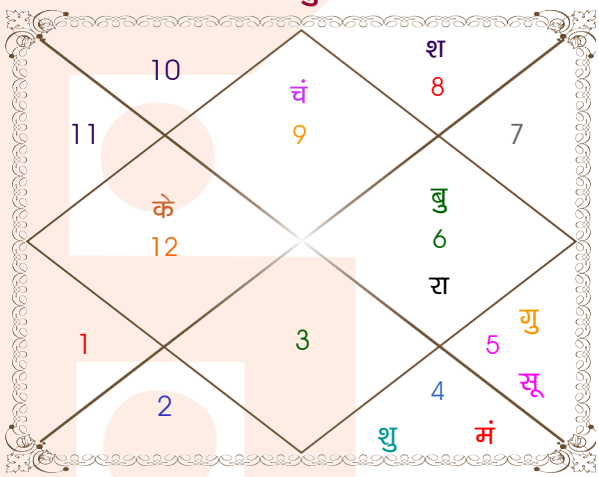

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

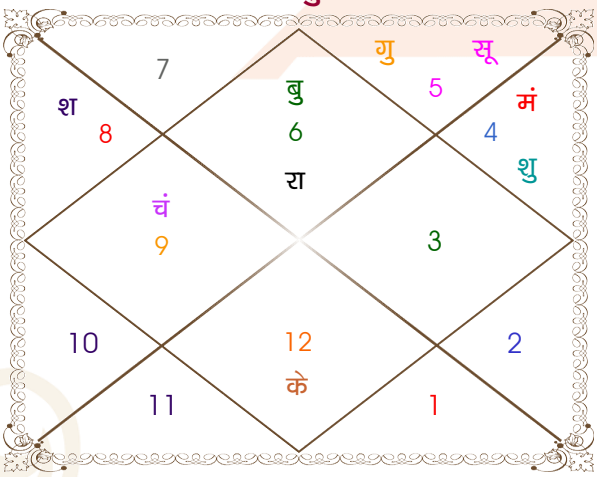

देह विचारः

होरा कुंडली

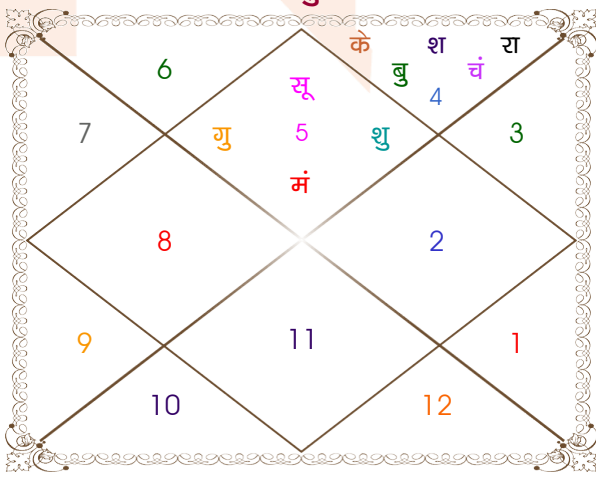

सम्पदाविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

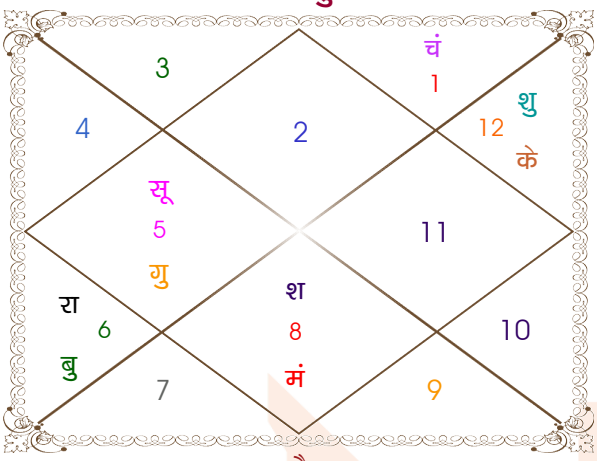

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

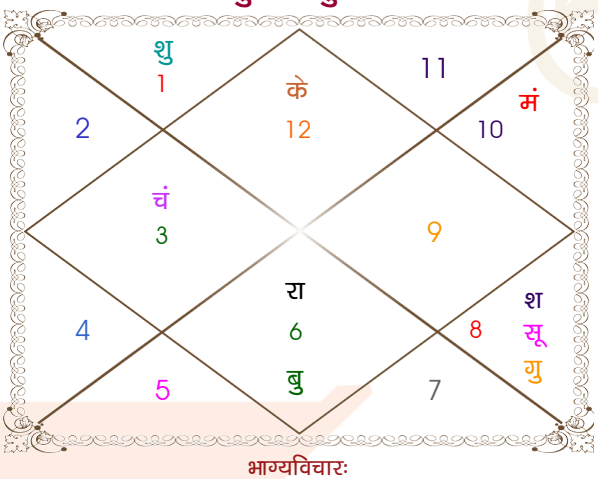

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

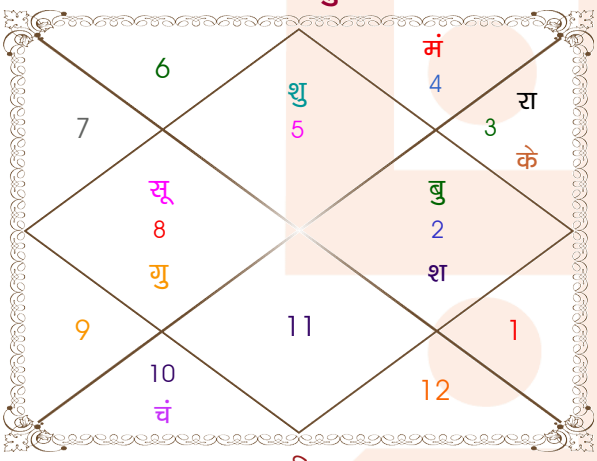

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

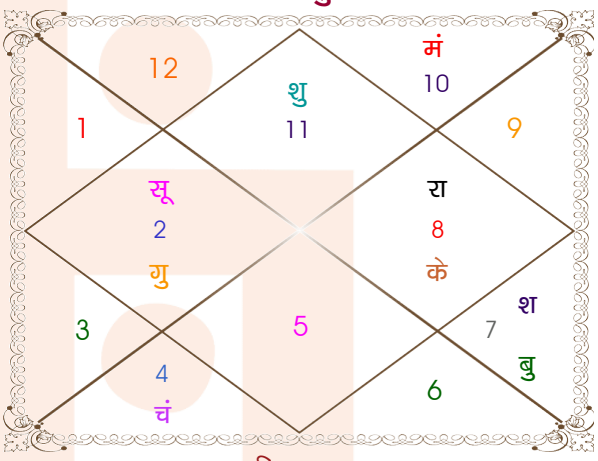

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

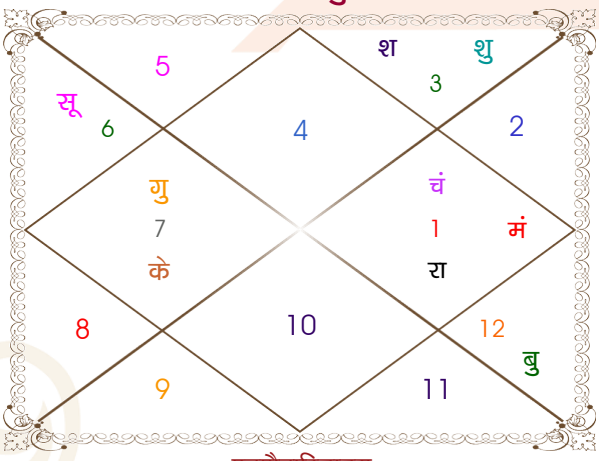

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

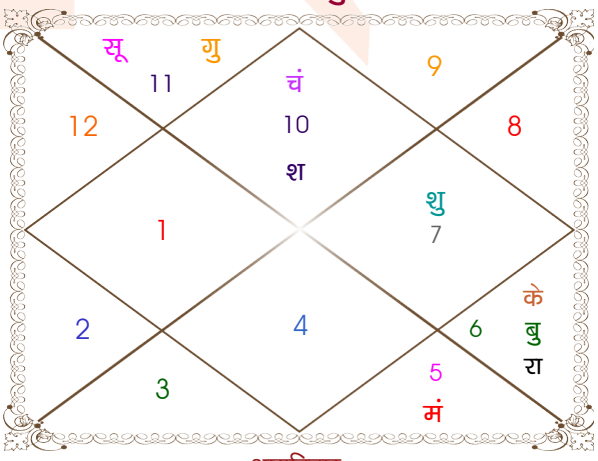

आयुविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

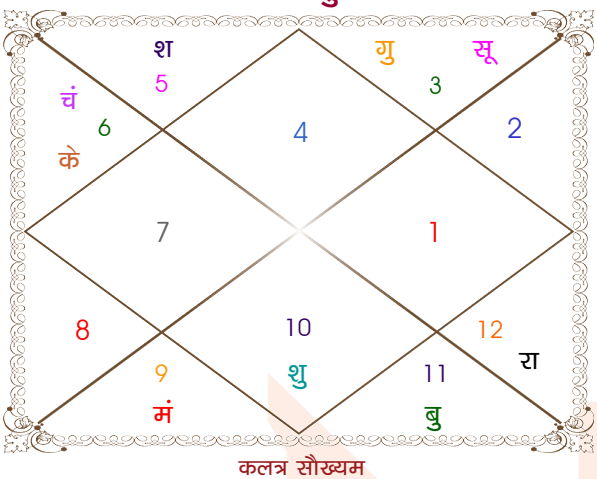

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

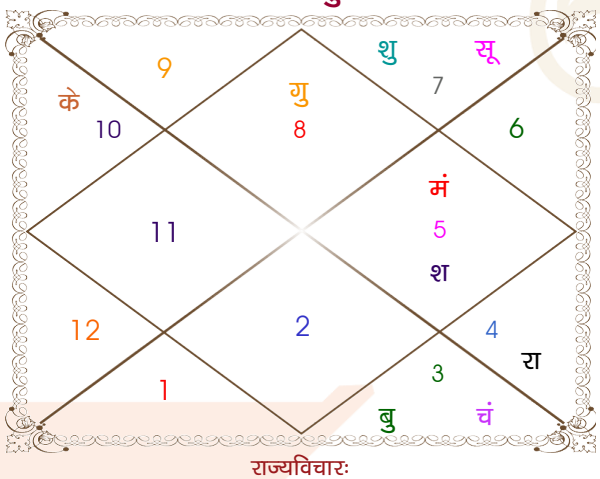

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

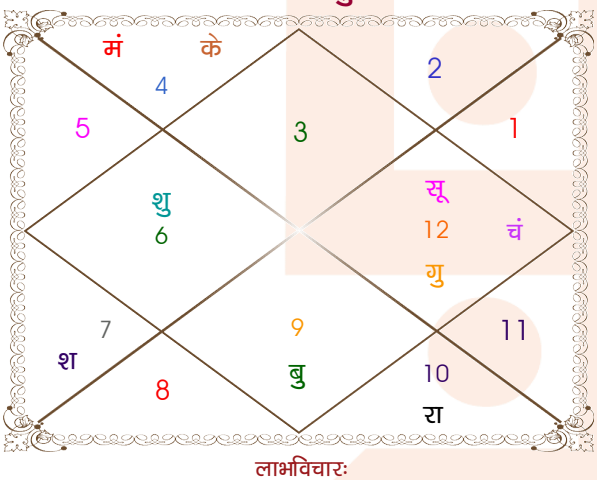

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

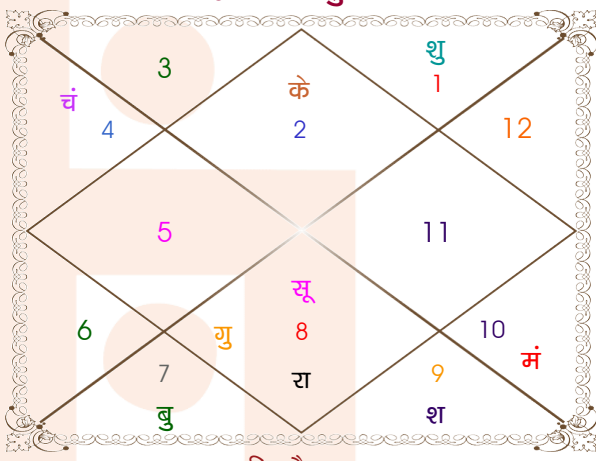

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

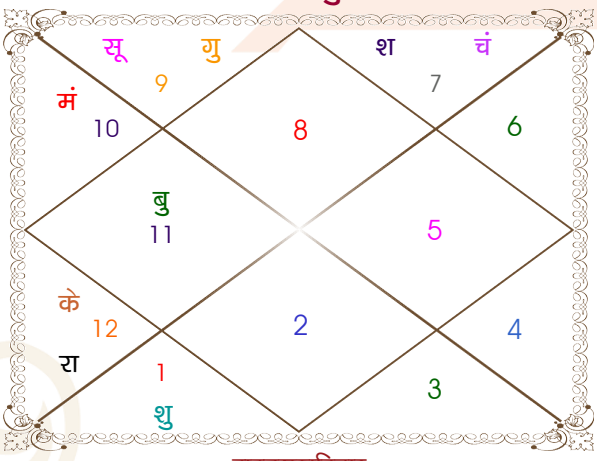

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

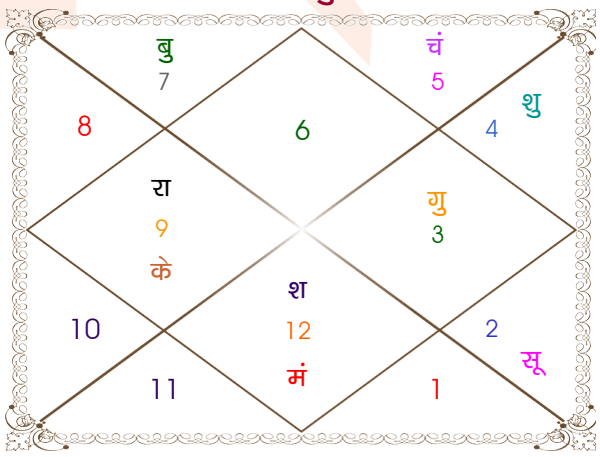

उपासनाज्ञानम्

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

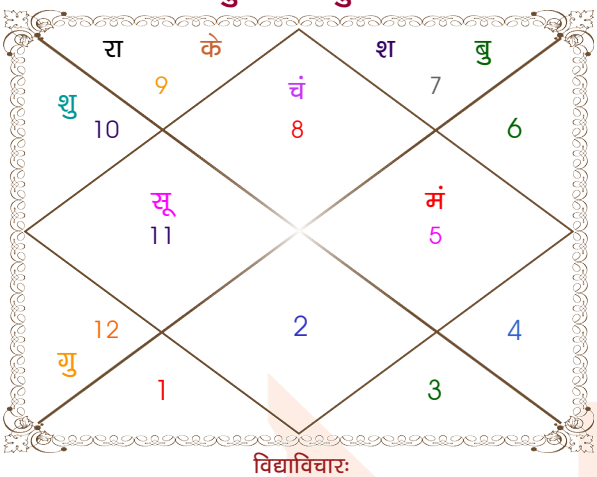

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

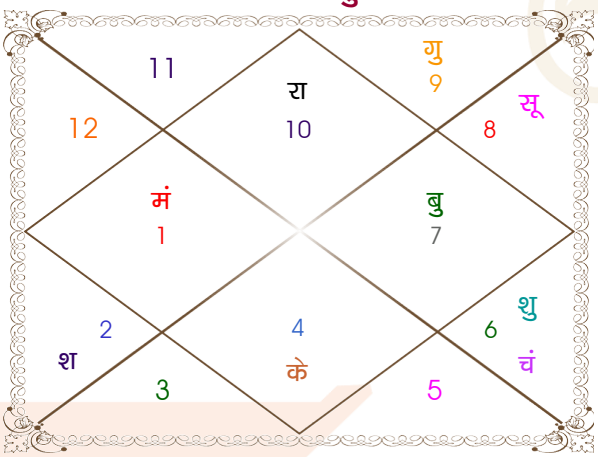

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

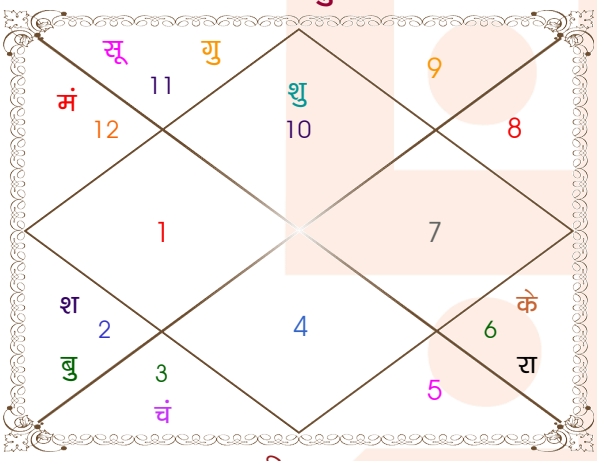

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

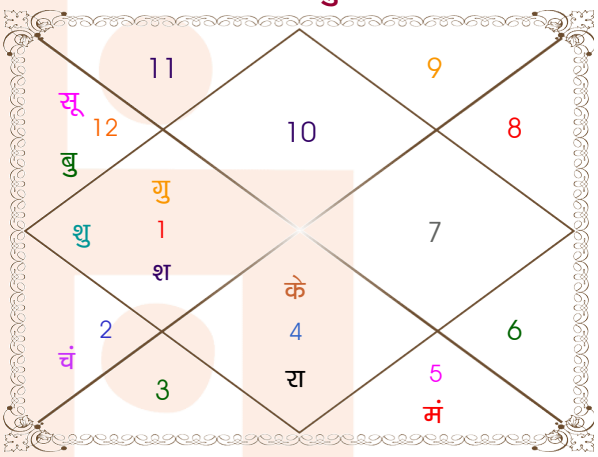

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

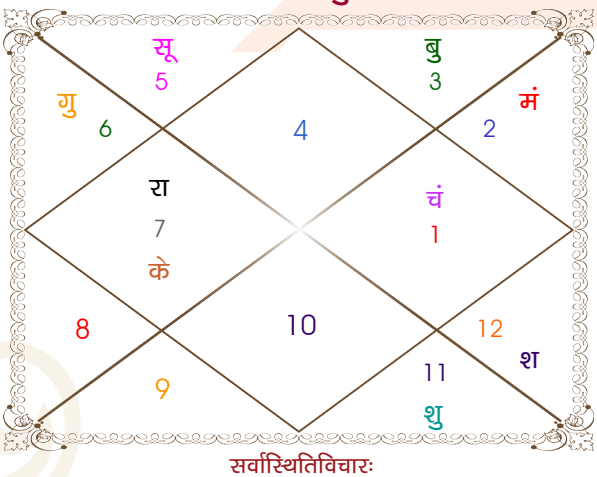

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

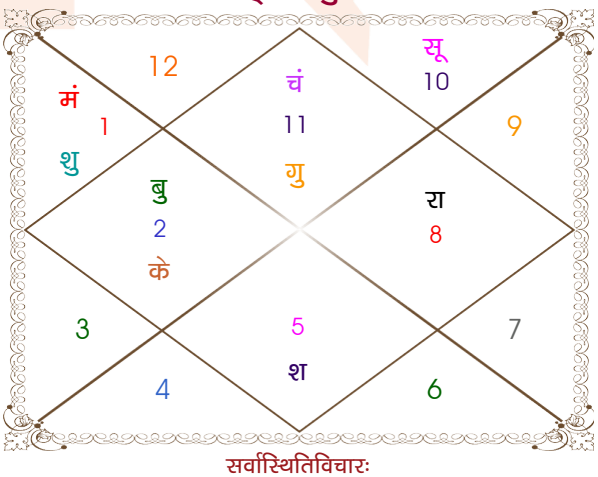

सर्वास्थितिविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कन्या	सिंह	धनु	कर्क	कन्या	सिंह	कर्क	वृश्चि	कन्या	मीन
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	वृष	सिंह	मेष	वृश्चि	कन्या	सिंह	मीन	वृश्चि	कन्या	मीन
चतुर्थांश	मीन	वृश्चि	मिथु	मक	कन्या	वृश्चि	मेष	वृश्चि	कन्या	मीन
सप्तमांश	कर्क	कन्या	मेष	मेष	मीन	तुला	मिथु	मिथु	मेष	तुला
नवमांश	कर्क	मिथु	कन्या	धनु	कुंभ	मिथु	मक	सिंह	मीन	कन्या
दशमांश	वृश्चि	तुला	मिथु	सिंह	मिथु	वृश्चि	तुला	सिंह	कर्क	मक
द्वादशांश	वृष	वृश्चि	कर्क	मक	तुला	वृश्चि	मेष	धनु	वृश्चि	वृष
षोडशांश	वृश्चि	धनु	तुला	मक	कुंभ	धनु	मेष	तुला	मीन	मीन
विंशांश	कन्या	वृष	सिंह	मीन	तुला	मिथु	कर्क	मीन	धनु	धनु
चतुर्विंशांश	वृश्चि	कुंभ	वृश्चि	सिंह	तुला	मीन	मक	तुला	धनु	धनु
सप्तविंशांश	मक	वृश्चि	कन्या	मेष	तुला	धनु	कन्या	वृष	मक	कर्क
त्रिंशांश	मक	कुंभ	मिथु	मीन	वृष	कुंभ	मक	वृष	कन्या	कन्या
खवेदांश	मक	मीन	वृष	सिंह	मीन	मेष	मेष	मेष	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	कर्क	सिंह	मेष	वृष	मिथु	कन्या	कुंभ	मीन	तुला	तुला
षष्ट्यंश	कुंभ	मक	कुंभ	मेष	वृष	कुंभ	मेष	सिंह	वृश्चि	वृष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
मंगल	2 किंसुक	3 व्यंजन	5 सिंहान	7 कल्पवृक्ष
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
गुरु	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
राहु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	18.05	12.90	14.90	17.45	11.05	9.20	8.00	9.60	7.60
सप्तवर्ग	17.55	12.63	15.45	16.95	11.05	10.20	9.50	9.78	7.98
दशवर्ग	14.35	13.43	15.95	17.33	13.58	9.78	9.85	9.85	8.28
षोडशवर्ग	14.48	12.68	15.28	17.30	13.55	8.78	9.20	11.00	8.08

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	सम	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	20	15	4	56	49	21	55
सप्तवर्गज बल	165	116	139	158	75	66	64
ओजयुग्मक बल	30	15	15	15	30	30	15
केन्द्र बल	15	60	30	60	15	30	15
द्रेष्काण बल	15	0	0	0	15	15	0
कुल स्थान बल	245	207	187	289	184	162	149
कुल दिग्बल	44	60	51	54	46	11	15
नतोन्नत बल	44	16	16	60	44	44	16
पक्ष बल	16	87	16	44	44	44	16
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	88	59	53	31	44	51	56
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	148	163	130	240	251	138	88
कुल चेष्टाबल	0	0	11	30	1	55	28
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-6	15	6	-6	-6	6	1
कुल षट्बल	491	495	403	632	510	414	289
रूप षट्बल	8.2	8.3	6.7	10.5	8.5	6.9	4.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.6	1.4	1.3	1.5	1.3	1.3	1.0
संबंधित पद	1	3	4	2	5	6	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	28.31	25.93	6.49	41.24	5.97	34.20	39.38
कष्ट फल	28.72	27.05	52.29	10.44	25.96	14.34	12.48

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	632	414	403	510	289	289	510	403	414	632	495	491
भावदिग्बल	60	50	20	0	50	10	30	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	7	24	62	78	11	66	89	85	17	12	6	-6
कुल भाव बल	699	488	485	588	350	365	629	528	480	675	511	525
रूप भाव बल	11.7	8.1	8.1	9.8	5.8	6.1	10.5	8.8	8.0	11.2	8.5	8.8
संबंधित पद	1	8	9	4	12	11	3	5	10	2	7	6

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

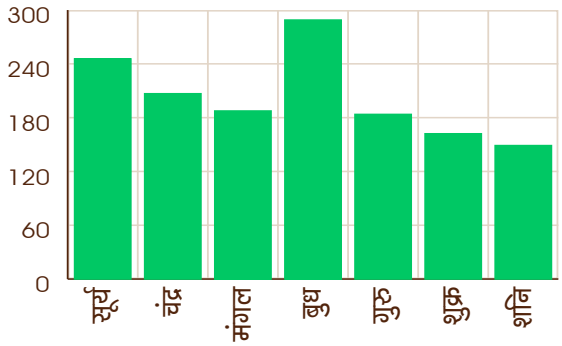

दिग्बल

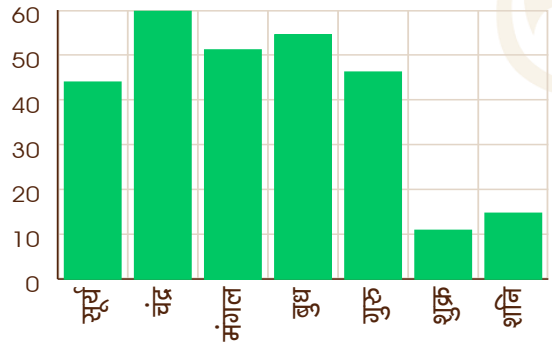

कालबल

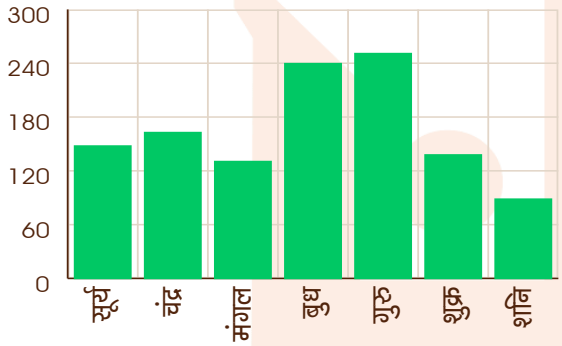

चेष्टाबल

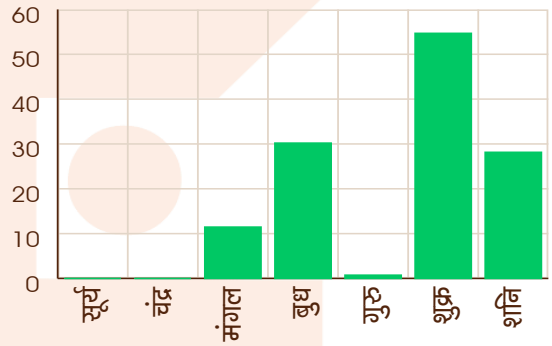

नैसर्गिक बल

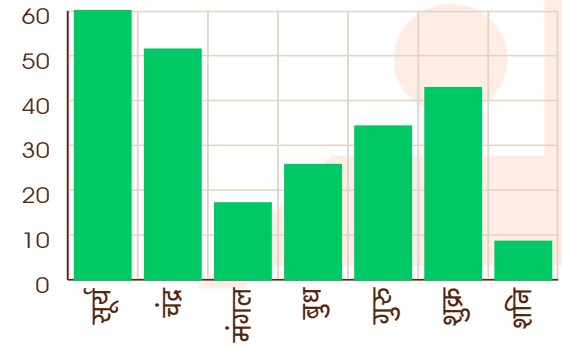

दृग्बल

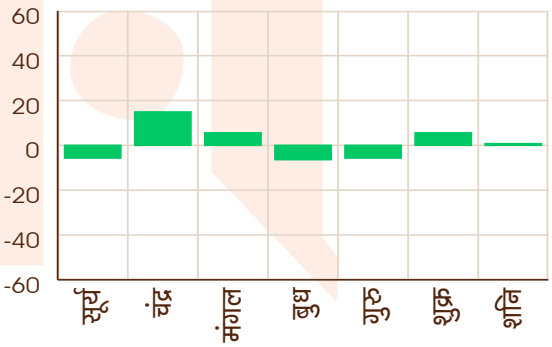

रूप षट्बल

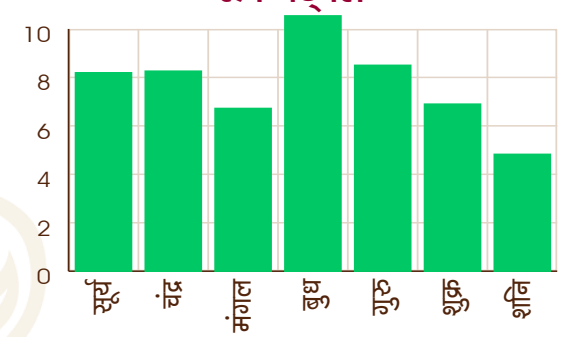

न्यूनतम षट्बल

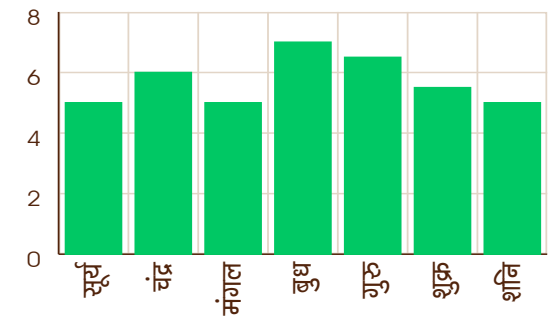

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

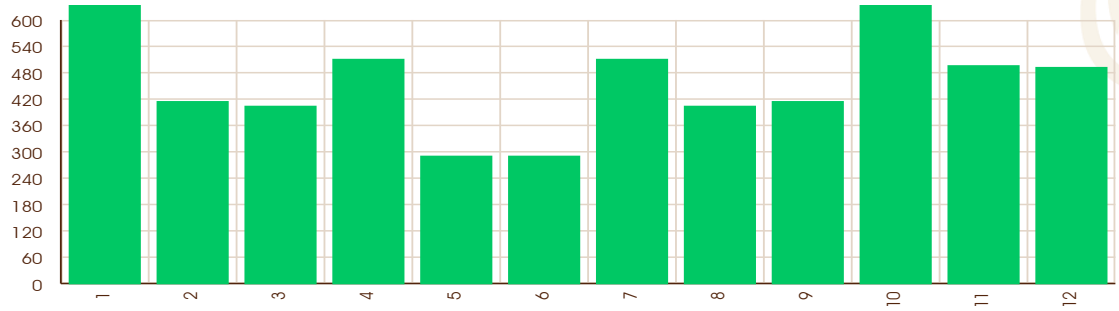

भावदिग्बल

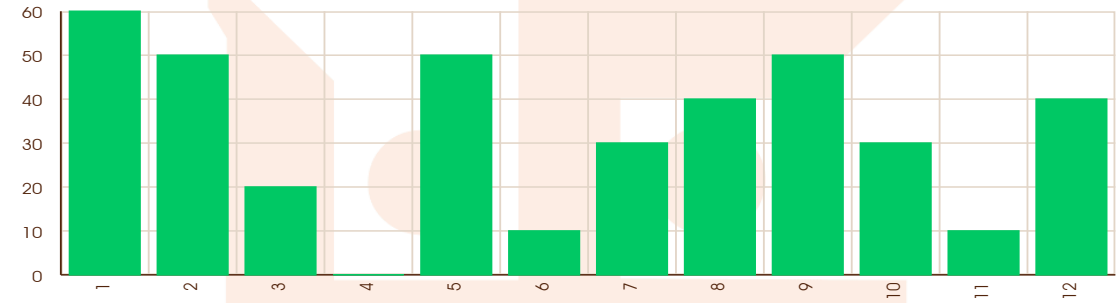

भावदृष्टि बल

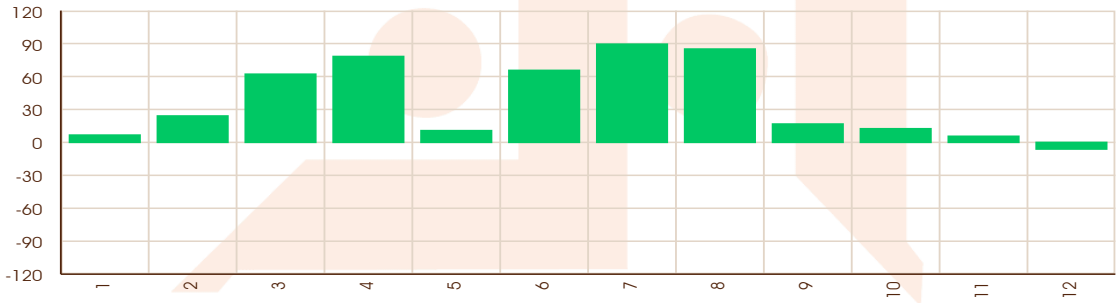

भाव बल

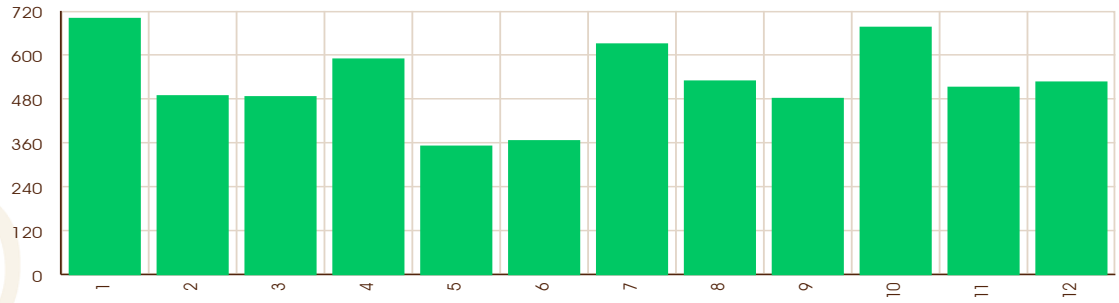

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

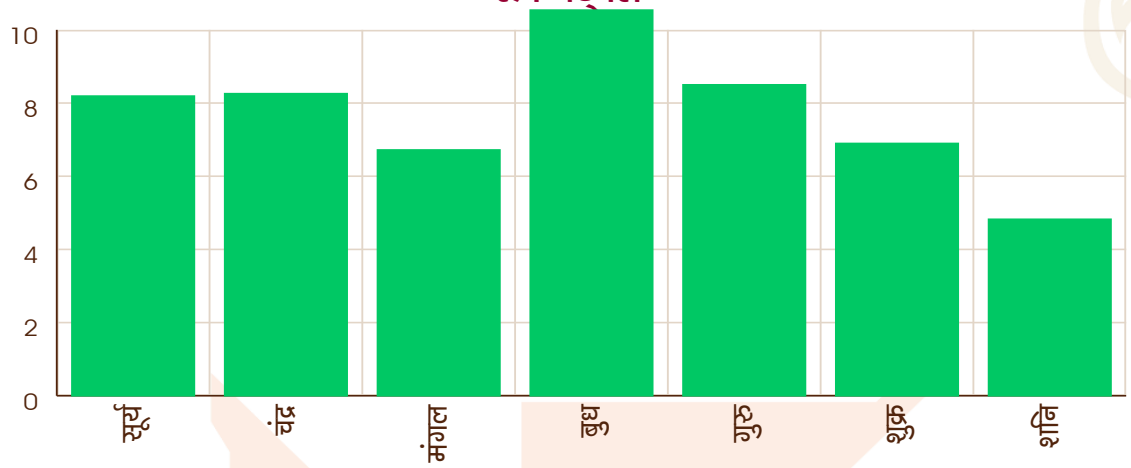

इष्ट - कष्ट फल

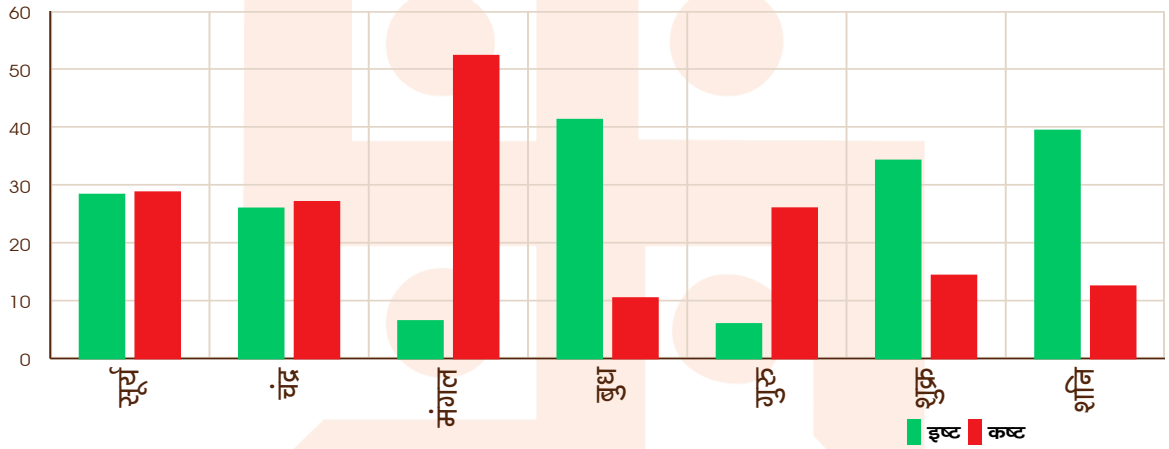

रूप भाव बल

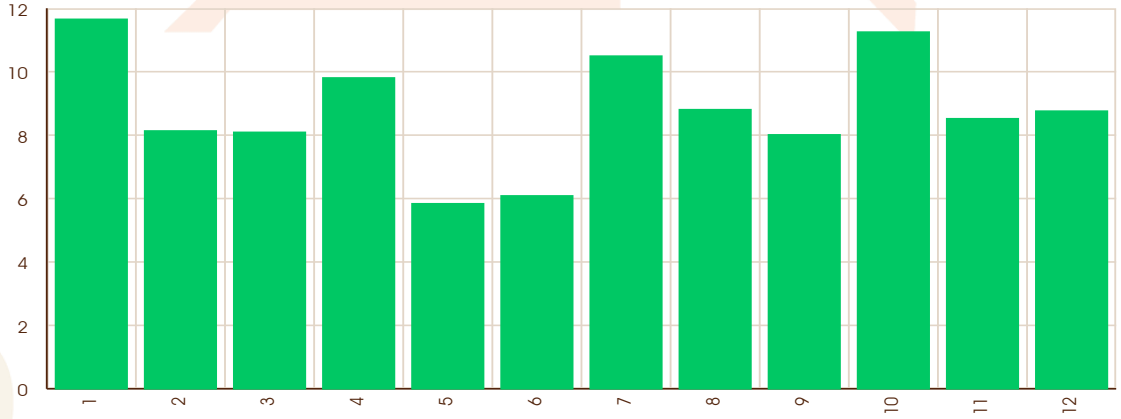

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कन्या	20:41:11	--	--	हस्त	4	13
गुलिक	गु	वृश्चि	05:55:32	--	--	अनुराधा	1	17
काल	का	वृश्चि	26:47:50	--	--	ज्येष्ठा	4	18
मृत्यु	मृ	मक	12:41:37	--	--	श्रवण	1	22
यमघंटक	यम	कन्या	22:21:18	--	--	हस्त	4	13
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	00:07:42	--	--	उ०फाल्गुनी	2	12
धूम	धू	धनु	21:52:36	--	--	पूर्वाषाढ़ा	3	20
व्यतिपात	व्य	कर्क	08:07:24	--	--	पुष्य	2	8
परिवेश	परि	मक	08:07:24	--	--	उत्तराषाढ़ा	4	21
इन्द्रचाप	इ	मिथु	21:52:36	नीच	--	पुनर्वसु	1	7
उपकेतु	उप	कर्क	08:32:36	--	मूल	पुष्य	2	8

प्राणपद	:	तुला	17:13:51	कारकाँश लग्न	:	मक	25:14:12
भाव लग्न	:	वृश्चि	06:07:15	होरा लग्न	:	धनु	21:33:19
घटी लग्न	:	मीन	25:42:55	वर्णद लग्न	:	मिथु	12:14:30

उपग्रह कुंडली

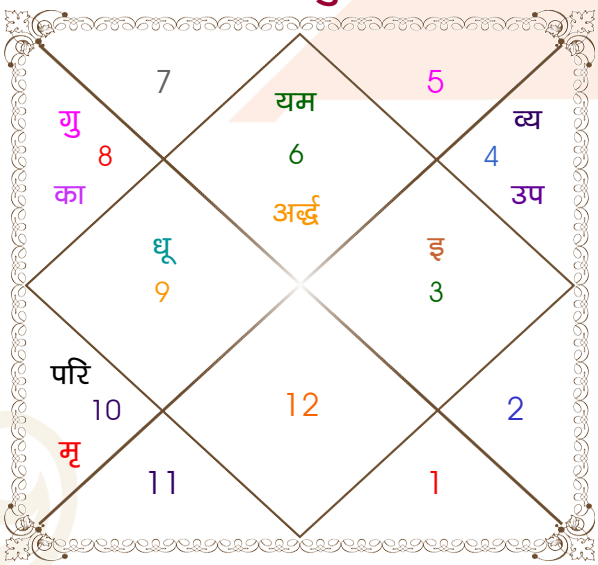

आरूढ़ कुंडली

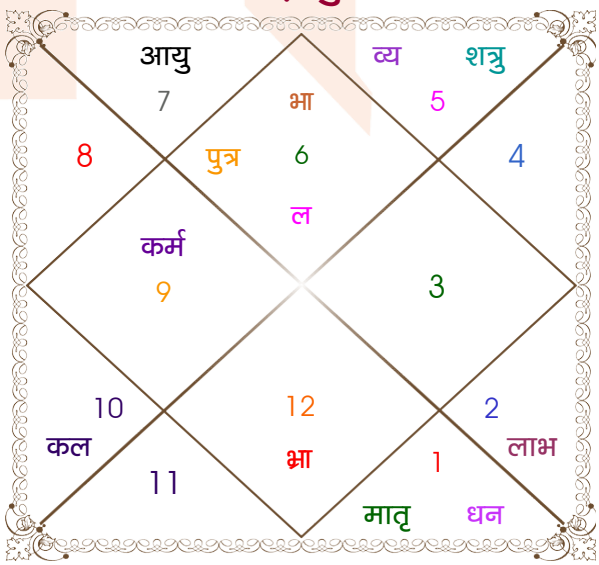

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षन्नाडी चक्र

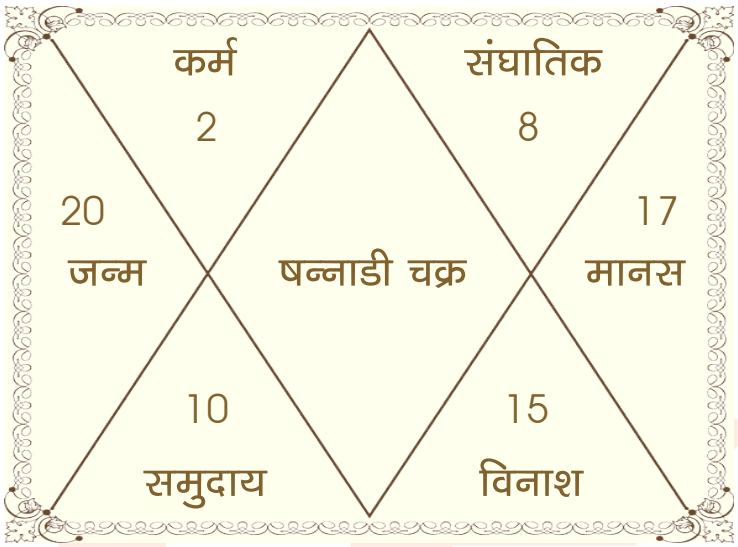

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	5	3	2	4	4	4	6	2	3	5	6	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	6
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
कुल	3	4	4	5	4	5	5	2	3	6	3	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	5	2	2	3	3	2	4	6	0	1	6	5	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
कुल	5	4	3	3	5	5	4	3	5	5	8	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	5	4	7	3	3	5	5	5	5	6	5	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	6	3	4	4	4	4	4	4	6	4	5	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	3	4	2	4	2	3	5	6	3	2	4	1	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
चंद्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	6	4	6	3	3	6	1	4	4	4	5	3	49

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	5	6	3	2	4	1	3	4	2	4	2	39
गुरु	5	6	5	3	5	4	7	3	3	5	5	5	56
मंगल	1	6	5	5	2	2	3	3	2	4	6	0	39
सूर्य	3	5	6	4	5	3	2	4	4	4	6	2	48
शुक्र	4	5	4	6	3	4	4	4	4	4	4	6	52
बुध	3	5	5	8	4	5	4	3	3	5	5	4	54
चंद्र	4	5	5	2	3	6	3	5	3	4	4	5	49
बिन्दु	23	37	36	31	24	28	24	25	23	28	34	24	337
रेखा	33	19	20	25	32	28	32	31	33	28	22	32	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	3	5	1	0	2	0	1	2	0	3	0	18
गुरु	2	2	0	0	2	0	2	0	0	1	0	2	11
मंगल	0	4	2	5	1	0	0	3	1	2	3	0	21
सूर्य	0	2	4	2	2	0	0	2	1	1	4	0	18
शुक्र	1	1	0	2	0	0	0	0	1	0	0	2	7
बुध	0	0	1	5	1	0	0	0	0	0	1	1	9
चंद्र	1	1	2	0	0	2	0	3	0	0	1	3	13
रेखा	5	13	14	15	6	4	2	9	5	4	12	8	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	3	3	1	0	2	0	1	2	0	3	0	15
गुरु	2	0	0	0	2	0	0	0	0	1	0	2	7
मंगल	0	4	2	5	1	0	0	3	1	2	1	0	19
सूर्य	0	2	4	2	2	0	0	2	1	1	3	0	17
शुक्र	1	1	0	2	0	0	0	0	1	0	0	1	6
बुध	0	0	1	5	1	0	0	0	0	0	1	1	9
चंद्र	0	1	0	0	0	2	0	3	0	0	1	3	10
रेखा	3	11	10	15	6	4	0	9	5	4	9	7	83

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	143	91	140	61	63	46	127
ग्रह पिंड	75	25	110	90	30	35	40
शोध्य पिंड	218	116	250	151	93	81	167

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

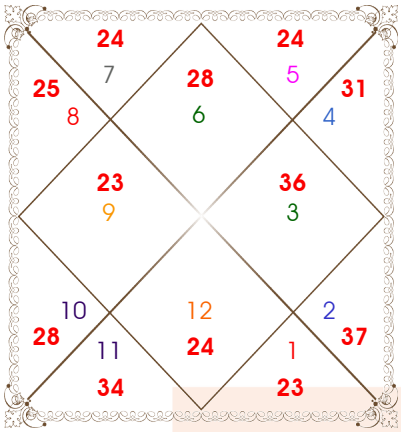

सूर्य का अष्टकवर्ग

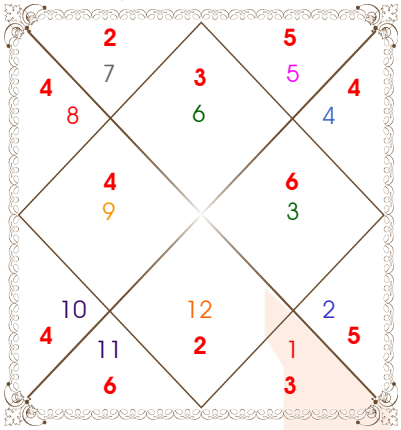

चंद्र का अष्टकवर्ग

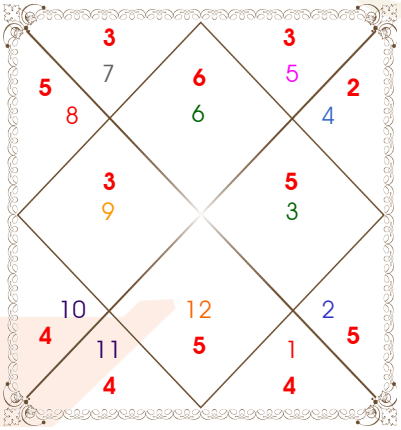

मंगल का अष्टकवर्ग

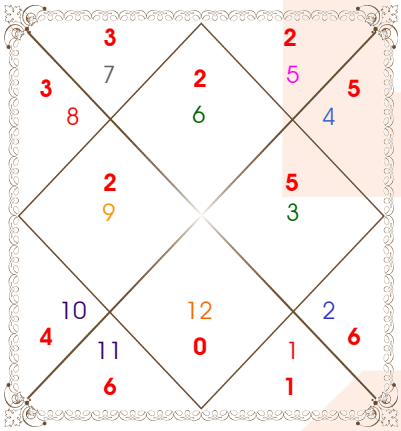

बुध का अष्टकवर्ग

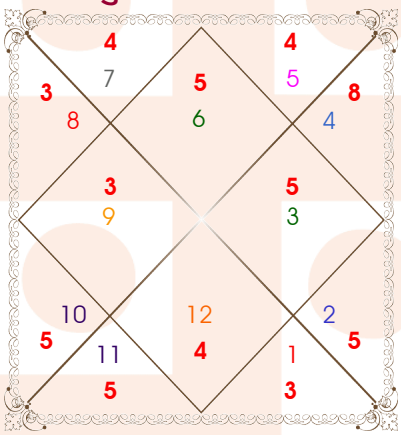

गुरू का अष्टकवर्ग

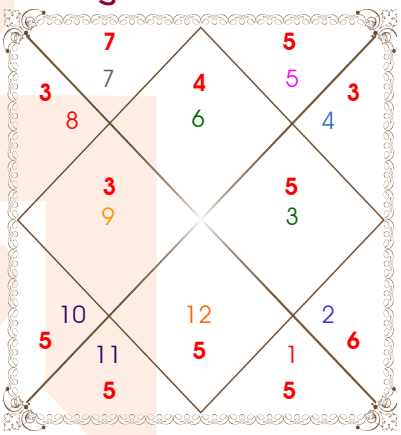

शुक्र का अष्टकवर्ग

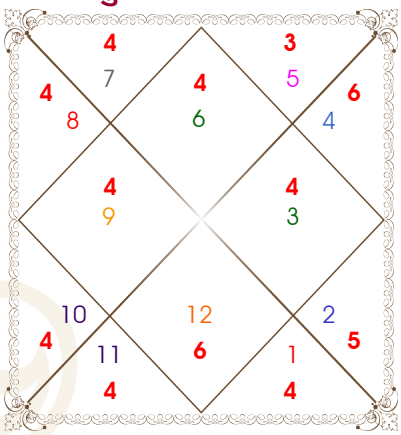

शनि का अष्टकवर्ग

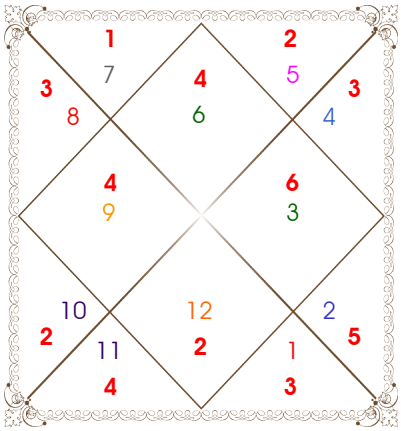

लग्न का अष्टकवर्ग

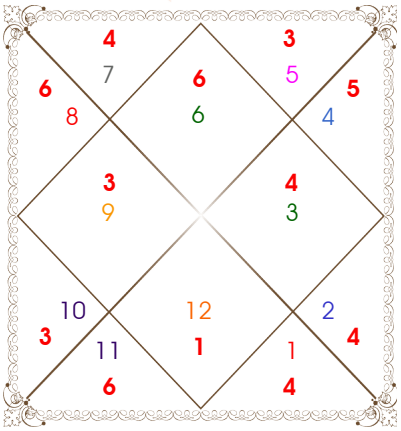

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

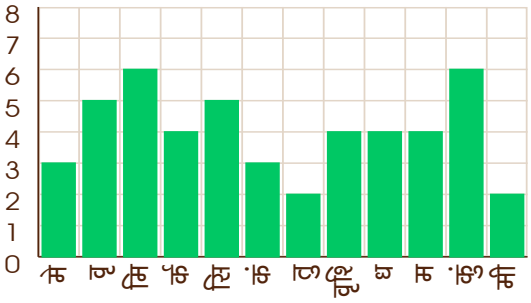

चन्द्र

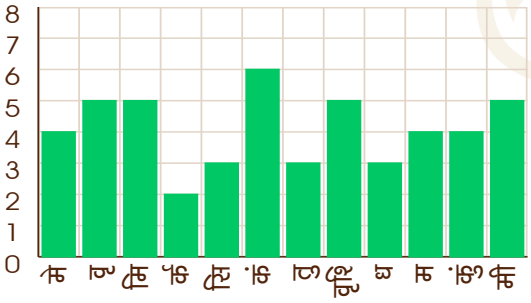

मंगल

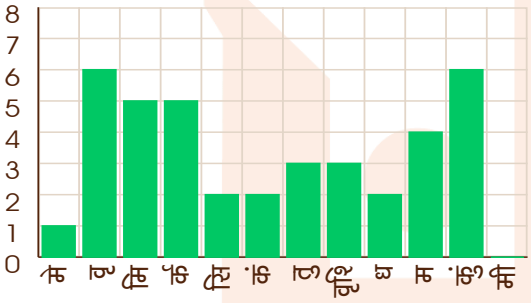

बुध

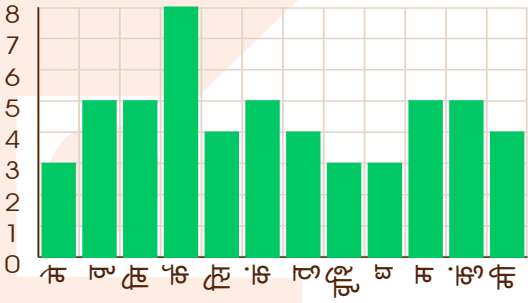

गुरु

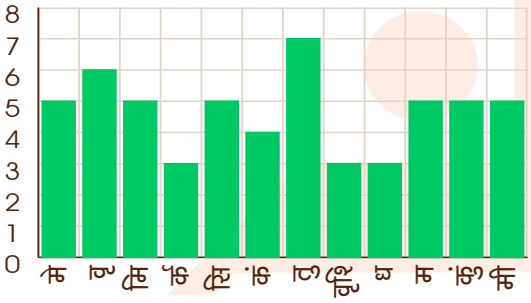

शुक्र

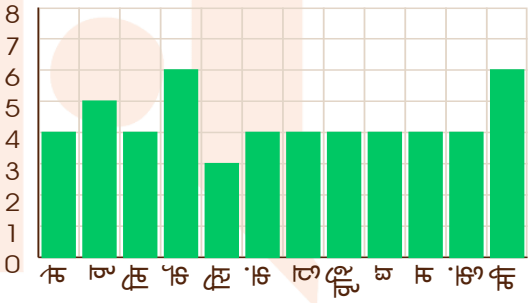

शनि

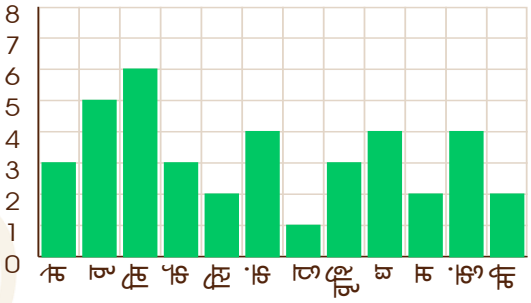

लग्न

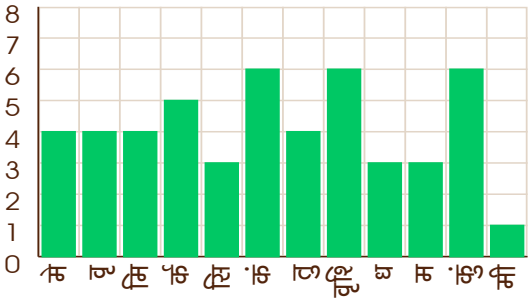

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

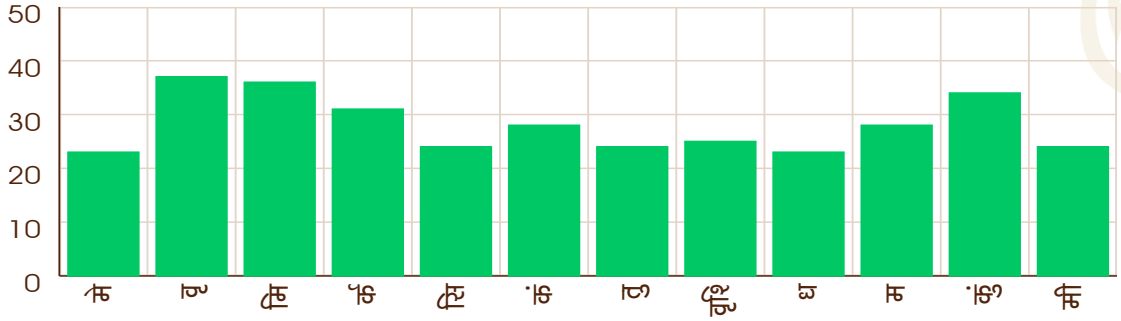

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

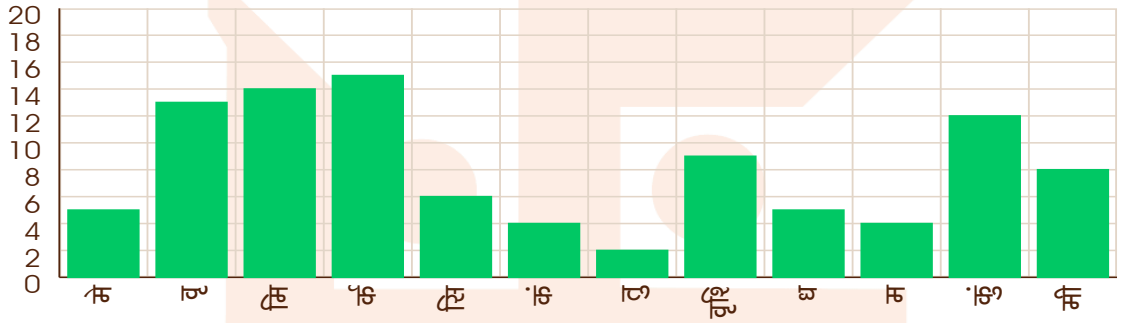

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

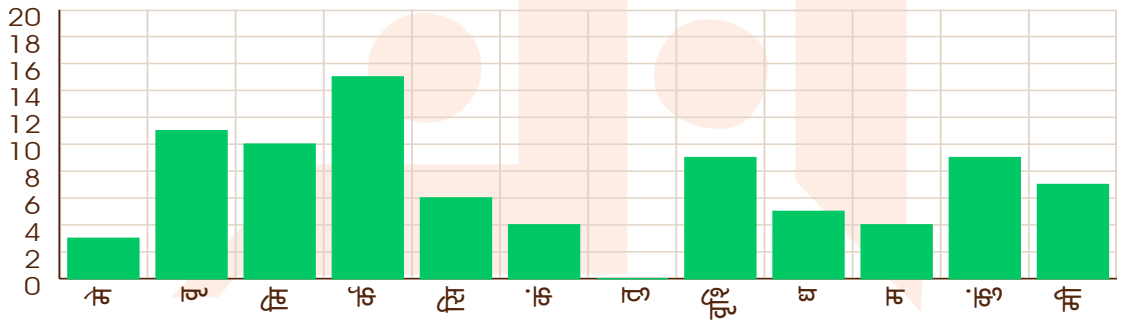

शोध्य पिंड

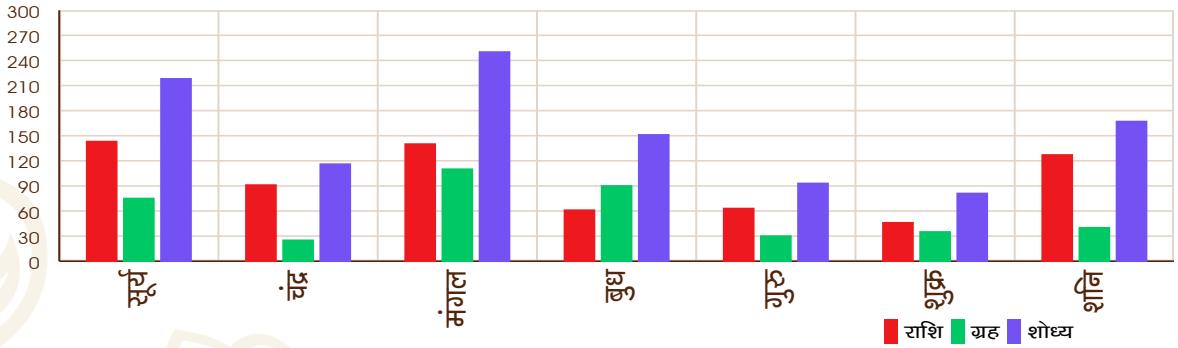

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 11 वर्ष 0 मास 28 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
26/08/2015		24/09/2026		23/09/2032		24/09/2042		23/09/2049	
24/09/2026		23/09/2032		24/09/2042		23/09/2049		24/09/2067	
	00/00/0000	सूर्य	11/01/2027	चंद्र	24/07/2033	मंगल	20/02/2043	राहु	06/06/2052
	00/00/0000	चंद्र	13/07/2027	मंगल	23/02/2034	राहु	09/03/2044	गुरु	30/10/2054
	00/00/0000	मंगल	18/11/2027	राहु	24/08/2035	गुरु	13/02/2045	शनि	05/09/2057
	26/08/2015	राहु	11/10/2028	गुरु	23/12/2036	शनि	25/03/2046	बुध	24/03/2060
राहु	23/11/2016	गुरु	31/07/2029	शनि	25/07/2038	बुध	22/03/2047	केतु	12/04/2061
गुरु	25/07/2019	शनि	13/07/2030	बुध	24/12/2039	केतु	18/08/2047	शुक्र	12/04/2064
शनि	24/09/2022	बुध	19/05/2031	केतु	24/07/2040	शुक्र	17/10/2048	सूर्य	06/03/2065
बुध	24/07/2025	केतु	24/09/2031	शुक्र	25/03/2042	सूर्य	22/02/2049	चंद्र	05/09/2066
केतु	24/09/2026	शुक्र	23/09/2032	सूर्य	24/09/2042	चंद्र	23/09/2049	मंगल	24/09/2067

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
24/09/2067		24/09/2083		25/09/2102		25/09/2119		25/09/2126	
24/09/2083		25/09/2102		25/09/2119		25/09/2126		00/00/0000	
गुरु	11/11/2069	शनि	27/09/2086	बुध	20/02/2105	केतु	21/02/2120	शुक्र	24/01/2130
शनि	24/05/2072	बुध	06/06/2089	केतु	17/02/2106	शुक्र	22/04/2121	सूर्य	24/01/2131
बुध	30/08/2074	केतु	16/07/2090	शुक्र	18/12/2108	सूर्य	28/08/2121	चंद्र	24/09/2132
केतु	06/08/2075	शुक्र	14/09/2093	सूर्य	25/10/2109	चंद्र	29/03/2122	मंगल	24/11/2133
शुक्र	06/04/2078	सूर्य	27/08/2094	चंद्र	26/03/2111	मंगल	25/08/2122	राहु	27/08/2135
सूर्य	23/01/2079	चंद्र	28/03/2096	मंगल	22/03/2112	राहु	13/09/2123		00/00/0000
चंद्र	24/05/2080	मंगल	06/05/2097	राहु	10/10/2114	गुरु	19/08/2124		00/00/0000
मंगल	30/04/2081	राहु	13/03/2100	गुरु	15/01/2117	शनि	27/09/2125		00/00/0000
राहु	24/09/2083	गुरु	25/09/2102	शनि	25/09/2119	बुध	25/09/2126		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 11 वर्ष 0 मा 0 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
26/08/2015		23/11/2016		25/07/2019		24/09/2022		24/07/2025	
23/11/2016		25/07/2019		24/09/2022		24/07/2025		24/09/2026	
	00/00/0000	गुरु	02/04/2017	शनि	24/01/2020	बुध	17/02/2023	केतु	18/08/2025
	00/00/0000	शनि	03/09/2017	बुध	06/07/2020	केतु	19/04/2023	शुक्र	28/10/2025
	00/00/0000	बुध	19/01/2018	केतु	11/09/2020	शुक्र	08/10/2023	सूर्य	19/11/2025
	26/08/2015	केतु	17/03/2018	शुक्र	23/03/2021	सूर्य	29/11/2023	चंद्र	24/12/2025
केतु	27/10/2015	शुक्र	26/08/2018	सूर्य	20/05/2021	चंद्र	23/02/2024	मंगल	18/01/2026
शुक्र	27/04/2016	सूर्य	14/10/2018	चंद्र	24/08/2021	मंगल	23/04/2024	राहु	23/03/2026
सूर्य	21/06/2016	चंद्र	03/01/2019	मंगल	31/10/2021	राहु	26/09/2024	गुरु	19/05/2026
चंद्र	20/09/2016	मंगल	01/03/2019	राहु	22/04/2022	गुरु	11/02/2025	शनि	25/07/2026
मंगल	23/11/2016	राहु	25/07/2019	गुरु	24/09/2022	शनि	24/07/2025	बुध	24/09/2026

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
24/09/2026		11/01/2027		13/07/2027		18/11/2027		11/10/2028	
11/01/2027		13/07/2027		18/11/2027		11/10/2028		31/07/2029	
सूर्य	29/09/2026	चंद्र	26/01/2027	मंगल	20/07/2027	राहु	06/01/2028	गुरु	19/11/2028
चंद्र	08/10/2026	मंगल	06/02/2027	राहु	08/08/2027	गुरु	19/02/2028	शनि	05/01/2029
मंगल	15/10/2026	राहु	05/03/2027	गुरु	25/08/2027	शनि	11/04/2028	बुध	15/02/2029
राहु	31/10/2026	गुरु	30/03/2027	शनि	15/09/2027	बुध	27/05/2028	केतु	04/03/2029
गुरु	15/11/2026	शनि	28/04/2027	बुध	03/10/2027	केतु	16/06/2028	शुक्र	22/04/2029
शनि	02/12/2026	बुध	24/05/2027	केतु	10/10/2027	शुक्र	09/08/2028	सूर्य	06/05/2029
बुध	18/12/2026	केतु	03/06/2027	शुक्र	01/11/2027	सूर्य	26/08/2028	चंद्र	31/05/2029
केतु	24/12/2026	शुक्र	04/07/2027	सूर्य	07/11/2027	चंद्र	22/09/2028	मंगल	17/06/2029
शुक्र	11/01/2027	सूर्य	13/07/2027	चंद्र	18/11/2027	मंगल	11/10/2028	राहु	31/07/2029

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
31/07/2029		13/07/2030		19/05/2031		24/09/2031		23/09/2032	
13/07/2030		19/05/2031		24/09/2031		23/09/2032		24/07/2033	
शनि	23/09/2029	बुध	26/08/2030	केतु	26/05/2031	शुक्र	24/11/2031	चंद्र	18/10/2032
बुध	12/11/2029	केतु	13/09/2030	शुक्र	17/06/2031	सूर्य	12/12/2031	मंगल	05/11/2032
केतु	02/12/2029	शुक्र	03/11/2030	सूर्य	23/06/2031	चंद्र	11/01/2032	राहु	21/12/2032
शुक्र	29/01/2030	सूर्य	19/11/2030	चंद्र	04/07/2031	मंगल	02/02/2032	गुरु	30/01/2033
सूर्य	15/02/2030	चंद्र	15/12/2030	मंगल	11/07/2031	राहु	28/03/2032	शनि	20/03/2033
चंद्र	16/03/2030	मंगल	02/01/2031	राहु	30/07/2031	गुरु	15/05/2032	बुध	02/05/2033
मंगल	05/04/2030	राहु	17/02/2031	गुरु	16/08/2031	शनि	12/07/2032	केतु	20/05/2033
राहु	27/05/2030	गुरु	31/03/2031	शनि	06/09/2031	बुध	02/09/2032	शुक्र	09/07/2033
गुरु	13/07/2030	शनि	19/05/2031	बुध	24/09/2031	केतु	23/09/2032	सूर्य	24/07/2033

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
24/07/2033		23/02/2034		24/08/2035		23/12/2036		25/07/2038	
23/02/2034		24/08/2035		23/12/2036		25/07/2038		24/12/2039	
मंगल	06/08/2033	राहु	16/05/2034	गुरु	28/10/2035	शनि	25/03/2037	बुध	06/10/2038
राहु	07/09/2033	गुरु	28/07/2034	शनि	13/01/2036	बुध	15/06/2037	केतु	05/11/2038
गुरु	05/10/2033	शनि	23/10/2034	बुध	22/03/2036	केतु	19/07/2037	शुक्र	30/01/2039
शनि	08/11/2033	बुध	08/01/2035	केतु	20/04/2036	शुक्र	23/10/2037	सूर्य	25/02/2039
बुध	08/12/2033	केतु	09/02/2035	शुक्र	10/07/2036	सूर्य	21/11/2037	चंद्र	09/04/2039
केतु	21/12/2033	शुक्र	11/05/2035	सूर्य	03/08/2036	चंद्र	08/01/2038	मंगल	10/05/2039
शुक्र	25/01/2034	सूर्य	08/06/2035	चंद्र	13/09/2036	मंगल	11/02/2038	राहु	26/07/2039
सूर्य	05/02/2034	चंद्र	23/07/2035	मंगल	11/10/2036	राहु	09/05/2038	गुरु	03/10/2039
चंद्र	23/02/2034	मंगल	24/08/2035	राहु	23/12/2036	गुरु	25/07/2038	शनि	24/12/2039

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
24/12/2039		24/07/2040		25/03/2042		24/09/2042		20/02/2043	
24/07/2040		25/03/2042		24/09/2042		20/02/2043		09/03/2044	
केतु	06/01/2040	शुक्र	03/11/2040	सूर्य	03/04/2042	मंगल	02/10/2042	राहु	18/04/2043
शुक्र	10/02/2040	सूर्य	03/12/2040	चंद्र	18/04/2042	राहु	25/10/2042	गुरु	08/06/2043
सूर्य	21/02/2040	चंद्र	23/01/2041	मंगल	29/04/2042	गुरु	14/11/2042	शनि	08/08/2043
चंद्र	09/03/2040	मंगल	27/02/2041	राहु	26/05/2042	शनि	07/12/2042	बुध	01/10/2043
मंगल	22/03/2040	राहु	30/05/2041	गुरु	20/06/2042	बुध	28/12/2042	केतु	24/10/2043
राहु	23/04/2040	गुरु	19/08/2041	शनि	19/07/2042	केतु	06/01/2043	शुक्र	27/12/2043
गुरु	21/05/2040	शनि	23/11/2041	बुध	13/08/2042	शुक्र	31/01/2043	सूर्य	15/01/2044
शनि	24/06/2040	बुध	17/02/2042	केतु	24/08/2042	सूर्य	07/02/2043	चंद्र	16/02/2044
बुध	24/07/2040	केतु	25/03/2042	शुक्र	24/09/2042	चंद्र	20/02/2043	मंगल	09/03/2044

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
09/03/2044		13/02/2045		25/03/2046		22/03/2047		18/08/2047	
13/02/2045		25/03/2046		22/03/2047		18/08/2047		17/10/2048	
गुरु	24/04/2044	शनि	18/04/2045	बुध	15/05/2046	केतु	31/03/2047	शुक्र	28/10/2047
शनि	17/06/2044	बुध	15/06/2045	केतु	05/06/2046	शुक्र	25/04/2047	सूर्य	19/11/2047
बुध	04/08/2044	केतु	08/07/2045	शुक्र	05/08/2046	सूर्य	02/05/2047	चंद्र	24/12/2047
केतु	24/08/2044	शुक्र	14/09/2045	सूर्य	23/08/2046	चंद्र	15/05/2047	मंगल	18/01/2048
शुक्र	20/10/2044	सूर्य	04/10/2045	चंद्र	22/09/2046	मंगल	23/05/2047	राहु	22/03/2048
सूर्य	06/11/2044	चंद्र	07/11/2045	मंगल	13/10/2046	राहु	15/06/2047	गुरु	18/05/2048
चंद्र	04/12/2044	मंगल	30/11/2045	राहु	07/12/2046	गुरु	05/07/2047	शनि	24/07/2048
मंगल	24/12/2044	राहु	30/01/2046	गुरु	24/01/2047	शनि	28/07/2047	बुध	23/09/2048
राहु	13/02/2045	गुरु	25/03/2046	शनि	22/03/2047	बुध	18/08/2047	केतु	17/10/2048

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
17/10/2048		22/02/2049		23/09/2049		06/06/2052		30/10/2054	
22/02/2049		23/09/2049		06/06/2052		30/10/2054		05/09/2057	
सूर्य	24/10/2048	चंद्र	12/03/2049	राहु	18/02/2050	गुरु	30/09/2052	शनि	13/04/2055
चंद्र	03/11/2048	मंगल	24/03/2049	गुरु	30/06/2050	शनि	16/02/2053	बुध	07/09/2055
मंगल	11/11/2048	राहु	25/04/2049	शनि	03/12/2050	बुध	20/06/2053	केतु	07/11/2055
राहु	30/11/2048	गुरु	24/05/2049	बुध	22/04/2051	केतु	11/08/2053	शुक्र	29/04/2056
गुरु	17/12/2048	शनि	27/06/2049	केतु	18/06/2051	शुक्र	04/01/2054	सूर्य	20/06/2056
शनि	06/01/2049	बुध	27/07/2049	शुक्र	29/11/2051	सूर्य	16/02/2054	चंद्र	14/09/2056
बुध	25/01/2049	केतु	08/08/2049	सूर्य	18/01/2052	चंद्र	30/04/2054	मंगल	14/11/2056
केतु	01/02/2049	शुक्र	13/09/2049	चंद्र	09/04/2052	मंगल	21/06/2054	राहु	19/04/2057
शुक्र	22/02/2049	सूर्य	23/09/2049	मंगल	06/06/2052	राहु	30/10/2054	गुरु	05/09/2057

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
05/09/2057		24/03/2060		12/04/2061		12/04/2064		06/03/2065	
24/03/2060		12/04/2061		12/04/2064		06/03/2065		05/09/2066	
बुध	15/01/2058	केतु	16/04/2060	शुक्र	12/10/2061	सूर्य	28/04/2064	चंद्र	21/04/2065
केतु	10/03/2058	शुक्र	19/06/2060	सूर्य	05/12/2061	चंद्र	26/05/2064	मंगल	23/05/2065
शुक्र	13/08/2058	सूर्य	08/07/2060	चंद्र	07/03/2062	मंगल	14/06/2064	राहु	13/08/2065
सूर्य	28/09/2058	चंद्र	09/08/2060	मंगल	10/05/2062	राहु	02/08/2064	गुरु	25/10/2065
चंद्र	15/12/2058	मंगल	31/08/2060	राहु	21/10/2062	गुरु	15/09/2064	शनि	20/01/2066
मंगल	07/02/2059	राहु	28/10/2060	गुरु	16/03/2063	शनि	06/11/2064	बुध	08/04/2066
राहु	27/06/2059	गुरु	18/12/2060	शनि	06/09/2063	बुध	22/12/2064	केतु	10/05/2066
गुरु	29/10/2059	शनि	17/02/2061	बुध	08/02/2064	केतु	11/01/2065	शुक्र	09/08/2066
शनि	24/03/2060	बुध	12/04/2061	केतु	12/04/2064	शुक्र	06/03/2065	सूर्य	05/09/2066

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
05/09/2066		24/09/2067		11/11/2069		24/05/2072		30/08/2074	
24/09/2067		11/11/2069		24/05/2072		30/08/2074		06/08/2075	
मंगल	28/09/2066	गुरु	06/01/2068	शनि	07/04/2070	बुध	19/09/2072	केतु	19/09/2074
राहु	24/11/2066	शनि	08/05/2068	बुध	16/08/2070	केतु	06/11/2072	शुक्र	15/11/2074
गुरु	14/01/2067	बुध	26/08/2068	केतु	09/10/2070	शुक्र	24/03/2073	सूर्य	02/12/2074
शनि	16/03/2067	केतु	11/10/2068	शुक्र	12/03/2071	सूर्य	04/05/2073	चंद्र	30/12/2074
बुध	09/05/2067	शुक्र	18/02/2069	सूर्य	27/04/2071	चंद्र	12/07/2073	मंगल	19/01/2075
केतु	01/06/2067	सूर्य	29/03/2069	चंद्र	13/07/2071	मंगल	30/08/2073	राहु	11/03/2075
शुक्र	04/08/2067	चंद्र	02/06/2069	मंगल	05/09/2071	राहु	01/01/2074	गुरु	26/04/2075
सूर्य	23/08/2067	मंगल	17/07/2069	राहु	22/01/2072	गुरु	21/04/2074	शनि	19/06/2075
चंद्र	24/09/2067	राहु	11/11/2069	गुरु	24/05/2072	शनि	30/08/2074	बुध	06/08/2075

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
06/08/2075		06/04/2078		23/01/2079		24/05/2080		30/04/2081	
06/04/2078		23/01/2079		24/05/2080		30/04/2081		24/09/2083	
शुक्र	15/01/2076	सूर्य	21/04/2078	चंद्र	05/03/2079	मंगल	13/06/2080	राहु	09/09/2081
सूर्य	04/03/2076	चंद्र	15/05/2078	मंगल	02/04/2079	राहु	03/08/2080	गुरु	04/01/2082
चंद्र	24/05/2076	मंगल	01/06/2078	राहु	14/06/2079	गुरु	18/09/2080	शनि	22/05/2082
मंगल	20/07/2076	राहु	15/07/2078	गुरु	18/08/2079	शनि	11/11/2080	बुध	24/09/2082
राहु	13/12/2076	गुरु	23/08/2078	शनि	03/11/2079	बुध	29/12/2080	केतु	14/11/2082
गुरु	22/04/2077	शनि	08/10/2078	बुध	11/01/2080	केतु	18/01/2081	शुक्र	09/04/2083
शनि	23/09/2077	बुध	19/11/2078	केतु	09/02/2080	शुक्र	16/03/2081	सूर्य	23/05/2083
बुध	08/02/2078	केतु	06/12/2078	शुक्र	30/04/2080	सूर्य	02/04/2081	चंद्र	04/08/2083
केतु	06/04/2078	शुक्र	23/01/2079	सूर्य	24/05/2080	चंद्र	30/04/2081	मंगल	24/09/2083

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
24/09/2083		27/09/2086		06/06/2089		16/07/2090		14/09/2093	
27/09/2086		06/06/2089		16/07/2090		14/09/2093		27/08/2094	
शनि	16/03/2084	बुध	13/02/2087	केतु	29/06/2089	शुक्र	24/01/2091	सूर्य	02/10/2093
बुध	18/08/2084	केतु	11/04/2087	शुक्र	05/09/2089	सूर्य	23/03/2091	चंद्र	30/10/2093
केतु	22/10/2084	शुक्र	22/09/2087	सूर्य	25/09/2089	चंद्र	28/06/2091	मंगल	20/11/2093
शुक्र	23/04/2085	सूर्य	10/11/2087	चंद्र	29/10/2089	मंगल	03/09/2091	राहु	11/01/2094
सूर्य	17/06/2085	चंद्र	31/01/2088	मंगल	21/11/2089	राहु	24/02/2092	गुरु	26/02/2094
चंद्र	16/09/2085	मंगल	29/03/2088	राहु	21/01/2090	गुरु	27/07/2092	शनि	22/04/2094
मंगल	19/11/2085	राहु	23/08/2088	गुरु	16/03/2090	शनि	26/01/2093	बुध	10/06/2094
राहु	03/05/2086	गुरु	01/01/2089	शनि	19/05/2090	बुध	09/07/2093	केतु	30/06/2094
गुरु	27/09/2086	शनि	06/06/2089	बुध	16/07/2090	केतु	14/09/2093	शुक्र	27/08/2094

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
27/08/2094		28/03/2096		06/05/2097		13/03/2100		25/09/2102	
28/03/2096		06/05/2097		13/03/2100		25/09/2102		20/02/2105	
चंद्र	14/10/2094	मंगल	20/04/2096	राहु	09/10/2097	गुरु	15/07/2100	बुध	27/01/2103
मंगल	17/11/2094	राहु	20/06/2096	गुरु	25/02/2098	शनि	08/12/2100	केतु	20/03/2103
राहु	12/02/2095	गुरु	13/08/2096	शनि	09/08/2098	बुध	18/04/2101	शुक्र	13/08/2103
गुरु	30/04/2095	शनि	16/10/2096	बुध	04/01/2099	केतु	11/06/2101	सूर्य	26/09/2103
शनि	31/07/2095	बुध	12/12/2096	केतु	05/03/2099	शुक्र	12/11/2101	चंद्र	08/12/2103
बुध	20/10/2095	केतु	05/01/2097	शुक्र	26/08/2099	सूर्य	29/12/2101	मंगल	29/01/2104
केतु	23/11/2095	शुक्र	13/03/2097	सूर्य	17/10/2099	चंद्र	16/03/2102	राहु	09/06/2104
शुक्र	28/02/2096	सूर्य	03/04/2097	चंद्र	12/01/2100	मंगल	09/05/2102	गुरु	04/10/2104
सूर्य	28/03/2096	चंद्र	06/05/2097	मंगल	13/03/2100	राहु	25/09/2102	शनि	20/02/2105

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
20/02/2105		17/02/2106		18/12/2108		25/10/2109		26/03/2111	
17/02/2106		18/12/2108		25/10/2109		26/03/2111		22/03/2112	
केतु	13/03/2105	शुक्र	09/08/2106	सूर्य	03/01/2109	चंद्र	07/12/2109	मंगल	16/04/2111
शुक्र	13/05/2105	सूर्य	30/09/2106	चंद्र	29/01/2109	मंगल	06/01/2110	राहु	10/06/2111
सूर्य	31/05/2105	चंद्र	25/12/2106	मंगल	16/02/2109	राहु	25/03/2110	गुरु	28/07/2111
चंद्र	30/06/2105	मंगल	23/02/2107	राहु	03/04/2109	गुरु	02/06/2110	शनि	23/09/2111
मंगल	21/07/2105	राहु	28/07/2107	गुरु	15/05/2109	शनि	23/08/2110	बुध	14/11/2111
राहु	13/09/2105	गुरु	13/12/2107	शनि	03/07/2109	बुध	04/11/2110	केतु	05/12/2111
गुरु	01/11/2105	शनि	25/05/2108	बुध	16/08/2109	केतु	04/12/2110	शुक्र	03/02/2112
शनि	28/12/2105	बुध	19/10/2108	केतु	03/09/2109	शुक्र	28/02/2111	सूर्य	21/02/2112
बुध	17/02/2106	केतु	18/12/2108	शुक्र	25/10/2109	सूर्य	26/03/2111	चंद्र	22/03/2112

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
22/03/2112		10/10/2114		15/01/2117		25/09/2119		21/02/2120	
10/10/2114		15/01/2117		25/09/2119		21/02/2120		22/04/2121	
राहु	09/08/2112	गुरु	28/01/2115	शनि	19/06/2117	केतु	04/10/2119	शुक्र	02/05/2120
गुरु	11/12/2112	शनि	08/06/2115	बुध	06/11/2117	शुक्र	28/10/2119	सूर्य	23/05/2120
शनि	08/05/2113	बुध	04/10/2115	केतु	02/01/2118	सूर्य	05/11/2119	चंद्र	28/06/2120
बुध	17/09/2113	केतु	21/11/2115	शुक्र	15/06/2118	चंद्र	17/11/2119	मंगल	23/07/2120
केतु	10/11/2113	शुक्र	07/04/2116	सूर्य	03/08/2118	मंगल	26/11/2119	राहु	25/09/2120
शुक्र	14/04/2114	सूर्य	18/05/2116	चंद्र	24/10/2118	राहु	18/12/2119	गुरु	20/11/2120
सूर्य	31/05/2114	चंद्र	26/07/2116	मंगल	20/12/2118	गुरु	07/01/2120	शनि	27/01/2121
चंद्र	16/08/2114	मंगल	13/09/2116	राहु	17/05/2119	शनि	31/01/2120	बुध	28/03/2121
मंगल	10/10/2114	राहु	15/01/2117	गुरु	25/09/2119	बुध	21/02/2120	केतु	22/04/2121

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
22/04/2121		28/08/2121		29/03/2122		25/08/2122		13/09/2123	
28/08/2121		29/03/2122		25/08/2122		13/09/2123		19/08/2124	
सूर्य	28/04/2121	चंद्र	15/09/2121	मंगल	07/04/2122	राहु	22/10/2122	गुरु	28/10/2123
चंद्र	09/05/2121	मंगल	27/09/2121	राहु	29/04/2122	गुरु	12/12/2122	शनि	21/12/2123
मंगल	17/05/2121	राहु	29/10/2121	गुरु	19/05/2122	शनि	11/02/2123	बुध	07/02/2124
राहु	05/06/2121	गुरु	26/11/2121	शनि	12/06/2122	बुध	06/04/2123	केतु	27/02/2124
गुरु	22/06/2121	शनि	30/12/2121	बुध	03/07/2122	केतु	28/04/2123	शुक्र	24/04/2124
शनि	12/07/2121	बुध	29/01/2122	केतु	11/07/2122	शुक्र	01/07/2123	सूर्य	11/05/2124
बुध	30/07/2121	केतु	11/02/2122	शुक्र	05/08/2122	सूर्य	20/07/2123	चंद्र	09/06/2124
केतु	07/08/2121	शुक्र	18/03/2122	सूर्य	13/08/2122	चंद्र	21/08/2123	मंगल	28/06/2124
शुक्र	28/08/2121	सूर्य	29/03/2122	चंद्र	25/08/2122	मंगल	13/09/2123	राहु	19/08/2124

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - केतु - शुक्र		शुक्र - केतु - सूर्य		शुक्र - केतु - चंद्र		शुक्र - केतु - मंगल	
18/08/2025 19:41		28/10/2025 20:11		19/11/2025 03:32		24/12/2025 15:47	
28/10/2025 20:11		19/11/2025 03:32		24/12/2025 15:47		18/01/2026 12:21	
शुक्र	30/08/2025 15:46	सूर्य	29/10/2025 21:45	चंद्र	22/11/2025 02:33	मंगल	26/12/2025 02:35
सूर्य	03/09/2025 04:59	चंद्र	31/10/2025 16:22	मंगल	24/11/2025 04:16	राहु	29/12/2025 20:04
चंद्र	09/09/2025 03:02	मंगल	01/11/2025 22:11	राहु	29/11/2025 12:06	गुरु	02/01/2026 03:37
मंगल	13/09/2025 06:28	राहु	05/11/2025 02:53	गुरु	04/12/2025 05:44	शनि	06/01/2026 02:04
राहु	23/09/2025 22:08	गुरु	07/11/2025 23:04	शनि	09/12/2025 20:41	बुध	09/01/2026 14:35
गुरु	03/10/2025 09:24	शनि	11/11/2025 08:02	बुध	14/12/2025 21:25	केतु	11/01/2026 01:23
शनि	14/10/2025 15:17	बुध	14/11/2025 08:29	केतु	16/12/2025 23:08	शुक्र	15/01/2026 04:49
बुध	24/10/2025 16:45	केतु	15/11/2025 14:18	शुक्र	22/12/2025 21:10	सूर्य	16/01/2026 10:38
केतु	28/10/2025 20:11	शुक्र	19/11/2025 03:32	सूर्य	24/12/2025 15:47	चंद्र	18/01/2026 12:21

शुक्र - केतु - राहु		शुक्र - केतु - गुरु		शुक्र - केतु - शनि		शुक्र - केतु - बुध	
18/01/2026 12:21		23/03/2026 10:24		19/05/2026 06:00		25/07/2026 17:17	
23/03/2026 10:24		19/05/2026 06:00		25/07/2026 17:17		24/09/2026 02:06	
राहु	28/01/2026 02:28	गुरु	31/03/2026 00:13	शनि	29/05/2026 22:23	बुध	03/08/2026 06:32
गुरु	05/02/2026 15:00	शनि	09/04/2026 00:07	बुध	08/06/2026 11:47	केतु	06/08/2026 19:03
शनि	15/02/2026 17:54	बुध	17/04/2026 01:18	केतु	12/06/2026 10:15	शुक्र	16/08/2026 20:31
बुध	24/02/2026 19:13	केतु	20/04/2026 08:50	शुक्र	23/06/2026 16:07	सूर्य	19/08/2026 20:57
केतु	28/02/2026 12:42	शुक्र	29/04/2026 20:06	सूर्य	27/06/2026 01:05	चंद्र	24/08/2026 21:42
शुक्र	11/03/2026 04:23	सूर्य	02/05/2026 16:17	चंद्र	02/07/2026 16:02	मंगल	28/08/2026 10:12
सूर्य	14/03/2026 09:05	चंद्र	07/05/2026 09:55	मंगल	06/07/2026 14:29	राहु	06/09/2026 11:32
चंद्र	19/03/2026 16:55	मंगल	10/05/2026 17:28	राहु	16/07/2026 17:23	गुरु	14/09/2026 12:42
मंगल	23/03/2026 10:24	राहु	19/05/2026 06:00	गुरु	25/07/2026 17:17	शनि	24/09/2026 02:06

सूर्य - सूर्य - सूर्य		सूर्य - सूर्य - चंद्र		सूर्य - सूर्य - मंगल		सूर्य - सूर्य - राहु	
24/09/2026 02:06		29/09/2026 13:36		08/10/2026 16:45		15/10/2026 02:09	
29/09/2026 13:36		08/10/2026 16:45		15/10/2026 02:09		31/10/2026 12:37	
सूर्य	24/09/2026 08:41	चंद्र	30/09/2026 07:51	मंगल	09/10/2026 01:42	राहु	17/10/2026 13:19
चंद्र	24/09/2026 19:38	मंगल	30/09/2026 20:38	राहु	10/10/2026 00:42	गुरु	19/10/2026 17:55
मंगल	25/09/2026 03:18	राहु	02/10/2026 05:31	गुरु	10/10/2026 21:09	शनि	22/10/2026 08:22
राहु	25/09/2026 23:02	गुरु	03/10/2026 10:44	शनि	11/10/2026 21:27	बुध	24/10/2026 16:15
गुरु	26/09/2026 16:34	शनि	04/10/2026 21:26	बुध	12/10/2026 19:11	केतु	25/10/2026 15:16
शनि	27/09/2026 13:23	बुध	06/10/2026 04:29	केतु	13/10/2026 04:08	शुक्र	28/10/2026 09:01
बुध	28/09/2026 08:01	केतु	06/10/2026 17:16	शुक्र	14/10/2026 05:42	सूर्य	29/10/2026 04:44
केतु	28/09/2026 15:41	शुक्र	08/10/2026 05:47	सूर्य	14/10/2026 13:22	चंद्र	30/10/2026 13:37
शुक्र	29/09/2026 13:36	सूर्य	08/10/2026 16:45	चंद्र	15/10/2026 02:09	मंगल	31/10/2026 12:37

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - सूर्य - गुरु		सूर्य - सूर्य - शनि		सूर्य - सूर्य - बुध		सूर्य - सूर्य - केतु	
31/10/2026 12:37		15/11/2026 03:16		02/12/2026 11:39		18/12/2026 00:12	
15/11/2026 03:16		02/12/2026 11:39		18/12/2026 00:12		24/12/2026 09:36	
गुरु	02/11/2026 11:22	शनि	17/11/2026 21:11	बुध	04/12/2026 16:25	केतु	18/12/2026 09:09
शनि	04/11/2026 18:53	बुध	20/11/2026 08:11	केतु	05/12/2026 14:09	शुक्र	19/12/2026 10:43
बुध	06/11/2026 20:34	केतु	21/11/2026 08:28	शुक्र	08/12/2026 04:15	सूर्य	19/12/2026 18:23
केतु	07/11/2026 17:01	शुक्र	24/11/2026 05:52	सूर्य	08/12/2026 22:53	चंद्र	20/12/2026 07:10
शुक्र	10/11/2026 03:27	सूर्य	25/11/2026 02:41	चंद्र	10/12/2026 05:55	मंगल	20/12/2026 16:07
सूर्य	10/11/2026 20:59	चंद्र	26/11/2026 13:23	मंगल	11/12/2026 03:39	राहु	21/12/2026 15:08
चंद्र	12/11/2026 02:13	मंगल	27/11/2026 13:40	राहु	13/12/2026 11:32	गुरु	22/12/2026 11:35
मंगल	12/11/2026 22:40	राहु	30/11/2026 04:08	गुरु	15/12/2026 13:13	शनि	23/12/2026 11:52
राहु	15/11/2026 03:16	गुरु	02/12/2026 11:39	शनि	18/12/2026 00:12	बुध	24/12/2026 09:36

सूर्य - सूर्य - शुक्र		सूर्य - चंद्र - चंद्र		सूर्य - चंद्र - मंगल		सूर्य - चंद्र - राहु	
24/12/2026 09:36		11/01/2027 15:54		26/01/2027 21:09		06/02/2027 12:50	
11/01/2027 15:54		26/01/2027 21:09		06/02/2027 12:50		05/03/2027 22:17	
शुक्र	27/12/2026 10:39	चंद्र	12/01/2027 22:21	मंगल	27/01/2027 12:04	राहु	10/02/2027 15:27
सूर्य	28/12/2026 08:34	मंगल	13/01/2027 19:39	राहु	29/01/2027 02:25	गुरु	14/02/2027 07:06
चंद्र	29/12/2026 21:06	राहु	16/01/2027 02:26	गुरु	30/01/2027 12:31	शनि	18/02/2027 15:12
मंगल	30/12/2026 22:40	गुरु	18/01/2027 03:08	शनि	01/02/2027 05:00	बुध	22/02/2027 12:21
राहु	02/01/2027 16:24	शनि	20/01/2027 12:58	बुध	02/02/2027 17:13	केतु	24/02/2027 02:42
गुरु	05/01/2027 02:51	बुध	22/01/2027 16:43	केतु	03/02/2027 08:08	शुक्र	28/02/2027 16:16
शनि	08/01/2027 00:15	केतु	23/01/2027 14:01	शुक्र	05/02/2027 02:44	सूर्य	02/03/2027 01:08
बुध	10/01/2027 14:20	शुक्र	26/01/2027 02:54	सूर्य	05/02/2027 15:31	चंद्र	04/03/2027 07:56
केतु	11/01/2027 15:54	सूर्य	26/01/2027 21:09	चंद्र	06/02/2027 12:50	मंगल	05/03/2027 22:17

सूर्य - चंद्र - गुरु		सूर्य - चंद्र - शनि		सूर्य - चंद्र - बुध		सूर्य - चंद्र - केतु	
05/03/2027 22:17		30/03/2027 06:41		28/04/2027 04:39		24/05/2027 01:35	
30/03/2027 06:41		28/04/2027 04:39		24/05/2027 01:35		03/06/2027 17:15	
गुरु	09/03/2027 04:12	शनि	03/04/2027 20:34	बुध	01/05/2027 20:37	केतु	24/05/2027 16:30
शनि	13/03/2027 00:44	बुध	07/04/2027 22:52	केतु	03/05/2027 08:50	शुक्र	26/05/2027 11:06
बुध	16/03/2027 11:31	केतु	09/04/2027 15:21	शुक्र	07/05/2027 16:20	सूर्य	26/05/2027 23:53
केतु	17/03/2027 21:37	शुक्र	14/04/2027 11:01	सूर्य	08/05/2027 23:22	चंद्र	27/05/2027 21:12
शुक्र	21/03/2027 23:01	सूर्य	15/04/2027 21:43	चंद्र	11/05/2027 03:07	मंगल	28/05/2027 12:07
सूर्य	23/03/2027 04:14	चंद्र	18/04/2027 07:33	मंगल	12/05/2027 15:20	राहु	30/05/2027 02:28
चंद्र	25/03/2027 04:56	मंगल	20/04/2027 00:02	राहु	16/05/2027 12:29	गुरु	31/05/2027 12:33
मंगल	26/03/2027 15:01	राहु	24/04/2027 08:07	गुरु	19/05/2027 23:16	शनि	02/06/2027 05:02
राहु	30/03/2027 06:41	गुरु	28/04/2027 04:39	शनि	24/05/2027 01:35	बुध	03/06/2027 17:15

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - चंद्र - शुक्र		सूर्य - चंद्र - सूर्य		सूर्य - मंगल - मंगल		सूर्य - मंगल - राहु	
03/06/2027 17:15		04/07/2027 03:45		13/07/2027 06:54		20/07/2027 17:53	
04/07/2027 03:45		13/07/2027 06:54		20/07/2027 17:53		08/08/2027 22:06	
शुक्र	08/06/2027 19:00	सूर्य	04/07/2027 14:43	मंगल	13/07/2027 17:21	राहु	23/07/2027 14:55
सूर्य	10/06/2027 07:32	चंद्र	05/07/2027 08:58	राहु	14/07/2027 20:11	गुरु	26/07/2027 04:16
चंद्र	12/06/2027 20:24	मंगल	05/07/2027 21:46	गुरु	15/07/2027 20:03	शनि	29/07/2027 05:08
मंगल	14/06/2027 15:01	राहु	07/07/2027 06:38	शनि	17/07/2027 00:23	बुध	31/07/2027 22:20
राहु	19/06/2027 04:36	गुरु	08/07/2027 11:51	बुध	18/07/2027 01:45	केतु	02/08/2027 01:11
गुरु	23/06/2027 06:00	शनि	09/07/2027 22:33	केतु	18/07/2027 12:11	शुक्र	05/08/2027 05:53
शनि	28/06/2027 01:39	बुध	11/07/2027 05:36	शुक्र	19/07/2027 18:01	सूर्य	06/08/2027 04:54
बुध	02/07/2027 09:09	केतु	11/07/2027 18:23	सूर्य	20/07/2027 02:58	चंद्र	07/08/2027 19:15
केतु	04/07/2027 03:45	शुक्र	13/07/2027 06:54	चंद्र	20/07/2027 17:53	मंगल	08/08/2027 22:06

सूर्य - मंगल - गुरु		सूर्य - मंगल - शनि		सूर्य - मंगल - बुध		सूर्य - मंगल - केतु	
08/08/2027 22:06		25/08/2027 23:10		15/09/2027 04:57		03/10/2027 07:36	
25/08/2027 23:10		15/09/2027 04:57		03/10/2027 07:36		10/10/2027 18:34	
गुरु	11/08/2027 04:38	शनि	29/08/2027 04:05	बुध	17/09/2027 18:32	केतु	03/10/2027 18:03
शनि	13/08/2027 21:24	बुध	01/09/2027 00:54	केतु	18/09/2027 19:53	शुक्र	04/10/2027 23:52
बुध	16/08/2027 07:22	केतु	02/09/2027 05:15	शुक्र	21/09/2027 20:20	सूर्य	05/10/2027 08:49
केतु	17/08/2027 07:13	शुक्र	05/09/2027 14:12	सूर्य	22/09/2027 18:03	चंद्र	05/10/2027 23:44
शुक्र	20/08/2027 03:24	सूर्य	06/09/2027 14:30	चंद्र	24/09/2027 06:17	मंगल	06/10/2027 10:10
सूर्य	20/08/2027 23:51	चंद्र	08/09/2027 06:59	मंगल	25/09/2027 07:38	राहु	07/10/2027 13:01
चंद्र	22/08/2027 09:57	मंगल	09/09/2027 11:19	राहु	28/09/2027 00:50	गुरु	08/10/2027 12:53
मंगल	23/08/2027 09:49	राहु	12/09/2027 12:11	गुरु	30/09/2027 10:47	शनि	09/10/2027 17:13
राहु	25/08/2027 23:10	गुरु	15/09/2027 04:57	शनि	03/10/2027 07:36	बुध	10/10/2027 18:34

सूर्य - मंगल - शुक्र		सूर्य - मंगल - सूर्य		सूर्य - मंगल - चंद्र		सूर्य - राहु - राहु	
10/10/2027 18:34		01/11/2027 01:55		07/11/2027 11:20		18/11/2027 03:00	
01/11/2027 01:55		07/11/2027 11:20		18/11/2027 03:00		06/01/2028 10:25	
शुक्र	14/10/2027 07:48	सूर्य	01/11/2027 09:36	चंद्र	08/11/2027 08:38	राहु	25/11/2027 12:31
सूर्य	15/10/2027 09:22	चंद्र	01/11/2027 22:23	मंगल	08/11/2027 23:33	गुरु	02/12/2027 02:18
चंद्र	17/10/2027 03:59	मंगल	02/11/2027 07:20	राहु	10/11/2027 13:54	शनि	09/12/2027 21:41
मंगल	18/10/2027 09:49	राहु	03/11/2027 06:20	गुरु	11/11/2027 24:00	बुध	16/12/2027 21:20
राहु	21/10/2027 14:31	गुरु	04/11/2027 02:48	शनि	13/11/2027 16:28	केतु	19/12/2027 18:22
गुरु	24/10/2027 10:41	शनि	05/11/2027 03:05	बुध	15/11/2027 04:42	शुक्र	27/12/2027 23:36
शनि	27/10/2027 19:39	बुध	06/11/2027 00:49	केतु	15/11/2027 19:37	सूर्य	30/12/2027 10:46
बुध	30/10/2027 20:06	केतु	06/11/2027 09:46	शुक्र	17/11/2027 14:13	चंद्र	03/01/2028 13:23
केतु	01/11/2027 01:55	शुक्र	07/11/2027 11:20	सूर्य	18/11/2027 03:00	मंगल	06/01/2028 10:25

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - राहु - गुरु		सूर्य - राहु - शनि		सूर्य - राहु - बुध		सूर्य - राहु - केतु	
06/01/2028 10:25		19/02/2028 06:20		11/04/2028 07:29		27/05/2028 21:09	
19/02/2028 06:20		11/04/2028 07:29		27/05/2028 21:09		16/06/2028 01:22	
गुरु	12/01/2028 06:40	शनि	27/02/2028 12:07	बुध	17/04/2028 21:50	केतु	29/05/2028 00:00
शनि	19/01/2028 05:13	बुध	05/03/2028 21:05	केतु	20/04/2028 15:01	शुक्र	01/06/2028 04:42
बुध	25/01/2028 10:15	केतु	08/03/2028 21:57	शुक्र	28/04/2028 09:18	सूर्य	02/06/2028 03:43
केतु	27/01/2028 23:37	शुक्र	17/03/2028 14:08	सूर्य	30/04/2028 17:11	चंद्र	03/06/2028 18:04
शुक्र	04/02/2028 06:56	सूर्य	20/03/2028 04:36	चंद्र	04/05/2028 14:19	मंगल	04/06/2028 20:55
सूर्य	06/02/2028 11:31	चंद्र	24/03/2028 12:42	मंगल	07/05/2028 07:31	राहु	07/06/2028 17:57
चंद्र	10/02/2028 03:11	मंगल	27/03/2028 13:34	राहु	14/05/2028 07:10	गुरु	10/06/2028 07:18
मंगल	12/02/2028 16:33	राहु	04/04/2028 08:56	गुरु	20/05/2028 12:11	शनि	13/06/2028 08:10
राहु	19/02/2028 06:20	गुरु	11/04/2028 07:29	शनि	27/05/2028 21:09	बुध	16/06/2028 01:22

सूर्य - राहु - शुक्र		सूर्य - राहु - सूर्य		सूर्य - राहु - चंद्र		सूर्य - राहु - मंगल	
16/06/2028 01:22		09/08/2028 20:16		26/08/2028 06:44		22/09/2028 16:11	
09/08/2028 20:16		26/08/2028 06:44		22/09/2028 16:11		11/10/2028 20:24	
शुक्र	25/06/2028 04:31	सूर्य	10/08/2028 16:00	चंद्र	28/08/2028 13:32	मंगल	23/09/2028 19:02
सूर्य	27/06/2028 22:16	चंद्र	12/08/2028 00:52	मंगल	30/08/2028 03:53	राहु	26/09/2028 16:04
चंद्र	02/07/2028 11:50	मंगल	12/08/2028 23:53	राहु	03/09/2028 06:30	गुरु	29/09/2028 05:26
मंगल	05/07/2028 16:33	राहु	15/08/2028 11:03	गुरु	06/09/2028 22:09	शनि	02/10/2028 06:18
राहु	13/07/2028 21:47	गुरु	17/08/2028 15:39	शनि	11/09/2028 06:15	बुध	04/10/2028 23:30
गुरु	21/07/2028 05:06	शनि	20/08/2028 06:06	बुध	15/09/2028 03:23	केतु	06/10/2028 02:20
शनि	29/07/2028 21:17	बुध	22/08/2028 13:59	केतु	16/09/2028 17:45	शुक्र	09/10/2028 07:03
बुध	06/08/2028 15:34	केतु	23/08/2028 13:00	शुक्र	21/09/2028 07:19	सूर्य	10/10/2028 06:03
केतु	09/08/2028 20:16	शुक्र	26/08/2028 06:44	सूर्य	22/09/2028 16:11	चंद्र	11/10/2028 20:24

सूर्य - गुरु - गुरु		सूर्य - गुरु - शनि		सूर्य - गुरु - बुध		सूर्य - गुरु - केतु	
11/10/2028 20:24		19/11/2028 19:27		05/01/2029 01:48		15/02/2029 11:17	
19/11/2028 19:27		05/01/2029 01:48		15/02/2029 11:17		04/03/2029 12:22	
गुरु	17/10/2028 01:05	शनि	27/11/2028 03:15	बुध	10/01/2029 22:33	केतु	16/02/2029 11:09
शनि	23/10/2028 05:07	बुध	03/12/2028 16:33	केतु	13/01/2029 08:30	शुक्र	19/02/2029 07:20
बुध	28/10/2028 17:35	केतु	06/12/2028 09:19	शुक्र	20/01/2029 06:05	सूर्य	20/02/2029 03:47
केतु	31/10/2028 00:08	शुक्र	14/12/2028 02:23	सूर्य	22/01/2029 07:45	चंद्र	21/02/2029 13:52
शुक्र	06/11/2028 11:58	सूर्य	16/12/2028 09:54	चंद्र	25/01/2029 18:33	मंगल	22/02/2029 13:44
सूर्य	08/11/2028 10:43	चंद्र	20/12/2028 06:26	मंगल	28/01/2029 04:30	राहु	25/02/2029 03:06
चंद्र	11/11/2028 16:39	मंगल	22/12/2028 23:12	राहु	03/02/2029 09:31	गुरु	27/02/2029 09:38
मंगल	13/11/2028 23:11	राहु	29/12/2028 21:45	गुरु	08/02/2029 21:59	शनि	02/03/2029 02:25
राहु	19/11/2028 19:27	गुरु	05/01/2029 01:48	शनि	15/02/2029 11:17	बुध	04/03/2029 12:22

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - केतु - शुक्र - बुध	
14/10/2025 15:17	
24/10/2025 16:45	
बुध	16/10/2025 01:29
केतु	16/10/2025 15:34
शुक्र	18/10/2025 07:49
सूर्य	18/10/2025 19:54
चंद्र	19/10/2025 16:01
मंगल	20/10/2025 06:06
राहु	21/10/2025 18:19
गुरु	23/10/2025 02:31
शनि	24/10/2025 16:45

शुक्र - केतु - शुक्र - केतु	
24/10/2025 16:45	
28/10/2025 20:11	
केतु	24/10/2025 22:33
शुक्र	25/10/2025 15:07
सूर्य	25/10/2025 20:06
चंद्र	26/10/2025 04:23
मंगल	26/10/2025 10:11
राहु	27/10/2025 01:06
गुरु	27/10/2025 14:21
शनि	28/10/2025 06:06
बुध	28/10/2025 20:11

शुक्र - केतु - सूर्य - सूर्य	
28/10/2025 20:11	
29/10/2025 21:45	
सूर्य	28/10/2025 21:27
चंद्र	28/10/2025 23:35
मंगल	29/10/2025 01:05
राहु	29/10/2025 04:55
गुरु	29/10/2025 08:19
शनि	29/10/2025 12:22
बुध	29/10/2025 16:00
केतु	29/10/2025 17:29
शुक्र	29/10/2025 21:45

शुक्र - केतु - सूर्य - चंद्र	
29/10/2025 21:45	
31/10/2025 16:22	
चंद्र	30/10/2025 01:18
मंगल	30/10/2025 03:47
राहु	30/10/2025 10:11
गुरु	30/10/2025 15:51
शनि	30/10/2025 22:36
बुध	31/10/2025 04:38
केतु	31/10/2025 07:08
शुक्र	31/10/2025 14:14
सूर्य	31/10/2025 16:22

शुक्र - केतु - सूर्य - मंगल	
31/10/2025 16:22	
01/11/2025 22:11	
मंगल	31/10/2025 18:06
राहु	31/10/2025 22:34
गुरु	01/11/2025 02:33
शनि	01/11/2025 07:16
बुध	01/11/2025 11:30
केतु	01/11/2025 13:14
शुक्र	01/11/2025 18:13
सूर्य	01/11/2025 19:42
चंद्र	01/11/2025 22:11

शुक्र - केतु - सूर्य - राहु	
01/11/2025 22:11	
05/11/2025 02:53	
राहु	02/11/2025 09:42
गुरु	02/11/2025 19:55
शनि	03/11/2025 08:04
बुध	03/11/2025 18:56
केतु	03/11/2025 23:24
शुक्र	04/11/2025 12:11
सूर्य	04/11/2025 16:01
चंद्र	04/11/2025 22:25
मंगल	05/11/2025 02:53

शुक्र - केतु - सूर्य - गुरु	
05/11/2025 02:53	
07/11/2025 23:04	
गुरु	05/11/2025 11:59
शनि	05/11/2025 22:47
बुध	06/11/2025 08:26
केतु	06/11/2025 12:25
शुक्र	06/11/2025 23:47
सूर्य	07/11/2025 03:11
चंद्र	07/11/2025 08:52
मंगल	07/11/2025 12:51
राहु	07/11/2025 23:04

शुक्र - केतु - सूर्य - शनि	
07/11/2025 23:04	
11/11/2025 08:02	
शनि	08/11/2025 11:53
बुध	08/11/2025 23:22
केतु	09/11/2025 04:05
शुक्र	09/11/2025 17:35
सूर्य	09/11/2025 21:38
चंद्र	10/11/2025 04:22
मंगल	10/11/2025 09:06
राहु	10/11/2025 21:14
गुरु	11/11/2025 08:02

शुक्र - केतु - सूर्य - बुध	
11/11/2025 08:02	
14/11/2025 08:29	
बुध	11/11/2025 18:18
केतु	11/11/2025 22:31
शुक्र	12/11/2025 10:36
सूर्य	12/11/2025 14:13
चंद्र	12/11/2025 20:15
मंगल	13/11/2025 00:29
राहु	13/11/2025 11:21
गुरु	13/11/2025 21:00
शनि	14/11/2025 08:29

शुक्र - केतु - सूर्य - केतु	
14/11/2025 08:29	
15/11/2025 14:18	
केतु	14/11/2025 10:13
शुक्र	14/11/2025 15:11
सूर्य	14/11/2025 16:41
चंद्र	14/11/2025 19:10
मंगल	14/11/2025 20:54
राहु	15/11/2025 01:23
गुरु	15/11/2025 05:21
शनि	15/11/2025 10:05
बुध	15/11/2025 14:18

शुक्र - केतु - सूर्य - शुक्र	
15/11/2025 14:18	
19/11/2025 03:32	
शुक्र	16/11/2025 04:31
सूर्य	16/11/2025 08:46
चंद्र	16/11/2025 15:52
मंगल	16/11/2025 20:51
राहु	17/11/2025 09:38
गुरु	17/11/2025 20:59
शनि	18/11/2025 10:29
बुध	18/11/2025 22:34
केतु	19/11/2025 03:32

शुक्र - केतु - चंद्र - चंद्र	
19/11/2025 03:32	
22/11/2025 02:33	
चंद्र	19/11/2025 09:27
मंगल	19/11/2025 13:35
राहु	20/11/2025 00:15
गुरु	20/11/2025 09:43
शनि	20/11/2025 20:58
बुध	21/11/2025 07:01
केतु	21/11/2025 11:10
शुक्र	21/11/2025 23:00
सूर्य	22/11/2025 02:33

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - केतु - चंद्र - मंगल	
22/11/2025 02:33	
24/11/2025 04:16	
मंगल	22/11/2025 05:27
राहु	22/11/2025 12:54
गुरु	22/11/2025 19:32
शनि	23/11/2025 03:24
बुध	23/11/2025 10:27
केतु	23/11/2025 13:21
शुक्र	23/11/2025 21:38
सूर्य	24/11/2025 00:07
चंद्र	24/11/2025 04:16

शुक्र - केतु - चंद्र - राहु	
24/11/2025 04:16	
29/11/2025 12:06	
राहु	24/11/2025 23:26
गुरु	25/11/2025 16:29
शनि	26/11/2025 12:44
बुध	27/11/2025 06:50
केतु	27/11/2025 14:18
शुक्र	28/11/2025 11:36
सूर्य	28/11/2025 18:00
चंद्र	29/11/2025 04:39
मंगल	29/11/2025 12:06

शुक्र - केतु - चंद्र - गुरु	
29/11/2025 12:06	
04/12/2025 05:44	
गुरु	30/11/2025 03:15
शनि	30/11/2025 21:15
बुध	01/12/2025 13:21
केतु	01/12/2025 19:58
शुक्र	02/12/2025 14:55
सूर्य	02/12/2025 20:36
चंद्र	03/12/2025 06:04
मंगल	03/12/2025 12:41
राहु	04/12/2025 05:44

शुक्र - केतु - चंद्र - शनि	
04/12/2025 05:44	
09/12/2025 20:41	
शनि	05/12/2025 03:06
बुध	05/12/2025 22:13
केतु	06/12/2025 06:05
शुक्र	07/12/2025 04:35
सूर्य	07/12/2025 11:20
चंद्र	07/12/2025 22:34
मंगल	08/12/2025 06:27
राहु	09/12/2025 02:41
गुरु	09/12/2025 20:41

शुक्र - केतु - चंद्र - बुध	
09/12/2025 20:41	
14/12/2025 21:25	
बुध	10/12/2025 13:47
केतु	10/12/2025 20:49
शुक्र	11/12/2025 16:57
सूर्य	11/12/2025 22:59
चंद्र	12/12/2025 09:03
मंगल	12/12/2025 16:05
राहु	13/12/2025 10:12
गुरु	14/12/2025 02:18
शनि	14/12/2025 21:25

शुक्र - केतु - चंद्र - केतु	
14/12/2025 21:25	
16/12/2025 23:08	
केतु	15/12/2025 00:19
शुक्र	15/12/2025 08:36
सूर्य	15/12/2025 11:05
चंद्र	15/12/2025 15:14
मंगल	15/12/2025 18:08
राहु	16/12/2025 01:35
गुरु	16/12/2025 08:13
शनि	16/12/2025 16:05
बुध	16/12/2025 23:08

शुक्र - केतु - चंद्र - शुक्र	
16/12/2025 23:08	
22/12/2025 21:10	
शुक्र	17/12/2025 22:48
सूर्य	18/12/2025 05:54
चंद्र	18/12/2025 17:44
मंगल	19/12/2025 02:01
राहु	19/12/2025 23:20
गुरु	20/12/2025 18:16
शनि	21/12/2025 16:46
बुध	22/12/2025 12:53
केतु	22/12/2025 21:10

शुक्र - केतु - चंद्र - सूर्य	
22/12/2025 21:10	
24/12/2025 15:47	
सूर्य	22/12/2025 23:18
चंद्र	23/12/2025 02:51
मंगल	23/12/2025 05:20
राहु	23/12/2025 11:44
गुरु	23/12/2025 17:25
शनि	24/12/2025 00:09
बुध	24/12/2025 06:12
केतु	24/12/2025 08:41
शुक्र	24/12/2025 15:47

शुक्र - केतु - मंगल - मंगल	
24/12/2025 15:47	
26/12/2025 02:35	
मंगल	24/12/2025 17:49
राहु	24/12/2025 23:02
गुरु	25/12/2025 03:40
शनि	25/12/2025 09:11
बुध	25/12/2025 14:07
केतु	25/12/2025 16:08
शुक्र	25/12/2025 21:56
सूर्य	25/12/2025 23:41
चंद्र	26/12/2025 02:35

शुक्र - केतु - मंगल - राहु	
26/12/2025 02:35	
29/12/2025 20:04	
राहु	26/12/2025 16:00
गुरु	27/12/2025 03:56
शनि	27/12/2025 18:06
बुध	28/12/2025 06:47
केतु	28/12/2025 12:00
शुक्र	29/12/2025 02:55
सूर्य	29/12/2025 07:23
चंद्र	29/12/2025 14:51
मंगल	29/12/2025 20:04

शुक्र - केतु - मंगल - गुरु	
29/12/2025 20:04	
02/01/2026 03:37	
गुरु	30/12/2025 06:40
शनि	30/12/2025 19:16
बुध	31/12/2025 06:32
केतु	31/12/2025 11:11
शुक्र	01/01/2026 00:26
सूर्य	01/01/2026 04:25
चंद्र	01/01/2026 11:02
मंगल	01/01/2026 15:41
राहु	02/01/2026 03:37

शुक्र - केतु - मंगल - शनि	
02/01/2026 03:37	
06/01/2026 02:04	
शनि	02/01/2026 18:34
बुध	03/01/2026 07:57
केतु	03/01/2026 13:27
शुक्र	04/01/2026 05:12
सूर्य	04/01/2026 09:55
चंद्र	04/01/2026 17:48
मंगल	04/01/2026 23:18
राहु	05/01/2026 13:28
गुरु	06/01/2026 02:04

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 8 वर्ष 3 मास 21 दिन

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
26/08/2015		17/12/2023		17/12/2039		16/12/2056		17/12/2074	
17/12/2023		17/12/2039		16/12/2056		17/12/2074		16/12/2085	
	00/00/0000	चंद्र	02/03/2026	बुध	14/06/2042	शुक्र	02/10/2059	सूर्य	02/01/2076
	00/00/0000	बुध	05/07/2028	शुक्र	01/02/2045	सूर्य	17/06/2061	मंगल	20/02/2077
	26/08/2015	शुक्र	29/12/2030	सूर्य	13/09/2046	मंगल	28/04/2063	गुरु	17/05/2078
शुक्र	29/06/2017	सूर्य	05/07/2032	मंगल	17/06/2048	गुरु	04/05/2065	शनि	13/09/2079
सूर्य	01/12/2018	मंगल	02/03/2034	गुरु	13/05/2050	शनि	06/07/2067	केतु	14/02/2081
मंगल	20/06/2020	गुरु	17/12/2035	शनि	01/06/2052	केतु	02/11/2069	चंद्र	22/08/2082
गुरु	24/02/2022	शनि	21/11/2037	केतु	13/08/2054	चंद्र	27/04/2072	बुध	02/04/2084
शनि	17/12/2023	केतु	17/12/2039	चंद्र	16/12/2056	बुध	17/12/2074	शुक्र	16/12/2085

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
16/12/2085		16/12/2097		18/12/2110		17/12/2124	
16/12/2097		18/12/2110		17/12/2124		00/00/0000	
मंगल	15/03/2087	गुरु	02/06/2099	शनि	26/08/2112	केतु	26/11/2126
गुरु	18/07/2088	शनि	27/12/2100	केतु	18/06/2114	चंद्र	20/12/2128
शनि	29/12/2089	केतु	02/09/2102	चंद्र	23/05/2116	बुध	03/03/2131
केतु	19/07/2091	चंद्र	18/06/2104	बुध	12/06/2118	शुक्र	27/08/2131
चंद्र	14/03/2093	बुध	14/05/2106	शुक्र	13/08/2120		00/00/0000
बुध	17/12/2094	शुक्र	20/05/2108	सूर्य	11/12/2121		00/00/0000
शुक्र	27/10/2096	सूर्य	13/08/2109	मंगल	24/05/2123		00/00/0000
सूर्य	16/12/2097	मंगल	18/12/2110	गुरु	17/12/2124		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
26/08/2015		29/06/2017		01/12/2018		20/06/2020		24/02/2022	
29/06/2017		01/12/2018		20/06/2020		24/02/2022		17/12/2023	
	26/08/2015	सूर्य	18/08/2017	मंगल	29/01/2019	गुरु	27/08/2020	शनि	14/05/2022
सूर्य	01/10/2015	मंगल	10/10/2017	गुरु	02/04/2019	शनि	10/11/2020	केतु	08/08/2022
मंगल	28/12/2015	गुरु	08/12/2017	शनि	09/06/2019	केतु	28/01/2021	चंद्र	07/11/2022
गुरु	01/04/2016	शनि	08/02/2018	केतु	22/08/2019	चंद्र	23/04/2021	बुध	12/02/2023
शनि	13/07/2016	केतु	17/04/2018	चंद्र	08/11/2019	बुध	22/07/2021	शुक्र	26/05/2023
केतु	31/10/2016	चंद्र	27/06/2018	बुध	30/01/2020	शुक्र	25/10/2021	सूर्य	27/07/2023
चंद्र	25/02/2017	बुध	11/09/2018	शुक्र	27/04/2020	सूर्य	22/12/2021	मंगल	04/10/2023
बुध	29/06/2017	शुक्र	01/12/2018	सूर्य	20/06/2020	मंगल	24/02/2022	गुरु	17/12/2023

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
17/12/2023		02/03/2026		05/07/2028		29/12/2030		05/07/2032	
02/03/2026		05/07/2028		29/12/2030		05/07/2032		02/03/2034	
चंद्र	06/04/2024	बुध	05/07/2026	शुक्र	23/11/2028	सूर्य	20/02/2031	मंगल	06/09/2032
बुध	02/08/2024	शुक्र	15/11/2026	सूर्य	17/02/2029	मंगल	18/04/2031	गुरु	13/11/2032
शुक्र	05/12/2024	सूर्य	05/02/2027	मंगल	22/05/2029	गुरु	19/06/2031	शनि	25/01/2033
सूर्य	20/02/2025	मंगल	04/05/2027	गुरु	01/09/2029	शनि	25/08/2031	केतु	13/04/2033
मंगल	14/05/2025	गुरु	08/08/2027	शनि	19/12/2029	केतु	05/11/2031	चंद्र	05/07/2033
गुरु	12/08/2025	शनि	20/11/2027	केतु	15/04/2030	चंद्र	20/01/2032	बुध	02/10/2033
शनि	18/11/2025	केतु	09/03/2028	चंद्र	18/08/2030	बुध	10/04/2032	शुक्र	04/01/2034
केतु	02/03/2026	चंद्र	05/07/2028	बुध	29/12/2030	शुक्र	05/07/2032	सूर्य	02/03/2034

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
02/03/2034		17/12/2035		21/11/2037		17/12/2039		14/06/2042	
17/12/2035		21/11/2037		17/12/2039		14/06/2042		01/02/2045	
गुरु	14/05/2034	शनि	11/03/2036	केतु	27/02/2038	बुध	28/04/2040	शुक्र	10/11/2042
शनि	01/08/2034	केतु	10/06/2036	चंद्र	11/06/2038	शुक्र	16/09/2040	सूर्य	10/02/2043
केतु	25/10/2034	चंद्र	16/09/2036	बुध	30/09/2038	सूर्य	12/12/2040	मंगल	20/05/2043
चंद्र	23/01/2035	बुध	28/12/2036	शुक्र	25/01/2039	मंगल	16/03/2041	गुरु	05/09/2043
बुध	29/04/2035	शुक्र	16/04/2037	सूर्य	07/04/2039	गुरु	26/06/2041	शनि	31/12/2043
शुक्र	09/08/2035	सूर्य	22/06/2037	मंगल	24/06/2039	शनि	14/10/2041	केतु	03/05/2044
सूर्य	10/10/2035	मंगल	03/09/2037	गुरु	17/09/2039	केतु	08/02/2042	चंद्र	13/09/2044
मंगल	17/12/2035	गुरु	21/11/2037	शनि	17/12/2039	चंद्र	14/06/2042	बुध	01/02/2045

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु	
01/02/2045		13/09/2046		17/06/2048		13/05/2050		01/06/2052	
13/09/2046		17/06/2048		13/05/2050		01/06/2052		13/08/2054	
सूर्य	29/03/2045	मंगल	19/11/2046	गुरु	03/09/2048	शनि	12/08/2050	केतु	13/09/2052
मंगल	29/05/2045	गुरु	30/01/2047	शनि	26/11/2048	केतु	17/11/2050	चंद्र	01/01/2053
गुरु	03/08/2045	शनि	17/04/2047	केतु	23/02/2049	चंद्र	28/02/2051	बुध	29/04/2053
शनि	13/10/2045	केतु	09/07/2047	चंद्र	30/05/2049	बुध	18/06/2051	शुक्र	01/09/2053
केतु	28/12/2045	चंद्र	06/10/2047	बुध	09/09/2049	शुक्र	12/10/2051	सूर्य	16/11/2053
चंद्र	20/03/2046	बुध	08/01/2048	शुक्र	26/12/2049	सूर्य	22/12/2051	मंगल	07/02/2054
बुध	14/06/2046	शुक्र	17/04/2048	सूर्य	02/03/2050	मंगल	09/03/2052	गुरु	08/05/2054
शुक्र	13/09/2046	सूर्य	17/06/2048	मंगल	13/05/2050	गुरु	01/06/2052	शनि	13/08/2054

बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु	
13/08/2054		16/12/2056		02/10/2059		17/06/2061		28/04/2063	
16/12/2056		02/10/2059		17/06/2061		28/04/2063		04/05/2065	
चंद्र	09/12/2054	शुक्र	23/05/2057	सूर्य	30/11/2059	मंगल	26/08/2061	गुरु	19/07/2063
बुध	13/04/2055	सूर्य	28/08/2057	मंगल	03/02/2060	गुरु	10/11/2061	शनि	16/10/2063
शुक्र	24/08/2055	मंगल	12/12/2057	गुरु	13/04/2060	शनि	31/01/2062	केतु	20/01/2064
सूर्य	13/11/2055	गुरु	05/04/2058	शनि	27/06/2060	केतु	29/04/2062	चंद्र	30/04/2064
मंगल	10/02/2056	शनि	06/08/2058	केतु	16/09/2060	चंद्र	01/08/2062	बुध	16/08/2064
गुरु	16/05/2056	केतु	16/12/2058	चंद्र	11/12/2060	बुध	09/11/2062	शुक्र	09/12/2064
शनि	27/08/2056	चंद्र	06/05/2059	बुध	12/03/2061	शुक्र	22/02/2063	सूर्य	16/02/2065
केतु	16/12/2056	बुध	02/10/2059	शुक्र	17/06/2061	सूर्य	28/04/2063	मंगल	04/05/2065

शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य	
04/05/2065		06/07/2067		02/11/2069		27/04/2072		17/12/2074	
06/07/2067		02/11/2069		27/04/2072		17/12/2074		02/01/2076	
शनि	07/08/2065	केतु	24/10/2067	चंद्र	07/03/2070	बुध	15/09/2072	सूर्य	22/01/2075
केतु	18/11/2065	चंद्र	18/02/2068	बुध	18/07/2070	शुक्र	12/02/2073	मंगल	02/03/2075
चंद्र	08/03/2066	बुध	22/06/2068	शुक्र	06/12/2070	सूर्य	14/05/2073	गुरु	14/04/2075
बुध	02/07/2066	शुक्र	01/11/2068	सूर्य	02/03/2071	मंगल	22/08/2073	शनि	30/05/2075
शुक्र	02/11/2066	सूर्य	21/01/2069	मंगल	04/06/2071	गुरु	08/12/2073	केतु	18/07/2075
सूर्य	16/01/2067	मंगल	18/04/2069	गुरु	13/09/2071	शनि	03/04/2074	चंद्र	09/09/2075
मंगल	08/04/2067	गुरु	23/07/2069	शनि	01/01/2072	केतु	06/08/2074	बुध	04/11/2075
गुरु	06/07/2067	शनि	02/11/2069	केतु	27/04/2072	चंद्र	17/12/2074	शुक्र	02/01/2076

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
02/01/2076		20/02/2077		17/05/2078		13/09/2079		14/02/2081	
20/02/2077		17/05/2078		13/09/2079		14/02/2081		22/08/2082	
मंगल	14/02/2076	गुरु	12/04/2077	शनि	14/07/2078	केतु	20/11/2079	चंद्र	01/05/2081
गुरु	31/03/2076	शनि	05/06/2077	केतु	15/09/2078	चंद्र	30/01/2080	बुध	22/07/2081
शनि	20/05/2076	केतु	02/08/2077	चंद्र	21/11/2078	बुध	15/04/2080	शुक्र	16/10/2081
केतु	13/07/2076	चंद्र	03/10/2077	बुध	31/01/2079	शुक्र	05/07/2080	सूर्य	07/12/2081
चंद्र	08/09/2076	बुध	08/12/2077	शुक्र	16/04/2079	सूर्य	23/08/2080	मंगल	03/02/2082
बुध	08/11/2076	शुक्र	16/02/2078	सूर्य	01/06/2079	मंगल	16/10/2080	गुरु	06/04/2082
शुक्र	12/01/2077	सूर्य	31/03/2078	मंगल	21/07/2079	गुरु	13/12/2080	शनि	12/06/2082
सूर्य	20/02/2077	मंगल	17/05/2078	गुरु	13/09/2079	शनि	14/02/2081	केतु	22/08/2082

सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
22/08/2082		02/04/2084		16/12/2085		15/03/2087		18/07/2088	
02/04/2084		16/12/2085		15/03/2087		18/07/2088		29/12/2089	
बुध	16/11/2082	शुक्र	08/07/2084	मंगल	01/02/2086	गुरु	09/05/2087	शनि	20/09/2088
शुक्र	16/02/2083	सूर्य	05/09/2084	गुरु	24/03/2086	शनि	07/07/2087	केतु	27/11/2088
सूर्य	13/04/2083	मंगल	08/11/2084	शनि	18/05/2086	केतु	09/09/2087	चंद्र	08/02/2089
मंगल	13/06/2083	गुरु	17/01/2085	केतु	15/07/2086	चंद्र	15/11/2087	बुध	27/04/2089
गुरु	18/08/2083	शनि	02/04/2085	चंद्र	16/09/2086	बुध	26/01/2088	शुक्र	18/07/2089
शनि	28/10/2083	केतु	22/06/2085	बुध	21/11/2086	शुक्र	12/04/2088	सूर्य	06/09/2089
केतु	12/01/2084	चंद्र	16/09/2085	शुक्र	31/01/2087	सूर्य	28/05/2088	मंगल	31/10/2089
चंद्र	02/04/2084	बुध	16/12/2085	सूर्य	15/03/2087	मंगल	18/07/2088	गुरु	29/12/2089

मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
29/12/2089		19/07/2091		14/03/2093		17/12/2094		27/10/2096	
19/07/2091		14/03/2093		17/12/2094		27/10/2096		16/12/2097	
केतु	12/03/2090	चंद्र	10/10/2091	बुध	16/06/2093	शुक्र	01/04/2095	सूर्य	05/12/2096
चंद्र	29/05/2090	बुध	07/01/2092	शुक्र	24/09/2093	सूर्य	05/06/2095	मंगल	17/01/2097
बुध	21/08/2090	शुक्र	10/04/2092	सूर्य	24/11/2093	मंगल	14/08/2095	गुरु	05/03/2097
शुक्र	16/11/2090	सूर्य	06/06/2092	मंगल	29/01/2094	गुरु	29/10/2095	शनि	24/04/2097
सूर्य	09/01/2091	मंगल	07/08/2092	गुरु	11/04/2094	शनि	19/01/2096	केतु	17/06/2097
मंगल	09/03/2091	गुरु	14/10/2092	शनि	28/06/2094	केतु	16/04/2096	चंद्र	13/08/2097
गुरु	11/05/2091	शनि	26/12/2092	केतु	19/09/2094	चंद्र	19/07/2096	बुध	13/10/2097
शनि	19/07/2091	केतु	14/03/2093	चंद्र	17/12/2094	बुध	27/10/2096	शुक्र	16/12/2097

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध	
16/12/2097		02/06/2099		27/12/2100		02/09/2102		18/06/2104	
02/06/2099		27/12/2100		02/09/2102		18/06/2104		14/05/2106	
गुरु	14/02/2098	शनि	10/08/2099	केतु	16/03/2101	चंद्र	01/12/2102	बुध	28/09/2104
शनि	19/04/2098	केतु	23/10/2099	चंद्र	09/06/2101	बुध	07/03/2103	शुक्र	13/01/2105
केतु	27/06/2098	चंद्र	10/01/2100	बुध	07/09/2101	शुक्र	17/06/2103	सूर्य	20/03/2105
चंद्र	08/09/2098	बुध	04/04/2100	शुक्र	11/12/2101	सूर्य	18/08/2103	मंगल	31/05/2105
बुध	25/11/2098	शुक्र	02/07/2100	सूर्य	07/02/2102	मंगल	24/10/2103	गुरु	17/08/2105
शुक्र	16/02/2099	सूर्य	25/08/2100	मंगल	12/04/2102	गुरु	06/01/2104	शनि	09/11/2105
सूर्य	07/04/2099	मंगल	23/10/2100	गुरु	20/06/2102	शनि	25/03/2104	केतु	07/02/2106
मंगल	02/06/2099	गुरु	27/12/2100	शनि	02/09/2102	केतु	18/06/2104	चंद्र	14/05/2106

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
14/05/2106		20/05/2108		13/08/2109		18/12/2110		26/08/2112	
20/05/2108		13/08/2109		18/12/2110		26/08/2112		18/06/2114	
शुक्र	06/09/2106	सूर्य	02/07/2108	मंगल	03/10/2109	शनि	02/03/2111	केतु	19/11/2112
सूर्य	15/11/2106	मंगल	17/08/2108	गुरु	27/11/2109	केतु	21/05/2111	चंद्र	19/02/2113
मंगल	30/01/2107	गुरु	07/10/2108	शनि	26/01/2110	चंद्र	14/08/2111	बुध	26/05/2113
गुरु	22/04/2107	शनि	30/11/2108	केतु	30/03/2110	बुध	13/11/2111	शुक्र	06/09/2113
शनि	20/07/2107	केतु	28/01/2109	चंद्र	06/06/2110	शुक्र	16/02/2112	सूर्य	08/11/2113
केतु	24/10/2107	चंद्र	31/03/2109	बुध	17/08/2110	सूर्य	15/04/2112	मंगल	15/01/2114
चंद्र	02/02/2108	बुध	05/06/2109	शुक्र	01/11/2110	मंगल	18/06/2112	गुरु	30/03/2114
बुध	20/05/2108	शुक्र	13/08/2109	सूर्य	18/12/2110	गुरु	26/08/2112	शनि	18/06/2114

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
18/06/2114		23/05/2116		12/06/2118		13/08/2120		11/12/2121	
23/05/2116		12/06/2118		13/08/2120		11/12/2121		24/05/2123	
चंद्र	23/09/2114	बुध	10/09/2116	शुक्र	13/10/2118	सूर्य	28/09/2120	मंगल	04/02/2122
बुध	05/01/2115	शुक्र	04/01/2117	सूर्य	27/12/2118	मंगल	17/11/2120	गुरु	04/04/2122
शुक्र	24/04/2115	सूर्य	17/03/2117	मंगल	19/03/2119	गुरु	11/01/2121	शनि	07/06/2122
सूर्य	30/06/2115	मंगल	02/06/2117	गुरु	16/06/2119	शनि	10/03/2121	केतु	14/08/2122
मंगल	11/09/2115	गुरु	25/08/2117	शनि	20/09/2119	केतु	12/05/2121	चंद्र	26/10/2122
गुरु	29/11/2115	शनि	23/11/2117	केतु	31/12/2119	चंद्र	18/07/2121	बुध	12/01/2123
शनि	22/02/2116	केतु	28/02/2118	चंद्र	19/04/2120	बुध	27/09/2121	शुक्र	04/04/2123
केतु	23/05/2116	चंद्र	12/06/2118	बुध	13/08/2120	शुक्र	11/12/2121	सूर्य	24/05/2123

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 7 वर्ष 4 मास 19 दिन

शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
26/08/2015		14/01/2023		14/01/2027		14/09/2033		15/05/2038	
14/01/2023		14/01/2027		14/09/2033		15/05/2038		15/05/2050	
	00/00/0000	सूर्य	28/03/2023	चंद्र	05/08/2027	मंगल	22/12/2033	राहु	03/03/2040
	00/00/0000	चंद्र	27/07/2023	मंगल	25/12/2027	राहु	04/09/2034	गुरु	08/10/2041
	00/00/0000	मंगल	21/10/2023	राहु	24/12/2028	गुरु	19/04/2035	शनि	02/09/2043
	26/08/2015	राहु	27/05/2024	गुरु	14/11/2029	शनि	14/01/2036	बुध	15/05/2045
राहु	24/06/2016	गुरु	08/12/2024	शनि	04/12/2030	बुध	11/09/2036	केतु	26/01/2046
गुरु	05/04/2018	शनि	27/07/2025	बुध	14/11/2031	केतु	20/12/2036	शुक्र	26/01/2048
शनि	15/05/2020	बुध	19/02/2026	केतु	04/04/2032	शुक्र	30/09/2037	सूर्य	01/09/2048
बुध	05/04/2022	केतु	15/05/2026	शुक्र	15/05/2033	सूर्य	24/12/2037	चंद्र	02/09/2049
केतु	14/01/2023	शुक्र	14/01/2027	सूर्य	14/09/2033	चंद्र	15/05/2038	मंगल	15/05/2050

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
15/05/2050		13/01/2061		14/09/2073		13/01/2085		14/09/2089	
13/01/2061		14/09/2073		13/01/2085		14/09/2089		00/00/0000	
गुरु	17/10/2051	शनि	16/01/2063	बुध	23/04/2075	केतु	23/04/2085	शुक्र	04/12/2091
शनि	25/06/2053	बुध	01/11/2064	केतु	21/12/2075	शुक्र	01/02/2086	सूर्य	04/08/2092
बुध	28/12/2054	केतु	29/07/2065	शुक्र	10/11/2077	सूर्य	27/04/2086	चंद्र	14/09/2093
केतु	13/08/2055	शुक्र	08/09/2067	सूर्य	04/06/2078	चंद्र	16/09/2086	मंगल	25/06/2094
शुक्र	23/05/2057	सूर्य	26/04/2068	चंद्र	15/05/2079	मंगल	24/12/2086	राहु	26/08/2095
सूर्य	04/12/2057	चंद्र	17/05/2069	मंगल	12/01/2080	राहु	06/09/2087		00/00/0000
चंद्र	25/10/2058	मंगल	11/02/2070	राहु	24/09/2081	गुरु	20/04/2088		00/00/0000
मंगल	09/06/2059	राहु	06/01/2072	गुरु	30/03/2083	शनि	15/01/2089		00/00/0000
राहु	13/01/2061	गुरु	14/09/2073	शनि	13/01/2085	बुध	14/09/2089		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
26/08/2015		24/06/2016		05/04/2018		15/05/2020		05/04/2022	
24/06/2016		05/04/2018		15/05/2020		05/04/2022		14/01/2023	
	00/00/0000	गुरु	19/09/2016	शनि	05/08/2018	बुध	20/08/2020	केतु	21/04/2022
	00/00/0000	शनि	31/12/2016	बुध	22/11/2018	केतु	30/09/2020	शुक्र	08/06/2022
	00/00/0000	बुध	02/04/2017	केतु	06/01/2019	शुक्र	23/01/2021	सूर्य	22/06/2022
	26/08/2015	केतु	10/05/2017	शुक्र	14/05/2019	सूर्य	26/02/2021	चंद्र	15/07/2022
केतु	07/10/2015	शुक्र	26/08/2017	सूर्य	22/06/2019	चंद्र	25/04/2021	मंगल	01/08/2022
शुक्र	05/02/2016	सूर्य	27/09/2017	चंद्र	25/08/2019	मंगल	04/06/2021	राहु	13/09/2022
सूर्य	13/03/2016	चंद्र	20/11/2017	मंगल	09/10/2019	राहु	15/09/2021	गुरु	20/10/2022
चंद्र	13/05/2016	मंगल	28/12/2017	राहु	02/02/2020	गुरु	16/12/2021	शनि	04/12/2022
मंगल	24/06/2016	राहु	05/04/2018	गुरु	15/05/2020	शनि	05/04/2022	बुध	14/01/2023

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
14/01/2023		28/03/2023		27/07/2023		21/10/2023		27/05/2024	
28/03/2023		27/07/2023		21/10/2023		27/05/2024		08/12/2024	
सूर्य	17/01/2023	चंद्र	07/04/2023	मंगल	01/08/2023	राहु	23/11/2023	गुरु	22/06/2024
चंद्र	23/01/2023	मंगल	14/04/2023	राहु	14/08/2023	गुरु	22/12/2023	शनि	23/07/2024
मंगल	28/01/2023	राहु	02/05/2023	गुरु	26/08/2023	शनि	26/01/2024	बुध	19/08/2024
राहु	08/02/2023	गुरु	18/05/2023	शनि	08/09/2023	बुध	26/02/2024	केतु	31/08/2024
गुरु	17/02/2023	शनि	07/06/2023	बुध	20/09/2023	केतु	09/03/2024	शुक्र	02/10/2024
शनि	01/03/2023	बुध	24/06/2023	केतु	25/09/2023	शुक्र	15/04/2024	सूर्य	12/10/2024
बुध	11/03/2023	केतु	01/07/2023	शुक्र	09/10/2023	सूर्य	26/04/2024	चंद्र	28/10/2024
केतु	16/03/2023	शुक्र	21/07/2023	सूर्य	14/10/2023	चंद्र	14/05/2024	मंगल	08/11/2024
शुक्र	28/03/2023	सूर्य	27/07/2023	चंद्र	21/10/2023	मंगल	27/05/2024	राहु	08/12/2024

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
08/12/2024		27/07/2025		19/02/2026		15/05/2026		14/01/2027	
27/07/2025		19/02/2026		15/05/2026		14/01/2027		05/08/2027	
शनि	13/01/2025	बुध	25/08/2025	केतु	24/02/2026	शुक्र	25/06/2026	चंद्र	31/01/2027
बुध	15/02/2025	केतु	06/09/2025	शुक्र	10/03/2026	सूर्य	07/07/2026	मंगल	11/02/2027
केतु	01/03/2025	शुक्र	11/10/2025	सूर्य	14/03/2026	चंद्र	27/07/2026	राहु	14/03/2027
शुक्र	08/04/2025	सूर्य	21/10/2025	चंद्र	22/03/2026	मंगल	10/08/2026	गुरु	10/04/2027
सूर्य	20/04/2025	चंद्र	07/11/2025	मंगल	26/03/2026	राहु	16/09/2026	शनि	12/05/2027
चंद्र	09/05/2025	मंगल	20/11/2025	राहु	08/04/2026	गुरु	18/10/2026	बुध	10/06/2027
मंगल	22/05/2025	राहु	21/12/2025	गुरु	20/04/2026	शनि	26/11/2026	केतु	22/06/2027
राहु	26/06/2025	गुरु	17/01/2026	शनि	03/05/2026	बुध	30/12/2026	शुक्र	25/07/2027
गुरु	27/07/2025	शनि	19/02/2026	बुध	15/05/2026	केतु	14/01/2027	सूर्य	05/08/2027

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
05/08/2027		25/12/2027		24/12/2028		14/11/2029		04/12/2030	
25/12/2027		24/12/2028		14/11/2029		04/12/2030		14/11/2031	
मंगल	13/08/2027	राहु	17/02/2028	गुरु	05/02/2029	शनि	14/01/2030	बुध	22/01/2031
राहु	03/09/2027	गुरु	06/04/2028	शनि	29/03/2029	बुध	09/03/2030	केतु	11/02/2031
गुरु	22/09/2027	शनि	03/06/2028	बुध	14/05/2029	केतु	01/04/2030	शुक्र	10/04/2031
शनि	15/10/2027	बुध	25/07/2028	केतु	02/06/2029	शुक्र	04/06/2030	सूर्य	27/04/2031
बुध	04/11/2027	केतु	15/08/2028	शुक्र	26/07/2029	सूर्य	23/06/2030	चंद्र	26/05/2031
केतु	12/11/2027	शुक्र	15/10/2028	सूर्य	11/08/2029	चंद्र	25/07/2030	मंगल	15/06/2031
शुक्र	06/12/2027	सूर्य	02/11/2028	चंद्र	07/09/2029	मंगल	17/08/2030	राहु	05/08/2031
सूर्य	13/12/2027	चंद्र	03/12/2028	मंगल	26/09/2029	राहु	14/10/2030	गुरु	20/09/2031
चंद्र	25/12/2027	मंगल	24/12/2028	राहु	14/11/2029	गुरु	04/12/2030	शनि	14/11/2031

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
14/11/2031		04/04/2032		15/05/2033		14/09/2033		22/12/2033	
04/04/2032		15/05/2033		14/09/2033		22/12/2033		04/09/2034	
केतु	22/11/2031	शुक्र	11/06/2032	सूर्य	21/05/2033	मंगल	19/09/2033	राहु	29/01/2034
शुक्र	16/12/2031	सूर्य	01/07/2032	चंद्र	31/05/2033	राहु	04/10/2033	गुरु	05/03/2034
सूर्य	23/12/2031	चंद्र	04/08/2032	मंगल	07/06/2033	गुरु	18/10/2033	शनि	14/04/2034
चंद्र	04/01/2032	मंगल	28/08/2032	राहु	26/06/2033	शनि	02/11/2033	बुध	20/05/2034
मंगल	12/01/2032	राहु	27/10/2032	गुरु	12/07/2033	बुध	16/11/2033	केतु	04/06/2034
राहु	03/02/2032	गुरु	21/12/2032	शनि	31/07/2033	केतु	22/11/2033	शुक्र	17/07/2034
गुरु	21/02/2032	शनि	23/02/2033	बुध	17/08/2033	शुक्र	09/12/2033	सूर्य	30/07/2034
शनि	15/03/2032	बुध	21/04/2033	केतु	24/08/2033	सूर्य	14/12/2033	चंद्र	20/08/2034
बुध	04/04/2032	केतु	15/05/2033	शुक्र	14/09/2033	चंद्र	22/12/2033	मंगल	04/09/2034

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
04/09/2034		19/04/2035		14/01/2036		11/09/2036		20/12/2036	
19/04/2035		14/01/2036		11/09/2036		20/12/2036		30/09/2037	
गुरु	04/10/2034	शनि	01/06/2035	बुध	17/02/2036	केतु	17/09/2036	शुक्र	05/02/2037
शनि	09/11/2034	बुध	09/07/2035	केतु	02/03/2036	शुक्र	04/10/2036	सूर्य	19/02/2037
बुध	11/12/2034	केतु	25/07/2035	शुक्र	11/04/2036	सूर्य	09/10/2036	चंद्र	15/03/2037
केतु	25/12/2034	शुक्र	08/09/2035	सूर्य	24/04/2036	चंद्र	17/10/2036	मंगल	01/04/2037
शुक्र	31/01/2035	सूर्य	21/09/2035	चंद्र	14/05/2036	मंगल	23/10/2036	राहु	13/05/2037
सूर्य	12/02/2035	चंद्र	14/10/2035	मंगल	28/05/2036	राहु	07/11/2036	गुरु	20/06/2037
चंद्र	03/03/2035	मंगल	29/10/2035	राहु	03/07/2036	गुरु	20/11/2036	शनि	04/08/2037
मंगल	16/03/2035	राहु	09/12/2035	गुरु	04/08/2036	शनि	06/12/2036	बुध	13/09/2037
राहु	19/04/2035	गुरु	14/01/2036	शनि	11/09/2036	बुध	20/12/2036	केतु	30/09/2037

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
30/09/2037		24/12/2037		15/05/2038		03/03/2040		08/10/2041	
24/12/2037		15/05/2038		03/03/2040		08/10/2041		02/09/2043	
सूर्य	04/10/2037	चंद्र	05/01/2038	राहु	22/08/2038	गुरु	20/05/2040	शनि	26/01/2042
चंद्र	11/10/2037	मंगल	13/01/2038	गुरु	17/11/2038	शनि	20/08/2040	बुध	04/05/2042
मंगल	16/10/2037	राहु	04/02/2038	शनि	02/03/2039	बुध	11/11/2040	केतु	14/06/2042
राहु	29/10/2037	गुरु	23/02/2038	बुध	03/06/2039	केतु	15/12/2040	शुक्र	07/10/2042
गुरु	09/11/2037	शनि	17/03/2038	केतु	11/07/2039	शुक्र	22/03/2041	सूर्य	11/11/2042
शनि	23/11/2037	बुध	06/04/2038	शुक्र	29/10/2039	सूर्य	21/04/2041	चंद्र	08/01/2043
बुध	05/12/2037	केतु	14/04/2038	सूर्य	30/11/2039	चंद्र	08/06/2041	मंगल	17/02/2043
केतु	10/12/2037	शुक्र	08/05/2038	चंद्र	24/01/2040	मंगल	12/07/2041	राहु	01/06/2043
शुक्र	24/12/2037	सूर्य	15/05/2038	मंगल	03/03/2040	राहु	08/10/2041	गुरु	02/09/2043

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
02/09/2043		15/05/2045		26/01/2046		26/01/2048		01/09/2048	
15/05/2045		26/01/2046		26/01/2048		01/09/2048		02/09/2049	
बुध	29/11/2043	केतु	30/05/2045	शुक्र	27/05/2046	सूर्य	06/02/2048	चंद्र	02/10/2048
केतु	04/01/2044	शुक्र	11/07/2045	सूर्य	03/07/2046	चंद्र	24/02/2048	मंगल	23/10/2048
शुक्र	17/04/2044	सूर्य	24/07/2045	चंद्र	02/09/2046	मंगल	08/03/2048	राहु	17/12/2048
सूर्य	18/05/2044	चंद्र	15/08/2045	मंगल	14/10/2046	राहु	10/04/2048	गुरु	03/02/2049
चंद्र	08/07/2044	मंगल	29/08/2045	राहु	01/02/2047	गुरु	09/05/2048	शनि	02/04/2049
मंगल	14/08/2044	राहु	07/10/2045	गुरु	09/05/2047	शनि	13/06/2048	बुध	24/05/2049
राहु	15/11/2044	गुरु	10/11/2045	शनि	02/09/2047	बुध	14/07/2048	केतु	14/06/2049
गुरु	06/02/2045	शनि	20/12/2045	बुध	15/12/2047	केतु	27/07/2048	शुक्र	14/08/2049
शनि	15/05/2045	बुध	26/01/2046	केतु	26/01/2048	शुक्र	01/09/2048	सूर्य	02/09/2049

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
02/09/2049		15/05/2050		17/10/2051		25/06/2053		28/12/2054	
15/05/2050		17/10/2051		25/06/2053		28/12/2054		13/08/2055	
मंगल	16/09/2049	गुरु	23/07/2050	शनि	22/01/2052	बुध	11/09/2053	केतु	11/01/2055
राहु	25/10/2049	शनि	14/10/2050	बुध	19/04/2052	केतु	13/10/2053	शुक्र	18/02/2055
गुरु	28/11/2049	बुध	26/12/2050	केतु	25/05/2052	शुक्र	13/01/2054	सूर्य	01/03/2055
शनि	07/01/2050	केतु	26/01/2051	शुक्र	05/09/2052	सूर्य	09/02/2054	चंद्र	20/03/2055
बुध	13/02/2050	शुक्र	22/04/2051	सूर्य	05/10/2052	चंद्र	27/03/2054	मंगल	02/04/2055
केतु	27/02/2050	सूर्य	18/05/2051	चंद्र	26/11/2052	मंगल	29/04/2054	राहु	06/05/2055
शुक्र	11/04/2050	चंद्र	30/06/2051	मंगल	01/01/2053	राहु	20/07/2054	गुरु	06/06/2055
सूर्य	24/04/2050	मंगल	31/07/2051	राहु	03/04/2053	गुरु	02/10/2054	शनि	12/07/2055
चंद्र	15/05/2050	राहु	17/10/2051	गुरु	25/06/2053	शनि	28/12/2054	बुध	13/08/2055

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
13/08/2055		23/05/2057		04/12/2057		25/10/2058		09/06/2059	
23/05/2057		04/12/2057		25/10/2058		09/06/2059		13/01/2061	
शुक्र	29/11/2055	सूर्य	02/06/2057	चंद्र	31/12/2057	मंगल	07/11/2058	राहु	04/09/2059
सूर्य	31/12/2055	चंद्र	18/06/2057	मंगल	19/01/2058	राहु	11/12/2058	गुरु	21/11/2059
चंद्र	24/02/2056	मंगल	29/06/2057	राहु	09/03/2058	गुरु	10/01/2059	शनि	22/02/2060
मंगल	01/04/2056	राहु	29/07/2057	गुरु	21/04/2058	शनि	15/02/2059	बुध	15/05/2060
राहु	08/07/2056	गुरु	24/08/2057	शनि	11/06/2058	बुध	19/03/2059	केतु	18/06/2060
गुरु	02/10/2056	शनि	23/09/2057	बुध	27/07/2058	केतु	02/04/2059	शुक्र	23/09/2060
शनि	13/01/2057	बुध	21/10/2057	केतु	15/08/2058	शुक्र	09/05/2059	सूर्य	22/10/2060
बुध	15/04/2057	केतु	01/11/2057	शुक्र	08/10/2058	सूर्य	21/05/2059	चंद्र	10/12/2060
केतु	23/05/2057	शुक्र	04/12/2057	सूर्य	25/10/2058	चंद्र	09/06/2059	मंगल	13/01/2061

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
13/01/2061		16/01/2063		01/11/2064		29/07/2065		08/09/2067	
16/01/2063		01/11/2064		29/07/2065		08/09/2067		26/04/2068	
शनि	09/05/2061	बुध	19/04/2063	केतु	17/11/2064	शुक्र	05/12/2065	सूर्य	20/09/2067
बुध	21/08/2061	केतु	27/05/2063	शुक्र	01/01/2065	सूर्य	12/01/2066	चंद्र	09/10/2067
केतु	03/10/2061	शुक्र	13/09/2063	सूर्य	14/01/2065	चंद्र	17/03/2066	मंगल	22/10/2067
शुक्र	02/02/2062	सूर्य	16/10/2063	चंद्र	06/02/2065	मंगल	01/05/2066	राहु	26/11/2067
सूर्य	10/03/2062	चंद्र	09/12/2063	मंगल	22/02/2065	राहु	25/08/2066	गुरु	27/12/2067
चंद्र	10/05/2062	मंगल	17/01/2064	राहु	03/04/2065	गुरु	06/12/2066	शनि	02/02/2068
मंगल	22/06/2062	राहु	24/04/2064	गुरु	09/05/2065	शनि	07/04/2067	बुध	05/03/2068
राहु	10/10/2062	गुरु	20/07/2064	शनि	21/06/2065	बुध	25/07/2067	केतु	19/03/2068
गुरु	16/01/2063	शनि	01/11/2064	बुध	29/07/2065	केतु	08/09/2067	शुक्र	26/04/2068

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
26/04/2068		17/05/2069		11/02/2070		06/01/2072		14/09/2073	
17/05/2069		11/02/2070		06/01/2072		14/09/2073		23/04/2075	
चंद्र	29/05/2068	मंगल	02/06/2069	राहु	26/05/2070	गुरु	28/03/2072	बुध	06/12/2073
मंगल	20/06/2068	राहु	12/07/2069	गुरु	26/08/2070	शनि	04/07/2072	केतु	09/01/2074
राहु	17/08/2068	गुरु	17/08/2069	शनि	14/12/2070	बुध	29/09/2072	शुक्र	17/04/2074
गुरु	07/10/2068	शनि	29/09/2069	बुध	23/03/2071	केतु	04/11/2072	सूर्य	16/05/2074
शनि	07/12/2068	बुध	06/11/2069	केतु	02/05/2071	शुक्र	15/02/2073	चंद्र	04/07/2074
बुध	31/01/2069	केतु	22/11/2069	शुक्र	26/08/2071	सूर्य	18/03/2073	मंगल	07/08/2074
केतु	22/02/2069	शुक्र	06/01/2070	सूर्य	30/09/2071	चंद्र	08/05/2073	राहु	03/11/2074
शुक्र	28/04/2069	सूर्य	19/01/2070	चंद्र	26/11/2071	मंगल	13/06/2073	गुरु	20/01/2075
सूर्य	17/05/2069	चंद्र	11/02/2070	मंगल	06/01/2072	राहु	14/09/2073	शनि	23/04/2075

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
23/04/2075		21/12/2075		10/11/2077		04/06/2078		15/05/2079	
21/12/2075		10/11/2077		04/06/2078		15/05/2079		12/01/2080	
केतु	07/05/2075	शुक्र	14/04/2076	सूर्य	20/11/2077	चंद्र	03/07/2078	मंगल	30/05/2079
शुक्र	16/06/2075	सूर्य	18/05/2076	चंद्र	07/12/2077	मंगल	23/07/2078	राहु	05/07/2079
सूर्य	29/06/2075	चंद्र	15/07/2076	मंगल	19/12/2077	राहु	13/09/2078	गुरु	06/08/2079
चंद्र	19/07/2075	मंगल	24/08/2076	राहु	19/01/2078	गुरु	29/10/2078	शनि	13/09/2079
मंगल	02/08/2075	राहु	05/12/2076	गुरु	16/02/2078	शनि	23/12/2078	बुध	17/10/2079
राहु	07/09/2075	गुरु	07/03/2077	शनि	21/03/2078	बुध	10/02/2079	केतु	31/10/2079
गुरु	09/10/2075	शनि	25/06/2077	बुध	19/04/2078	केतु	02/03/2079	शुक्र	11/12/2079
शनि	16/11/2075	बुध	30/09/2077	केतु	01/05/2078	शुक्र	28/04/2079	सूर्य	23/12/2079
बुध	21/12/2075	केतु	10/11/2077	शुक्र	04/06/2078	सूर्य	15/05/2079	चंद्र	12/01/2080

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
12/01/2080		24/09/2081		30/03/2083		13/01/2085		23/04/2085	
24/09/2081		30/03/2083		13/01/2085		23/04/2085		01/02/2086	
राहु	14/04/2080	गुरु	06/12/2081	शनि	12/07/2083	केतु	19/01/2085	शुक्र	09/06/2085
गुरु	06/07/2080	शनि	04/03/2082	बुध	12/10/2083	शुक्र	05/02/2085	सूर्य	23/06/2085
शनि	12/10/2080	बुध	21/05/2082	केतु	20/11/2083	सूर्य	10/02/2085	चंद्र	17/07/2085
बुध	08/01/2081	केतु	22/06/2082	शुक्र	08/03/2084	चंद्र	18/02/2085	मंगल	02/08/2085
केतु	13/02/2081	शुक्र	22/09/2082	सूर्य	10/04/2084	मंगल	24/02/2085	राहु	14/09/2085
शुक्र	28/05/2081	सूर्य	20/10/2082	चंद्र	03/06/2084	राहु	11/03/2085	गुरु	22/10/2085
सूर्य	28/06/2081	चंद्र	05/12/2082	मंगल	11/07/2084	गुरु	24/03/2085	शनि	06/12/2085
चंद्र	19/08/2081	मंगल	06/01/2083	राहु	18/10/2084	शनि	09/04/2085	बुध	15/01/2086
मंगल	24/09/2081	राहु	30/03/2083	गुरु	13/01/2085	बुध	23/04/2085	केतु	01/02/2086

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
01/02/2086		27/04/2086		16/09/2086		24/12/2086		06/09/2087	
27/04/2086		16/09/2086		24/12/2086		06/09/2087		20/04/2088	
सूर्य	05/02/2086	चंद्र	09/05/2086	मंगल	22/09/2086	राहु	01/02/2087	गुरु	06/10/2087
चंद्र	12/02/2086	मंगल	17/05/2086	राहु	07/10/2086	गुरु	07/03/2087	शनि	11/11/2087
मंगल	17/02/2086	राहु	07/06/2086	गुरु	20/10/2086	शनि	16/04/2087	बुध	14/12/2087
राहु	02/03/2086	गुरु	26/06/2086	शनि	05/11/2086	बुध	23/05/2087	केतु	27/12/2087
गुरु	13/03/2086	शनि	19/07/2086	बुध	19/11/2086	केतु	06/06/2087	शुक्र	03/02/2088
शनि	27/03/2086	बुध	08/08/2086	केतु	25/11/2086	शुक्र	19/07/2087	सूर्य	14/02/2088
बुध	08/04/2086	केतु	16/08/2086	शुक्र	11/12/2086	सूर्य	01/08/2087	चंद्र	04/03/2088
केतु	13/04/2086	शुक्र	09/09/2086	सूर्य	16/12/2086	चंद्र	22/08/2087	मंगल	17/03/2088
शुक्र	27/04/2086	सूर्य	16/09/2086	चंद्र	24/12/2086	मंगल	06/09/2087	राहु	20/04/2088

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 8 वर्ष 6 मास 4 दिन

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
26/08/2015		29/02/2024		01/03/2043		01/03/2055		29/02/2076	
29/02/2024		01/03/2043		01/03/2055		29/02/2076		01/03/2082	
	26/08/2015	गुरु	04/07/2027	राहु	30/06/2044	शुक्र	01/04/2059	सूर्य	30/06/2076
गुरु	06/11/2016	राहु	13/08/2029	शुक्र	30/10/2046	सूर्य	31/05/2060	चंद्र	30/04/2077
राहु	16/12/2017	शुक्र	24/04/2033	सूर्य	01/07/2047	चंद्र	01/05/2063	मंगल	10/10/2077
शुक्र	27/11/2019	सूर्य	14/05/2034	चंद्र	01/03/2049	मंगल	19/11/2064	बुध	20/09/2078
सूर्य	17/06/2020	चंद्र	02/01/2037	मंगल	19/01/2050	बुध	10/03/2068	शनि	11/04/2079
चंद्र	06/11/2021	मंगल	31/05/2038	बुध	10/12/2051	शनि	19/02/2070	गुरु	30/04/2080
मंगल	03/08/2022	बुध	28/05/2041	शनि	19/01/2053	गुरु	30/10/2073	राहु	30/12/2080
बुध	29/02/2024	शनि	01/03/2043	गुरु	01/03/2055	राहु	29/02/2076	शुक्र	01/03/2082

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष	
01/03/2082		01/03/2097		02/03/2105		02/03/2122	
01/03/2097		02/03/2105		02/03/2122		00/00/0000	
चंद्र	31/03/2084	मंगल	03/10/2097	बुध	04/11/2107	शनि	03/02/2123
मंगल	11/05/2085	बुध	06/01/2099	शनि	01/06/2109	गुरु	27/08/2123
बुध	20/09/2087	शनि	04/10/2099	गुरु	28/05/2112		00/00/0000
शनि	08/02/2089	गुरु	02/03/2101	राहु	18/04/2114		00/00/0000
गुरु	30/09/2091	राहु	20/01/2102	शुक्र	08/08/2117		00/00/0000
राहु	31/05/2093	शुक्र	11/08/2103	सूर्य	18/07/2118		00/00/0000
शुक्र	30/04/2096	सूर्य	21/01/2104	चंद्र	27/11/2120		00/00/0000
सूर्य	01/03/2097	चंद्र	02/03/2105	मंगल	02/03/2122		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
26/08/2015		06/11/2016		16/12/2017		27/11/2019		17/06/2020	
06/11/2016		16/12/2017		27/11/2019		17/06/2020		06/11/2021	
	00/00/0000	राहु	21/12/2016	शुक्र	04/05/2018	सूर्य	08/12/2019	चंद्र	26/08/2020
	26/08/2015	शुक्र	10/03/2017	सूर्य	12/06/2018	चंद्र	05/01/2020	मंगल	03/10/2020
शुक्र	08/12/2015	सूर्य	01/04/2017	चंद्र	19/09/2018	मंगल	20/01/2020	बुध	21/12/2020
सूर्य	13/01/2016	चंद्र	28/05/2017	मंगल	10/11/2018	बुध	21/02/2020	शनि	06/02/2021
चंद्र	11/04/2016	मंगल	27/06/2017	बुध	02/03/2019	शनि	11/03/2020	गुरु	07/05/2021
मंगल	29/05/2016	बुध	29/08/2017	शनि	07/05/2019	गुरु	16/04/2020	राहु	02/07/2021
बुध	07/09/2016	शनि	06/10/2017	गुरु	09/09/2019	राहु	08/05/2020	शुक्र	09/10/2021
शनि	06/11/2016	गुरु	16/12/2017	राहु	27/11/2019	शुक्र	17/06/2020	सूर्य	06/11/2021

शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र	
06/11/2021		03/08/2022		29/02/2024		04/07/2027		13/08/2029	
03/08/2022		29/02/2024		04/07/2027		13/08/2029		24/04/2033	
मंगल	26/11/2021	बुध	02/11/2022	गुरु	01/10/2024	राहु	28/09/2027	शुक्र	03/05/2030
बुध	07/01/2022	शनि	25/12/2022	राहु	14/02/2025	शुक्र	25/02/2028	सूर्य	17/07/2030
शनि	02/02/2022	गुरु	05/04/2023	शुक्र	09/10/2025	सूर्य	08/04/2028	चंद्र	20/01/2031
गुरु	21/03/2022	राहु	08/06/2023	सूर्य	16/12/2025	चंद्र	24/07/2028	मंगल	30/04/2031
राहु	20/04/2022	शुक्र	28/09/2023	चंद्र	04/06/2026	मंगल	19/09/2028	बुध	28/11/2031
शुक्र	12/06/2022	सूर्य	30/10/2023	मंगल	02/09/2026	बुध	18/01/2029	शनि	01/04/2032
सूर्य	27/06/2022	चंद्र	18/01/2024	बुध	13/03/2027	शनि	31/03/2029	गुरु	25/11/2032
चंद्र	03/08/2022	मंगल	29/02/2024	शनि	04/07/2027	गुरु	13/08/2029	राहु	24/04/2033

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि	
24/04/2033		14/05/2034		02/01/2037		31/05/2038		28/05/2041	
14/05/2034		02/01/2037		31/05/2038		28/05/2041		01/03/2043	
सूर्य	15/05/2033	चंद्र	25/09/2034	मंगल	09/02/2037	बुध	19/11/2038	शनि	26/07/2041
चंद्र	08/07/2033	मंगल	06/12/2034	बुध	01/05/2037	शनि	28/02/2039	गुरु	16/11/2041
मंगल	05/08/2033	बुध	06/05/2035	शनि	18/06/2037	गुरु	08/09/2039	राहु	26/01/2042
बुध	05/10/2033	शनि	03/08/2035	गुरु	16/09/2037	राहु	08/01/2040	शुक्र	31/05/2042
शनि	10/11/2033	गुरु	20/01/2036	राहु	12/11/2037	शुक्र	07/08/2040	सूर्य	06/07/2042
गुरु	16/01/2034	राहु	06/05/2036	शुक्र	20/02/2038	सूर्य	07/10/2040	चंद्र	03/10/2042
राहु	28/02/2034	शुक्र	10/11/2036	सूर्य	21/03/2038	चंद्र	08/03/2041	मंगल	20/11/2042
शुक्र	14/05/2034	सूर्य	02/01/2037	चंद्र	31/05/2038	मंगल	28/05/2041	बुध	01/03/2043

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
01/03/2043		30/06/2044		30/10/2046		01/07/2047		01/03/2049	
30/06/2044		30/10/2046		01/07/2047		01/03/2049		19/01/2050	
राहु	24/04/2043	शुक्र	13/12/2044	सूर्य	13/11/2046	चंद्र	23/09/2047	मंगल	25/03/2049
शुक्र	28/07/2043	सूर्य	29/01/2045	चंद्र	17/12/2046	मंगल	07/11/2047	बुध	15/05/2049
सूर्य	24/08/2043	चंद्र	28/05/2045	मंगल	04/01/2047	बुध	11/02/2048	शनि	14/06/2049
चंद्र	31/10/2043	मंगल	30/07/2045	बुध	11/02/2047	शनि	08/04/2048	गुरु	10/08/2049
मंगल	06/12/2043	बुध	11/12/2045	शनि	06/03/2047	गुरु	24/07/2048	राहु	15/09/2049
बुध	20/02/2044	शनि	28/02/2046	गुरु	17/04/2047	राहु	29/09/2048	शुक्र	17/11/2049
शनि	05/04/2044	गुरु	28/07/2046	राहु	14/05/2047	शुक्र	26/01/2049	सूर्य	05/12/2049
गुरु	30/06/2044	राहु	30/10/2046	शुक्र	01/07/2047	सूर्य	01/03/2049	चंद्र	19/01/2050

राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
19/01/2050		10/12/2051		19/01/2053		01/03/2055		01/04/2059	
10/12/2051		19/01/2053		01/03/2055		01/04/2059		31/05/2060	
बुध	08/05/2050	शनि	17/01/2052	गुरु	04/06/2053	शुक्र	16/12/2055	सूर्य	24/04/2059
शनि	11/07/2050	गुरु	28/03/2052	राहु	28/08/2053	सूर्य	08/03/2056	चंद्र	22/06/2059
गुरु	09/11/2050	राहु	12/05/2052	शुक्र	25/01/2054	चंद्र	01/10/2056	मंगल	24/07/2059
राहु	25/01/2051	शुक्र	30/07/2052	सूर्य	09/03/2054	मंगल	20/01/2057	बुध	29/09/2059
शुक्र	08/06/2051	सूर्य	22/08/2052	चंद्र	24/06/2054	बुध	11/09/2057	शनि	07/11/2059
सूर्य	16/07/2051	चंद्र	17/10/2052	मंगल	20/08/2054	शनि	27/01/2058	गुरु	21/01/2060
चंद्र	20/10/2051	मंगल	16/11/2052	बुध	20/12/2054	गुरु	17/10/2058	राहु	09/03/2060
मंगल	10/12/2051	बुध	19/01/2053	शनि	01/03/2055	राहु	01/04/2059	शुक्र	31/05/2060

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु	
31/05/2060		01/05/2063		19/11/2064		10/03/2068		19/02/2070	
01/05/2063		19/11/2064		10/03/2068		19/02/2070		30/10/2073	
चंद्र	26/10/2060	मंगल	12/06/2063	बुध	28/05/2065	शनि	15/05/2068	गुरु	14/10/2070
मंगल	13/01/2061	बुध	09/09/2063	शनि	17/09/2065	गुरु	17/09/2068	राहु	13/03/2071
बुध	29/06/2061	शनि	01/11/2063	गुरु	17/04/2066	राहु	05/12/2068	शुक्र	30/11/2071
शनि	06/10/2061	गुरु	09/02/2064	राहु	30/08/2066	शुक्र	22/04/2069	सूर्य	13/02/2072
गुरु	11/04/2062	राहु	12/04/2064	शुक्र	21/04/2067	सूर्य	01/06/2069	चंद्र	19/08/2072
राहु	08/08/2062	शुक्र	01/08/2064	सूर्य	27/06/2067	चंद्र	07/09/2069	मंगल	27/11/2072
शुक्र	03/03/2063	सूर्य	01/09/2064	चंद्र	12/12/2067	मंगल	30/10/2069	बुध	27/06/2073
सूर्य	01/05/2063	चंद्र	19/11/2064	मंगल	10/03/2068	बुध	19/02/2070	शनि	30/10/2073

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध	
30/10/2073		29/02/2076		30/06/2076		30/04/2077		10/10/2077	
29/02/2076		30/06/2076		30/04/2077		10/10/2077		20/09/2078	
राहु	02/02/2074	सूर्य	07/03/2076	चंद्र	11/08/2076	मंगल	12/05/2077	बुध	03/12/2077
शुक्र	17/07/2074	चंद्र	24/03/2076	मंगल	03/09/2076	बुध	07/06/2077	शनि	04/01/2078
सूर्य	03/09/2074	मंगल	02/04/2076	बुध	21/10/2076	शनि	22/06/2077	गुरु	06/03/2078
चंद्र	30/12/2074	बुध	21/04/2076	शनि	18/11/2076	गुरु	21/07/2077	राहु	13/04/2078
मंगल	03/03/2075	शनि	02/05/2076	गुरु	11/01/2077	राहु	08/08/2077	शुक्र	19/06/2078
बुध	15/07/2075	गुरु	24/05/2076	राहु	13/02/2077	शुक्र	08/09/2077	सूर्य	08/07/2078
शनि	02/10/2075	राहु	06/06/2076	शुक्र	14/04/2077	सूर्य	17/09/2077	चंद्र	25/08/2078
गुरु	29/02/2076	शुक्र	30/06/2076	सूर्य	30/04/2077	चंद्र	10/10/2077	मंगल	20/09/2078

सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
20/09/2078		11/04/2079		30/04/2080		30/12/2080		01/03/2082	
11/04/2079		30/04/2080		30/12/2080		01/03/2082		31/03/2084	
शनि	09/10/2078	गुरु	17/06/2079	राहु	27/05/2080	शुक्र	23/03/2081	चंद्र	15/06/2082
गुरु	13/11/2078	राहु	30/07/2079	शुक्र	14/07/2080	सूर्य	15/04/2081	मंगल	10/08/2082
राहु	06/12/2078	शुक्र	13/10/2079	सूर्य	27/07/2080	चंद्र	13/06/2081	बुध	08/12/2082
शुक्र	14/01/2079	सूर्य	04/11/2079	चंद्र	30/08/2080	मंगल	15/07/2081	शनि	16/02/2083
सूर्य	26/01/2079	चंद्र	27/12/2079	मंगल	17/09/2080	बुध	20/09/2081	गुरु	30/06/2083
चंद्र	23/02/2079	मंगल	25/01/2080	बुध	25/10/2080	शनि	30/10/2081	राहु	23/09/2083
मंगल	10/03/2079	बुध	26/03/2080	शनि	17/11/2080	गुरु	12/01/2082	शुक्र	18/02/2084
बुध	11/04/2079	शनि	30/04/2080	गुरु	30/12/2080	राहु	01/03/2082	सूर्य	31/03/2084

चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु	
31/03/2084		11/05/2085		20/09/2087		08/02/2089		30/09/2091	
11/05/2085		20/09/2087		08/02/2089		30/09/2091		31/05/2093	
मंगल	30/04/2084	बुध	23/09/2085	शनि	06/11/2087	गुरु	28/07/2089	राहु	07/12/2091
बुध	03/07/2084	शनि	12/12/2085	गुरु	03/02/2088	राहु	12/11/2089	शुक्र	03/04/2092
शनि	09/08/2084	गुरु	13/05/2086	राहु	31/03/2088	शुक्र	18/05/2090	सूर्य	07/05/2092
गुरु	20/10/2084	राहु	17/08/2086	शुक्र	07/07/2088	सूर्य	11/07/2090	चंद्र	31/07/2092
राहु	04/12/2084	शुक्र	31/01/2087	सूर्य	04/08/2088	चंद्र	22/11/2090	मंगल	14/09/2092
शुक्र	21/02/2085	सूर्य	20/03/2087	चंद्र	14/10/2088	मंगल	01/02/2091	बुध	18/12/2092
सूर्य	15/03/2085	चंद्र	18/07/2087	मंगल	20/11/2088	बुध	03/07/2091	शनि	13/02/2093
चंद्र	11/05/2085	मंगल	20/09/2087	बुध	08/02/2089	शनि	30/09/2091	गुरु	31/05/2093

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि	
31/05/2093		30/04/2096		01/03/2097		03/10/2097		06/01/2099	
30/04/2096		01/03/2097		03/10/2097		06/01/2099		04/10/2099	
शुक्र	24/12/2093	सूर्य	17/05/2096	मंगल	17/03/2097	बुध	14/12/2097	शनि	31/01/2099
सूर्य	21/02/2094	चंद्र	28/06/2096	बुध	20/04/2097	शनि	26/01/2098	गुरु	20/03/2099
चंद्र	19/07/2094	मंगल	21/07/2096	शनि	10/05/2097	गुरु	17/04/2098	राहु	19/04/2099
मंगल	06/10/2094	बुध	07/09/2096	गुरु	17/06/2097	राहु	07/06/2098	शुक्र	10/06/2099
बुध	23/03/2095	शनि	05/10/2096	राहु	11/07/2097	शुक्र	04/09/2098	सूर्य	25/06/2099
शनि	29/06/2095	गुरु	28/11/2096	शुक्र	22/08/2097	सूर्य	30/09/2098	चंद्र	02/08/2099
गुरु	03/01/2096	राहु	31/12/2096	सूर्य	03/09/2097	चंद्र	03/12/2098	मंगल	22/08/2099
राहु	30/04/2096	शुक्र	01/03/2097	चंद्र	03/10/2097	मंगल	06/01/2099	बुध	04/10/2099

मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
04/10/2099		02/03/2101		20/01/2102		11/08/2103		21/01/2104	
02/03/2101		20/01/2102		11/08/2103		21/01/2104		02/03/2105	
गुरु	02/01/2100	राहु	07/04/2101	शुक्र	11/05/2102	सूर्य	20/08/2103	चंद्र	17/03/2104
राहु	28/02/2100	शुक्र	09/06/2101	सूर्य	11/06/2102	चंद्र	12/09/2103	मंगल	16/04/2104
शुक्र	08/06/2100	सूर्य	27/06/2101	चंद्र	29/08/2102	मंगल	24/09/2103	बुध	19/06/2104
सूर्य	07/07/2100	चंद्र	11/08/2101	मंगल	10/10/2102	बुध	20/10/2103	शनि	27/07/2104
चंद्र	16/09/2100	मंगल	04/09/2101	बुध	08/01/2103	शनि	04/11/2103	गुरु	06/10/2104
मंगल	24/10/2100	बुध	25/10/2101	शनि	01/03/2103	गुरु	02/12/2103	राहु	20/11/2104
बुध	13/01/2101	शनि	24/11/2101	गुरु	09/06/2103	राहु	20/12/2103	शुक्र	07/02/2105
शनि	02/03/2101	गुरु	20/01/2102	राहु	11/08/2103	शुक्र	21/01/2104	सूर्य	02/03/2105

बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र	
02/03/2105		04/11/2107		01/06/2109		28/05/2112		18/04/2114	
04/11/2107		01/06/2109		28/05/2112		18/04/2114		08/08/2117	
बुध	02/08/2105	शनि	27/12/2107	गुरु	10/12/2109	राहु	13/08/2112	शुक्र	09/12/2114
शनि	01/11/2105	गुरु	06/04/2108	राहु	10/04/2110	शुक्र	25/12/2112	सूर्य	14/02/2115
गुरु	22/04/2106	राहु	09/06/2108	शुक्र	09/11/2110	सूर्य	01/02/2113	चंद्र	01/08/2115
राहु	08/08/2106	शुक्र	29/09/2108	सूर्य	09/01/2111	चंद्र	08/05/2113	मंगल	29/10/2115
शुक्र	15/02/2107	सूर्य	31/10/2108	चंद्र	09/06/2111	मंगल	28/06/2113	बुध	06/05/2116
सूर्य	10/04/2107	चंद्र	19/01/2109	मंगल	29/08/2111	बुध	15/10/2113	शनि	26/08/2116
चंद्र	24/08/2107	मंगल	02/03/2109	बुध	17/02/2112	शनि	18/12/2113	गुरु	26/03/2117
मंगल	04/11/2107	बुध	01/06/2109	शनि	28/05/2112	गुरु	18/04/2114	राहु	08/08/2117

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 3 वर्ष 10 मास 16 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
26/08/2015		12/07/2019		12/07/2027		11/07/2028		12/07/2030	
12/07/2019		12/07/2027		11/07/2028		12/07/2030		12/07/2033	
	00/00/0000	संक	22/04/2021	मंग	22/07/2027	पिंग	21/08/2028	धांय	11/10/2030
	00/00/0000	मंग	12/07/2021	पिंग	12/08/2027	धांय	21/10/2028	भ्राम	10/02/2031
	26/08/2015	पिंग	21/12/2021	धांय	11/09/2027	भ्राम	10/01/2029	भद्रि	12/07/2031
पिंग	11/01/2016	धांय	22/08/2022	भ्राम	22/10/2027	भद्रि	22/04/2029	उल्क	11/01/2032
धांय	11/08/2016	भ्राम	12/07/2023	भद्रि	11/12/2027	उल्क	21/08/2029	सिद्ध	11/08/2032
भ्राम	22/05/2017	भद्रि	21/08/2024	उल्क	10/02/2028	सिद्ध	10/01/2030	संक	11/04/2033
भद्रि	12/05/2018	उल्क	21/12/2025	सिद्ध	21/04/2028	संक	22/06/2030	मंग	12/05/2033
उल्क	12/07/2019	सिद्ध	12/07/2027	संक	11/07/2028	मंग	12/07/2030	पिंग	12/07/2033

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
12/07/2033		12/07/2037		12/07/2042		11/07/2048		12/07/2055	
12/07/2037		12/07/2042		11/07/2048		12/07/2055		12/07/2063	
भ्राम	21/12/2033	भद्रि	22/03/2038	उल्क	12/07/2043	सिद्ध	21/11/2049	संक	22/04/2057
भद्रि	12/07/2034	उल्क	21/01/2039	सिद्ध	10/09/2044	संक	12/06/2051	मंग	12/07/2057
उल्क	12/03/2035	सिद्ध	11/01/2040	संक	10/01/2046	मंग	22/08/2051	पिंग	21/12/2057
सिद्ध	22/12/2035	संक	20/02/2041	मंग	12/03/2046	पिंग	11/01/2052	धांय	22/08/2058
संक	10/11/2036	मंग	11/04/2041	पिंग	12/07/2046	धांय	11/08/2052	भ्राम	12/07/2059
मंग	21/12/2036	पिंग	22/07/2041	धांय	11/01/2047	भ्राम	22/05/2053	भद्रि	21/08/2060
पिंग	12/03/2037	धांय	21/12/2041	भ्राम	11/09/2047	भद्रि	12/05/2054	उल्क	21/12/2061
धांय	12/07/2037	भ्राम	12/07/2042	भद्रि	11/07/2048	उल्क	12/07/2055	सिद्ध	12/07/2063

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
12/07/2063		11/07/2064		12/07/2066		12/07/2069		12/07/2073	
11/07/2064		12/07/2066		12/07/2069		12/07/2073		12/07/2078	
मंग	22/07/2063	पिंग	21/08/2064	धांय	11/10/2066	भ्राम	21/12/2069	भद्रि	22/03/2074
पिंग	12/08/2063	धांय	21/10/2064	भ्राम	10/02/2067	भद्रि	12/07/2070	उल्क	21/01/2075
धांय	11/09/2063	भ्राम	10/01/2065	भद्रि	12/07/2067	उल्क	12/03/2071	सिद्ध	11/01/2076
भ्राम	22/10/2063	भद्रि	22/04/2065	उल्क	11/01/2068	सिद्ध	22/12/2071	संक	20/02/2077
भद्रि	11/12/2063	उल्क	21/08/2065	सिद्ध	11/08/2068	संक	10/11/2072	मंग	11/04/2077
उल्क	10/02/2064	सिद्ध	10/01/2066	संक	11/04/2069	मंग	21/12/2072	पिंग	22/07/2077
सिद्ध	21/04/2064	संक	22/06/2066	मंग	12/05/2069	पिंग	12/03/2073	धांय	21/12/2077
संक	11/07/2064	मंग	12/07/2066	पिंग	12/07/2069	धांय	12/07/2073	भ्राम	12/07/2078

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
12/07/2078		11/07/2084		12/07/2091		12/07/2099		12/07/2100	
11/07/2084		12/07/2091		12/07/2099		12/07/2100		13/07/2102	
उल्क	12/07/2079	सिद्ध	21/11/2085	संक	22/04/2093	मंग	22/07/2099	पिंग	22/08/2100
सिद्ध	10/09/2080	संक	12/06/2087	मंग	12/07/2093	पिंग	12/08/2099	धांय	22/10/2100
संक	10/01/2082	मंग	22/08/2087	पिंग	21/12/2093	धांय	11/09/2099	भ्राम	11/01/2101
मंग	12/03/2082	पिंग	11/01/2088	धांय	22/08/2094	भ्राम	22/10/2099	भद्रि	23/04/2101
पिंग	12/07/2082	धांय	11/08/2088	भ्राम	12/07/2095	भद्रि	11/12/2099	उल्क	22/08/2101
धांय	11/01/2083	भ्राम	22/05/2089	भद्रि	21/08/2096	उल्क	10/02/2100	सिद्ध	11/01/2102
भ्राम	11/09/2083	भद्रि	12/05/2090	उल्क	21/12/2097	सिद्ध	22/04/2100	संक	23/06/2102
भद्रि	11/07/2084	उल्क	12/07/2091	सिद्ध	12/07/2099	संक	12/07/2100	मंग	13/07/2102

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
13/07/2102		13/07/2105		13/07/2109		13/07/2114		12/07/2120	
13/07/2105		13/07/2109		13/07/2114		12/07/2120		00/00/0000	
धांय	12/10/2102	भ्राम	22/12/2105	भद्रि	23/03/2110	उल्क	13/07/2115	सिद्ध	22/11/2121
भ्राम	11/02/2103	भद्रि	13/07/2106	उल्क	22/01/2111	सिद्ध	11/09/2116	संक	13/06/2123
भद्रि	13/07/2103	उल्क	13/03/2107	सिद्ध	12/01/2112	संक	11/01/2118	मंग	23/08/2123
उल्क	12/01/2104	सिद्ध	23/12/2107	संक	21/02/2113	मंग	13/03/2118	पिंग	27/08/2123
सिद्ध	12/08/2104	संक	11/11/2108	मंग	12/04/2113	पिंग	13/07/2118		00/00/0000
संक	12/04/2105	मंग	22/12/2108	पिंग	23/07/2113	धांय	12/01/2119		00/00/0000
मंग	13/05/2105	पिंग	13/03/2109	धांय	22/12/2113	भ्राम	12/09/2119		00/00/0000
पिंग	13/07/2105	धांय	13/07/2109	भ्राम	13/07/2114	भद्रि	12/07/2120		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय	
21/08/2024		21/12/2025		12/07/2027		22/07/2027		12/08/2027	
21/12/2025		12/07/2027		22/07/2027		12/08/2027		11/09/2027	
उल्क	10/11/2024	सिद्ध	11/04/2026	मंग	13/07/2027	पिंग	24/07/2027	धांय	14/08/2027
सिद्ध	13/02/2025	संक	15/08/2026	पिंग	13/07/2027	धांय	25/07/2027	भ्राम	18/08/2027
संक	01/06/2025	मंग	31/08/2026	धांय	14/07/2027	भ्राम	27/07/2027	भद्रि	22/08/2027
मंग	15/06/2025	पिंग	01/10/2026	भ्राम	15/07/2027	भद्रि	30/07/2027	उल्क	27/08/2027
पिंग	12/07/2025	धांय	17/11/2026	भद्रि	16/07/2027	उल्क	03/08/2027	सिद्ध	02/09/2027
धांय	21/08/2025	भ्राम	20/01/2027	उल्क	18/07/2027	सिद्ध	07/08/2027	संक	09/09/2027
भ्राम	14/10/2025	भद्रि	09/04/2027	सिद्ध	20/07/2027	संक	11/08/2027	मंग	09/09/2027
भद्रि	21/12/2025	उल्क	12/07/2027	संक	22/07/2027	मंग	12/08/2027	पिंग	11/09/2027

मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक	
11/09/2027		22/10/2027		11/12/2027		10/02/2028		21/04/2028	
22/10/2027		11/12/2027		10/02/2028		21/04/2028		11/07/2028	
भ्राम	16/09/2027	भद्रि	29/10/2027	उल्क	22/12/2027	सिद्ध	24/02/2028	संक	09/05/2028
भद्रि	21/09/2027	उल्क	06/11/2027	सिद्ध	02/01/2028	संक	11/03/2028	मंग	12/05/2028
उल्क	28/09/2027	सिद्ध	16/11/2027	संक	16/01/2028	मंग	13/03/2028	पिंग	16/05/2028
सिद्ध	06/10/2027	संक	27/11/2027	मंग	18/01/2028	पिंग	17/03/2028	धांय	23/05/2028
संक	15/10/2027	मंग	29/11/2027	पिंग	21/01/2028	धांय	23/03/2028	भ्राम	01/06/2028
मंग	16/10/2027	पिंग	02/12/2027	धांय	26/01/2028	भ्राम	31/03/2028	भद्रि	12/06/2028
पिंग	18/10/2027	धांय	06/12/2027	भ्राम	02/02/2028	भद्रि	09/04/2028	उल्क	26/06/2028
धांय	22/10/2027	भ्राम	11/12/2027	भद्रि	10/02/2028	उल्क	21/04/2028	सिद्ध	11/07/2028

पिंग - पिंग		पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क	
11/07/2028		21/08/2028		21/10/2028		10/01/2029		22/04/2029	
21/08/2028		21/10/2028		10/01/2029		22/04/2029		21/08/2029	
पिंग	14/07/2028	धांय	26/08/2028	भ्राम	30/10/2028	भद्रि	24/01/2029	उल्क	12/05/2029
धांय	17/07/2028	भ्राम	02/09/2028	भद्रि	10/11/2028	उल्क	10/02/2029	सिद्ध	05/06/2029
भ्राम	22/07/2028	भद्रि	10/09/2028	उल्क	24/11/2028	सिद्ध	02/03/2029	संक	02/07/2029
भद्रि	27/07/2028	उल्क	21/09/2028	सिद्ध	10/12/2028	संक	24/03/2029	मंग	05/07/2029
उल्क	03/08/2028	सिद्ध	02/10/2028	संक	28/12/2028	मंग	27/03/2029	पिंग	12/07/2029
सिद्ध	11/08/2028	संक	16/10/2028	मंग	30/12/2028	पिंग	02/04/2029	धांय	22/07/2029
संक	20/08/2028	मंग	18/10/2028	पिंग	03/01/2029	धांय	10/04/2029	भ्राम	04/08/2029
मंग	21/08/2028	पिंग	21/10/2028	धांय	10/01/2029	भ्राम	22/04/2029	भद्रि	21/08/2029

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय		धांय - भ्राम	
21/08/2029		10/01/2030		22/06/2030		12/07/2030		11/10/2030	
10/01/2030		22/06/2030		12/07/2030		11/10/2030		10/02/2031	
सिद्ध	18/09/2029	संक	15/02/2030	मंग	22/06/2030	धांय	20/07/2030	भ्राम	25/10/2030
संक	20/10/2029	मंग	20/02/2030	पिंग	23/06/2030	भ्राम	30/07/2030	भद्रि	11/11/2030
मंग	23/10/2029	पिंग	01/03/2030	धांय	25/06/2030	भद्रि	11/08/2030	उल्क	01/12/2030
पिंग	31/10/2029	धांय	14/03/2030	भ्राम	27/06/2030	उल्क	27/08/2030	सिद्ध	25/12/2030
धांय	12/11/2029	भ्राम	02/04/2030	भद्रि	30/06/2030	सिद्ध	13/09/2030	संक	21/01/2031
भ्राम	28/11/2029	भद्रि	24/04/2030	उल्क	04/07/2030	संक	04/10/2030	मंग	24/01/2031
भद्रि	18/12/2029	उल्क	21/05/2030	सिद्ध	07/07/2030	मंग	06/10/2030	पिंग	31/01/2031
उल्क	10/01/2030	सिद्ध	22/06/2030	संक	12/07/2030	पिंग	11/10/2030	धांय	10/02/2031

धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक		धांय - मंग	
10/02/2031		12/07/2031		11/01/2032		11/08/2032		11/04/2033	
12/07/2031		11/01/2032		11/08/2032		11/04/2033		12/05/2033	
भद्रि	03/03/2031	उल्क	12/08/2031	सिद्ध	21/02/2032	संक	04/10/2032	मंग	12/04/2033
उल्क	29/03/2031	सिद्ध	16/09/2031	संक	09/04/2032	मंग	11/10/2032	पिंग	14/04/2033
सिद्ध	27/04/2031	संक	27/10/2031	मंग	15/04/2032	पिंग	24/10/2032	धांय	16/04/2033
संक	31/05/2031	मंग	01/11/2031	पिंग	26/04/2032	धांय	14/11/2032	भ्राम	20/04/2033
मंग	04/06/2031	पिंग	11/11/2031	धांय	14/05/2032	भ्राम	11/12/2032	भद्रि	24/04/2033
पिंग	13/06/2031	धांय	26/11/2031	भ्राम	07/06/2032	भद्रि	13/01/2033	उल्क	29/04/2033
धांय	25/06/2031	भ्राम	16/12/2031	भद्रि	06/07/2032	उल्क	23/02/2033	सिद्ध	05/05/2033
भ्राम	12/07/2031	भद्रि	11/01/2032	उल्क	11/08/2032	सिद्ध	11/04/2033	संक	12/05/2033

धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क		भ्राम - सिद्ध	
12/05/2033		12/07/2033		21/12/2033		12/07/2034		12/03/2035	
12/07/2033		21/12/2033		12/07/2034		12/03/2035		22/12/2035	
पिंग	15/05/2033	भ्राम	30/07/2033	भद्रि	18/01/2034	उल्क	22/08/2034	सिद्ध	07/05/2035
धांय	20/05/2033	भद्रि	21/08/2033	उल्क	21/02/2034	सिद्ध	08/10/2034	संक	09/07/2035
भ्राम	27/05/2033	उल्क	17/09/2033	सिद्ध	02/04/2034	संक	01/12/2034	मंग	17/07/2035
भद्रि	05/06/2033	सिद्ध	19/10/2033	संक	17/05/2034	मंग	08/12/2034	पिंग	02/08/2035
उल्क	15/06/2033	संक	24/11/2033	मंग	22/05/2034	पिंग	21/12/2034	धांय	25/08/2035
सिद्ध	27/06/2033	मंग	29/11/2033	पिंग	03/06/2034	धांय	11/01/2035	भ्राम	26/09/2035
संक	10/07/2033	पिंग	08/12/2033	धांय	19/06/2034	भ्राम	07/02/2035	भद्रि	04/11/2035
मंग	12/07/2033	धांय	21/12/2033	भ्राम	12/07/2034	भद्रि	12/03/2035	उल्क	22/12/2035

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 4 वर्ष 4 मास 5 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : पूर्वाषाढ़ा - 2 सव्य
देह : मकर जीव : मिथुन

कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष	
26/08/2015		31/12/2019		30/12/2024		30/12/2033		30/12/2037	
31/12/2019		30/12/2024		30/12/2033		30/12/2037		30/12/2041	
	00/00/0000	सिंह	16/04/2020	कन्या	13/12/2025	कुंभ	09/03/2034	मक	09/03/2038
	00/00/0000	कन्या	27/10/2020	कुंभ	17/05/2026	मक	17/05/2034	धनु	28/08/2038
	00/00/0000	कुंभ	21/01/2021	मक	18/10/2026	धनु	05/11/2034	मेष	26/12/2038
	00/00/0000	मक	16/04/2021	धनु	09/11/2027	मेष	05/03/2035	वृष	27/09/2039
	00/00/0000	धनु	17/11/2021	मेष	06/08/2028	वृष	05/12/2035	मिथु	29/02/2040
	00/00/0000	मेष	17/04/2022	वृष	17/04/2030	मिथु	08/05/2036	कर्क	24/02/2041
	26/08/2015	वृष	26/03/2023	मिथु	31/03/2031	कर्क	04/05/2037	सिंह	21/05/2041
वृष	10/10/2017	मिथु	06/10/2023	कर्क	20/06/2033	सिंह	29/07/2037	कन्या	23/10/2041
मिथु	31/12/2019	कर्क	30/12/2024	सिंह	30/12/2033	कन्या	30/12/2037	कुंभ	30/12/2041

धनु 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष	
30/12/2041		31/12/2051		31/12/2058		31/12/2074		31/12/2083	
31/12/2051		31/12/2058		31/12/2074		31/12/2083		00/00/0000	
धनु	05/03/2043	मेष	28/07/2052	वृष	04/01/2062	मिथु	14/12/2075	कर्क	09/03/2089
मेष	31/12/2043	वृष	22/11/2053	मिथु	14/09/2063	कर्क	05/03/2078	सिंह	03/06/2090
वृष	17/11/2045	मिथु	19/08/2054	कर्क	28/08/2067	सिंह	14/09/2078	कन्या	23/08/2092
मिथु	09/12/2046	कर्क	12/05/2056	सिंह	06/08/2068	कन्या	28/08/2079	कुंभ	19/08/2093
कर्क	29/05/2049	सिंह	09/10/2056	कन्या	17/04/2070	कुंभ	30/01/2080	मक	15/08/2094
सिंह	30/12/2049	कन्या	07/07/2057	कुंभ	17/01/2071	मक	03/07/2080	धनु	02/02/2097
कन्या	21/01/2051	कुंभ	04/11/2057	मक	19/10/2071	धनु	24/07/2081	मेष	27/10/2098
कुंभ	12/07/2051	मक	05/03/2058	धनु	05/09/2073	मेष	21/04/2082	वृष	26/08/2100
मक	31/12/2051	धनु	31/12/2058	मेष	31/12/2074	वृष	31/12/2083		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - कन्या		कन्या - कुंभ		कन्या - मक		कन्या - धनु		कन्या - मेष	
30/12/2024		13/12/2025		17/05/2026		18/10/2026		09/11/2027	
13/12/2025		17/05/2026		18/10/2026		09/11/2027		06/08/2028	
कन्या	05/02/2025	कुंभ	20/12/2025	मक	24/05/2026	धनु	03/12/2026	मेष	01/12/2027
कुंभ	21/02/2025	मक	28/12/2025	धनु	11/06/2026	मेष	04/01/2027	वृष	21/01/2028
मक	10/03/2025	धनु	15/01/2026	मेष	24/06/2026	वृष	18/03/2027	मिथु	19/02/2028
धनु	20/04/2025	मेष	28/01/2026	वृष	23/07/2026	मिथु	28/04/2027	कर्क	26/04/2028
मेष	18/05/2025	वृष	26/02/2026	मिथु	08/08/2026	कर्क	01/08/2027	सिंह	12/05/2028
वृष	23/07/2025	मिथु	14/03/2026	कर्क	16/09/2026	सिंह	24/08/2027	कन्या	10/06/2028
मिथु	29/08/2025	कर्क	21/04/2026	सिंह	25/09/2026	कन्या	04/10/2027	कुंभ	22/06/2028
कर्क	23/11/2025	सिंह	30/04/2026	कन्या	11/10/2026	कुंभ	22/10/2027	मक	05/07/2028
सिंह	13/12/2025	कन्या	17/05/2026	कुंभ	18/10/2026	मक	09/11/2027	धनु	06/08/2028

कन्या - वृष		कन्या - मिथु		कन्या - कर्क		कन्या - सिंह		कुंभ - कुंभ	
06/08/2028		17/04/2030		31/03/2031		20/06/2033		30/12/2033	
17/04/2030		31/03/2031		20/06/2033		30/12/2033		09/03/2034	
वृष	30/11/2028	मिथु	24/05/2030	कर्क	17/10/2031	सिंह	01/07/2033	कुंभ	03/01/2034
मिथु	04/02/2029	कर्क	18/08/2030	सिंह	04/12/2031	कन्या	22/07/2033	मक	06/01/2034
कर्क	07/07/2029	सिंह	07/09/2030	कन्या	28/02/2032	कुंभ	31/07/2033	धनु	14/01/2034
सिंह	12/08/2029	कन्या	14/10/2030	कुंभ	06/04/2032	मक	09/08/2033	मेष	19/01/2034
कन्या	17/10/2029	कुंभ	30/10/2030	मक	15/05/2032	धनु	01/09/2033	वृष	01/02/2034
कुंभ	15/11/2029	मक	16/11/2030	धनु	18/08/2032	मेष	17/09/2033	मिथु	09/02/2034
मक	14/12/2029	धनु	27/12/2030	मेष	24/10/2032	वृष	23/10/2033	कर्क	26/02/2034
धनु	25/02/2030	मेष	24/01/2031	वृष	26/03/2033	मिथु	12/11/2033	सिंह	02/03/2034
मेष	17/04/2030	वृष	31/03/2031	मिथु	20/06/2033	कर्क	30/12/2033	कन्या	09/03/2034

कुंभ - मक		कुंभ - धनु		कुंभ - मेष		कुंभ - वृष		कुंभ - मिथु	
09/03/2034		17/05/2034		05/11/2034		05/03/2035		05/12/2035	
17/05/2034		05/11/2034		05/03/2035		05/12/2035		08/05/2036	
मक	12/03/2034	धनु	06/06/2034	मेष	15/11/2034	वृष	26/04/2035	मिथु	21/12/2035
धनु	20/03/2034	मेष	20/06/2034	वृष	07/12/2034	मिथु	25/05/2035	कर्क	29/01/2036
मेष	26/03/2034	वृष	23/07/2034	मिथु	20/12/2034	कर्क	01/08/2035	सिंह	07/02/2036
वृष	08/04/2034	मिथु	10/08/2034	कर्क	19/01/2035	सिंह	17/08/2035	कन्या	23/02/2036
मिथु	15/04/2034	कर्क	21/09/2034	सिंह	26/01/2035	कन्या	15/09/2035	कुंभ	01/03/2036
कर्क	02/05/2034	सिंह	01/10/2034	कन्या	07/02/2035	कुंभ	28/09/2035	मक	09/03/2036
सिंह	06/05/2034	कन्या	19/10/2034	कुंभ	13/02/2035	मक	11/10/2035	धनु	27/03/2036
कन्या	14/05/2034	कुंभ	28/10/2034	मक	19/02/2035	धनु	12/11/2035	मेष	09/04/2036
कुंभ	17/05/2034	मक	05/11/2034	धनु	05/03/2035	मेष	05/12/2035	वृष	08/05/2036

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - कर्क		कुंभ - सिंह		कुंभ - कन्या		मक - मक		मक - धनु	
08/05/2036		04/05/2037		29/07/2037		30/12/2037		09/03/2038	
04/05/2037		29/07/2037		30/12/2037		09/03/2038		28/08/2038	
कर्क	05/08/2036	सिंह	09/05/2037	कन्या	14/08/2037	मक	03/01/2038	धनु	29/03/2038
सिंह	26/08/2036	कन्या	18/05/2037	कुंभ	21/08/2037	धनु	11/01/2038	मेष	12/04/2038
कन्या	03/10/2036	कुंभ	22/05/2037	मक	29/08/2037	मेष	16/01/2038	वृष	15/05/2038
कुंभ	20/10/2036	मक	26/05/2037	धनु	16/09/2037	वृष	29/01/2038	मिथु	02/06/2038
मक	06/11/2036	धनु	05/06/2037	मेष	28/09/2037	मिथु	05/02/2038	कर्क	14/07/2038
धनु	19/12/2036	मेष	12/06/2037	वृष	28/10/2037	कर्क	22/02/2038	सिंह	25/07/2038
मेष	17/01/2037	वृष	28/06/2037	मिथु	13/11/2037	सिंह	27/02/2038	कन्या	12/08/2038
वृष	26/03/2037	मिथु	07/07/2037	कर्क	21/12/2037	कन्या	06/03/2038	कुंभ	20/08/2038
मिथु	04/05/2037	कर्क	29/07/2037	सिंह	30/12/2037	कुंभ	09/03/2038	मक	28/08/2038

मक - मेष		मक - वृष		मक - मिथु		मक - कर्क		मक - सिंह	
28/08/2038		26/12/2038		27/09/2039		29/02/2040		24/02/2041	
26/12/2038		27/09/2039		29/02/2040		24/02/2041		21/05/2041	
मेष	07/09/2038	वृष	16/02/2039	मिथु	14/10/2039	कर्क	28/05/2040	सिंह	01/03/2041
वृष	29/09/2038	मिथु	17/03/2039	कर्क	21/11/2039	सिंह	18/06/2040	कन्या	10/03/2041
मिथु	12/10/2038	कर्क	24/05/2039	सिंह	30/11/2039	कन्या	27/07/2040	कुंभ	14/03/2041
कर्क	11/11/2038	सिंह	09/06/2039	कन्या	16/12/2039	कुंभ	13/08/2040	मक	18/03/2041
सिंह	18/11/2038	कन्या	08/07/2039	कुंभ	24/12/2039	मक	30/08/2040	धनु	28/03/2041
कन्या	01/12/2038	कुंभ	21/07/2039	मक	31/12/2039	धनु	11/10/2040	मेष	04/04/2041
कुंभ	06/12/2038	मक	03/08/2039	धनु	18/01/2040	मेष	10/11/2040	वृष	20/04/2041
मक	12/12/2038	धनु	05/09/2039	मेष	31/01/2040	वृष	17/01/2041	मिथु	30/04/2041
धनु	26/12/2038	मेष	27/09/2039	वृष	29/02/2040	मिथु	24/02/2041	कर्क	21/05/2041

मक - कन्या		मक - कुंभ		धनु - धनु		धनु - मेष		धनु - वृष	
21/05/2041		23/10/2041		30/12/2041		05/03/2043		31/12/2043	
23/10/2041		30/12/2041		05/03/2043		31/12/2043		17/11/2045	
कन्या	06/06/2041	कुंभ	26/10/2041	धनु	19/02/2042	मेष	30/03/2043	वृष	08/05/2044
कुंभ	13/06/2041	मक	29/10/2041	मेष	26/03/2042	वृष	25/05/2043	मिथु	20/07/2044
मक	21/06/2041	धनु	06/11/2041	वृष	15/06/2042	मिथु	26/06/2043	कर्क	06/01/2045
धनु	09/07/2041	मेष	12/11/2041	मिथु	31/07/2042	कर्क	09/09/2043	सिंह	15/02/2045
मेष	22/07/2041	वृष	25/11/2041	कर्क	14/11/2042	सिंह	26/09/2043	कन्या	29/04/2045
वृष	20/08/2041	मिथु	02/12/2041	सिंह	09/12/2042	कन्या	28/10/2043	कुंभ	31/05/2045
मिथु	05/09/2041	कर्क	19/12/2041	कन्या	24/01/2043	कुंभ	11/11/2043	मक	03/07/2045
कर्क	13/10/2041	सिंह	23/12/2041	कुंभ	13/02/2043	मक	25/11/2043	धनु	22/09/2045
सिंह	23/10/2041	कन्या	30/12/2041	मक	05/03/2043	धनु	31/12/2043	मेष	17/11/2045

चर दशा

भोग्य दशा काल : कन्या 12 वर्ष 0 मास 0 दिन

कन्या 12 वर्ष	
26/08/2015	
26/08/2027	
तुला	25/08/2016
वृश्चि	25/08/2017
धनु	26/08/2018
मक	26/08/2019
कुंभ	25/08/2020
मीन	25/08/2021
मेष	26/08/2022
वृष	26/08/2023
मिथु	25/08/2024
कर्क	25/08/2025
सिंह	26/08/2026
कन्या	26/08/2027

तुला 9 वर्ष	
26/08/2027	
25/08/2036	
वृश्चि	26/05/2028
धनु	24/02/2029
मक	25/11/2029
कुंभ	26/08/2030
मीन	27/05/2031
मेष	25/02/2032
वृष	24/11/2032
मिथु	25/08/2033
कर्क	26/05/2034
सिंह	24/02/2035
कन्या	25/11/2035
तुला	25/08/2036

वृश्चिक 8 वर्ष	
25/08/2036	
25/08/2044	
तुला	26/04/2037
कन्या	25/12/2037
सिंह	26/08/2038
कर्क	26/04/2039
मिथु	26/12/2039
वृष	25/08/2040
मेष	26/04/2041
मीन	25/12/2041
कुंभ	26/08/2042
मक	26/04/2043
धनु	26/12/2043
वृश्चि	25/08/2044

धनु 8 वर्ष	
25/08/2044	
25/08/2052	
वृश्चि	26/04/2045
तुला	25/12/2045
कन्या	26/08/2046
सिंह	26/04/2047
कर्क	26/12/2047
मिथु	25/08/2048
वृष	26/04/2049
मेष	25/12/2049
मीन	26/08/2050
कुंभ	26/04/2051
मक	26/12/2051
धनु	25/08/2052

मकर 2 वर्ष	
25/08/2052	
26/08/2054	
धनु	25/10/2052
वृश्चि	25/12/2052
तुला	24/02/2053
कन्या	26/04/2053
सिंह	26/06/2053
कर्क	25/08/2053
मिथु	25/10/2053
वृष	25/12/2053
मेष	24/02/2054
मीन	26/04/2054
कुंभ	26/06/2054
मक	26/08/2054

कुम्भ 5 वर्ष	
26/08/2054	
26/08/2059	
मीन	25/01/2055
मेष	26/06/2055
वृष	25/11/2055
मिथु	25/04/2056
कर्क	25/09/2056
सिंह	24/02/2057
कन्या	26/07/2057
तुला	25/12/2057
वृश्चि	26/05/2058
धनु	26/10/2058
मक	27/03/2059
कुंभ	26/08/2059

मीन 7 वर्ष	
26/08/2059	
26/08/2066	
मेष	26/03/2060
वृष	25/10/2060
मिथु	26/05/2061
कर्क	25/12/2061
सिंह	26/07/2062
कन्या	24/02/2063
तुला	25/09/2063
वृश्चि	25/04/2064
धनु	24/11/2064
मक	26/06/2065
कुंभ	25/01/2066
मीन	26/08/2066

मेष 3 वर्ष	
26/08/2066	
25/08/2069	
वृष	25/11/2066
मिथु	24/02/2067
कर्क	27/05/2067
सिंह	26/08/2067
कन्या	25/11/2067
तुला	25/02/2068
वृश्चि	26/05/2068
धनु	25/08/2068
मक	24/11/2068
कुंभ	24/02/2069
मीन	26/05/2069
मेष	25/08/2069

वृष 2 वर्ष	
25/08/2069	
26/08/2071	
मेष	25/10/2069
मीन	25/12/2069
कुंभ	24/02/2070
मक	26/04/2070
धनु	26/06/2070
वृश्चि	26/08/2070
तुला	26/10/2070
कन्या	25/12/2070
सिंह	24/02/2071
कर्क	26/04/2071
मिथु	26/06/2071
वृष	26/08/2071

मिथुन 3 वर्ष	
26/08/2071	
26/08/2074	
वृष	25/11/2071
मेष	25/02/2072
मीन	26/05/2072
कुंभ	25/08/2072
मक	24/11/2072
धनु	24/02/2073
वृश्चि	26/05/2073
तुला	25/08/2073
कन्या	25/11/2073
सिंह	24/02/2074
कर्क	26/05/2074
मिथु	26/08/2074

कर्क 7 वर्ष	
26/08/2074	
25/08/2081	
मिथु	27/03/2075
वृष	26/10/2075
मेष	26/05/2076
मीन	25/12/2076
कुंभ	26/07/2077
मक	24/02/2078
धनु	25/09/2078
वृश्चि	26/04/2079
तुला	25/11/2079
कन्या	25/06/2080
सिंह	24/01/2081
कर्क	25/08/2081

सिंह 12 वर्ष	
25/08/2081	
25/08/2093	
कन्या	26/08/2082
तुला	26/08/2083
वृश्चि	25/08/2084
धनु	25/08/2085
मक	26/08/2086
कुंभ	26/08/2087
मीन	25/08/2088
मेष	25/08/2089
वृष	26/08/2090
मिथु	26/08/2091
कर्क	25/08/2092
सिंह	25/08/2093

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

चर दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - सिंह		कन्या - कन्या		तुला - वृश्चिक		तुला - धनु		तुला - मक	
25/08/2025		26/08/2026		26/08/2027		26/05/2028		24/02/2029	
26/08/2026		26/08/2027		26/05/2028		24/02/2029		25/11/2029	
कन्या	25/09/2025	तुला	25/09/2026	तुला	18/09/2027	वृश्चिक	18/06/2028	धनु	19/03/2029
तुला	25/10/2025	वृश्चिक	26/10/2026	कन्या	11/10/2027	तुला	10/07/2028	वृश्चिक	10/04/2029
वृश्चिक	25/11/2025	धनु	25/11/2026	सिंह	02/11/2027	कन्या	02/08/2028	तुला	03/05/2029
धनु	25/12/2025	मक	25/12/2026	कर्क	25/11/2027	सिंह	25/08/2028	कन्या	26/05/2029
मक	25/01/2026	कुंभ	25/01/2027	मिथु	18/12/2027	कर्क	17/09/2028	सिंह	18/06/2029
कुंभ	24/02/2026	मीन	24/02/2027	वृष	10/01/2028	मिथु	10/10/2028	कर्क	11/07/2029
मीन	26/03/2026	मेष	27/03/2027	मेष	02/02/2028	वृष	02/11/2028	मिथु	03/08/2029
मेष	26/04/2026	वृष	26/04/2027	मीन	25/02/2028	मेष	24/11/2028	वृष	25/08/2029
वृष	26/05/2026	मिथु	27/05/2027	कुंभ	18/03/2028	मीन	17/12/2028	मेष	17/09/2029
मिथु	26/06/2026	कर्क	26/06/2027	मक	10/04/2028	कुंभ	09/01/2029	मीन	10/10/2029
कर्क	26/07/2026	सिंह	26/07/2027	धनु	03/05/2028	मक	01/02/2029	कुंभ	02/11/2029
सिंह	26/08/2026	कन्या	26/08/2027	वृश्चिक	26/05/2028	धनु	24/02/2029	मक	25/11/2029

तुला - कुंभ		तुला - मीन		तुला - मेष		तुला - वृष		तुला - मिथु	
25/11/2029		26/08/2030		27/05/2031		25/02/2032		24/11/2032	
26/08/2030		27/05/2031		25/02/2032		24/11/2032		25/08/2033	
मीन	18/12/2029	मेष	17/09/2030	वृष	18/06/2031	मेष	18/03/2032	वृष	17/12/2032
मेष	09/01/2030	वृष	10/10/2030	मिथु	11/07/2031	मीन	10/04/2032	मेष	09/01/2033
वृष	01/02/2030	मिथु	02/11/2030	कर्क	03/08/2031	कुंभ	03/05/2032	मीन	01/02/2033
मिथु	24/02/2030	कर्क	25/11/2030	सिंह	26/08/2031	मक	26/05/2032	कुंभ	24/02/2033
कर्क	19/03/2030	सिंह	18/12/2030	कन्या	18/09/2031	धनु	18/06/2032	मक	19/03/2033
सिंह	11/04/2030	कन्या	10/01/2031	तुला	11/10/2031	वृश्चिक	10/07/2032	धनु	10/04/2033
कन्या	03/05/2030	तुला	01/02/2031	वृश्चिक	02/11/2031	तुला	02/08/2032	वृश्चिक	03/05/2033
तुला	26/05/2030	वृश्चिक	24/02/2031	धनु	25/11/2031	कन्या	25/08/2032	तुला	26/05/2033
वृश्चिक	18/06/2030	धनु	19/03/2031	मक	18/12/2031	सिंह	17/09/2032	कन्या	18/06/2033
धनु	11/07/2030	मक	11/04/2031	कुंभ	10/01/2032	कर्क	10/10/2032	सिंह	11/07/2033
मक	03/08/2030	कुंभ	04/05/2031	मीन	02/02/2032	मिथु	02/11/2032	कर्क	03/08/2033
कुंभ	26/08/2030	मीन	27/05/2031	मेष	25/02/2032	वृष	24/11/2032	मिथु	25/08/2033

तुला - कर्क		तुला - सिंह		तुला - कन्या		तुला - तुला		वृश्चिक - तुला	
25/08/2033		26/05/2034		24/02/2035		25/11/2035		25/08/2036	
26/05/2034		24/02/2035		25/11/2035		25/08/2036		26/04/2037	
मिथु	17/09/2033	कन्या	18/06/2034	तुला	19/03/2035	वृश्चिक	18/12/2035	वृश्चिक	14/09/2036
वृष	10/10/2033	तुला	11/07/2034	वृश्चिक	11/04/2035	धनु	10/01/2036	धनु	05/10/2036
मेष	02/11/2033	वृश्चिक	03/08/2034	धनु	04/05/2035	मक	02/02/2036	मक	25/10/2036
मीन	25/11/2033	धनु	26/08/2034	मक	27/05/2035	कुंभ	25/02/2036	कुंभ	14/11/2036
कुंभ	18/12/2033	मक	17/09/2034	कुंभ	18/06/2035	मीन	18/03/2036	मीन	05/12/2036
मक	09/01/2034	कुंभ	10/10/2034	मीन	11/07/2035	मेष	10/04/2036	मेष	25/12/2036
धनु	01/02/2034	मीन	02/11/2034	मेष	03/08/2035	वृष	03/05/2036	वृष	14/01/2037
वृश्चिक	24/02/2034	मेष	25/11/2034	वृष	26/08/2035	मिथु	26/05/2036	मिथु	03/02/2037
तुला	19/03/2034	वृष	18/12/2034	मिथु	18/09/2035	कर्क	18/06/2036	कर्क	24/02/2037
कन्या	11/04/2034	मिथु	10/01/2035	कर्क	11/10/2035	सिंह	10/07/2036	सिंह	16/03/2037
सिंह	03/05/2034	कर्क	01/02/2035	सिंह	02/11/2035	कन्या	02/08/2036	कन्या	05/04/2037
कर्क	26/05/2034	सिंह	24/02/2035	कन्या	25/11/2035	तुला	25/08/2036	तुला	26/04/2037

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - कन्या		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मिथु		वृश्चि - वृष	
26/04/2037		25/12/2037		26/08/2038		26/04/2039		26/12/2039	
25/12/2037		26/08/2038		26/04/2039		26/12/2039		25/08/2040	
तुला	16/05/2037	कन्या	14/01/2038	मिथु	15/09/2038	वृष	16/05/2039	मेष	15/01/2040
वृश्चि	05/06/2037	तुला	04/02/2038	वृष	05/10/2038	मेष	06/06/2039	मीन	04/02/2040
धनु	26/06/2037	वृश्चि	24/02/2038	मेष	26/10/2038	मीन	26/06/2039	कुंभ	25/02/2040
मक	16/07/2037	धनु	16/03/2038	मीन	15/11/2038	कुंभ	16/07/2039	मक	16/03/2040
कुंभ	05/08/2037	मक	06/04/2038	कुंभ	05/12/2038	मक	06/08/2039	धनु	05/04/2040
मीन	25/08/2037	कुंभ	26/04/2038	मक	25/12/2038	धनु	26/08/2039	वृश्चि	25/04/2040
मेष	15/09/2037	मीन	16/05/2038	धनु	15/01/2039	वृश्चि	15/09/2039	तुला	16/05/2040
वृष	05/10/2037	मेष	05/06/2038	वृश्चि	04/02/2039	तुला	05/10/2039	कन्या	05/06/2040
मिथु	25/10/2037	वृष	26/06/2038	तुला	24/02/2039	कन्या	26/10/2039	सिंह	25/06/2040
कर्क	15/11/2037	मिथु	16/07/2038	कन्या	17/03/2039	सिंह	15/11/2039	कर्क	16/07/2040
सिंह	05/12/2037	कर्क	05/08/2038	सिंह	06/04/2039	कर्क	05/12/2039	मिथु	05/08/2040
कन्या	25/12/2037	सिंह	26/08/2038	कर्क	26/04/2039	मिथु	26/12/2039	वृष	25/08/2040

वृश्चि - मेष		वृश्चि - मीन		वृश्चि - कुंभ		वृश्चि - मक		वृश्चि - धनु	
25/08/2040		26/04/2041		25/12/2041		26/08/2042		26/04/2043	
26/04/2041		25/12/2041		26/08/2042		26/04/2043		26/12/2043	
वृष	14/09/2040	मेष	16/05/2041	मीन	14/01/2042	धनु	15/09/2042	वृश्चि	16/05/2043
मिथु	05/10/2040	वृष	05/06/2041	मेष	04/02/2042	वृश्चि	05/10/2042	तुला	06/06/2043
कर्क	25/10/2040	मिथु	26/06/2041	वृष	24/02/2042	तुला	26/10/2042	कन्या	26/06/2043
सिंह	14/11/2040	कर्क	16/07/2041	मिथु	16/03/2042	कन्या	15/11/2042	सिंह	16/07/2043
कन्या	05/12/2040	सिंह	05/08/2041	कर्क	06/04/2042	सिंह	05/12/2042	कर्क	06/08/2043
तुला	25/12/2040	कन्या	25/08/2041	सिंह	26/04/2042	कर्क	25/12/2042	मिथु	26/08/2043
वृश्चि	14/01/2041	तुला	15/09/2041	कन्या	16/05/2042	मिथु	15/01/2043	वृष	15/09/2043
धनु	03/02/2041	वृश्चि	05/10/2041	तुला	05/06/2042	वृष	04/02/2043	मेष	05/10/2043
मक	24/02/2041	धनु	25/10/2041	वृश्चि	26/06/2042	मेष	24/02/2043	मीन	26/10/2043
कुंभ	16/03/2041	मक	15/11/2041	धनु	16/07/2042	मीन	17/03/2043	कुंभ	15/11/2043
मीन	05/04/2041	कुंभ	05/12/2041	मक	05/08/2042	कुंभ	06/04/2043	मक	05/12/2043
मेष	26/04/2041	मीन	25/12/2041	कुंभ	26/08/2042	मक	26/04/2043	धनु	26/12/2043

वृश्चि - वृश्चि		धनु - वृश्चि		धनु - तुला		धनु - कन्या		धनु - सिंह	
26/12/2043		25/08/2044		26/04/2045		25/12/2045		26/08/2046	
25/08/2044		26/04/2045		25/12/2045		26/08/2046		26/04/2047	
तुला	15/01/2044	तुला	14/09/2044	वृश्चि	16/05/2045	तुला	14/01/2046	कन्या	15/09/2046
कन्या	04/02/2044	कन्या	05/10/2044	धनु	05/06/2045	वृश्चि	04/02/2046	तुला	05/10/2046
सिंह	25/02/2044	सिंह	25/10/2044	मक	26/06/2045	धनु	24/02/2046	वृश्चि	26/10/2046
कर्क	16/03/2044	कर्क	14/11/2044	कुंभ	16/07/2045	मक	16/03/2046	धनु	15/11/2046
मिथु	05/04/2044	मिथु	05/12/2044	मीन	05/08/2045	कुंभ	06/04/2046	मक	05/12/2046
वृष	25/04/2044	वृष	25/12/2044	मेष	25/08/2045	मीन	26/04/2046	कुंभ	25/12/2046
मेष	16/05/2044	मेष	14/01/2045	वृष	15/09/2045	मेष	16/05/2046	मीन	15/01/2047
मीन	05/06/2044	मीन	03/02/2045	मिथु	05/10/2045	वृष	05/06/2046	मेष	04/02/2047
कुंभ	25/06/2044	कुंभ	24/02/2045	कर्क	25/10/2045	मिथु	26/06/2046	वृष	24/02/2047
मक	16/07/2044	मक	16/03/2045	सिंह	15/11/2045	कर्क	16/07/2046	मिथु	17/03/2047
धनु	05/08/2044	धनु	05/04/2045	कन्या	05/12/2045	सिंह	05/08/2046	कर्क	06/04/2047
वृश्चि	25/08/2044	वृश्चि	26/04/2045	तुला	25/12/2045	कन्या	26/08/2046	सिंह	26/04/2047

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 2, 8, 6
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	89%	धनार्जन, भाग्योदय, धन
गोमेद	राहु	86%	स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	72%	सुख, धनार्जन
नीलम	शनि	61%	पराक्रम, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	41%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय
पुखराज	गुरु	25%	व्यय, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय
मूंगा	मंगल	0%	हानि, दुर्घटना, पराक्रम हानि

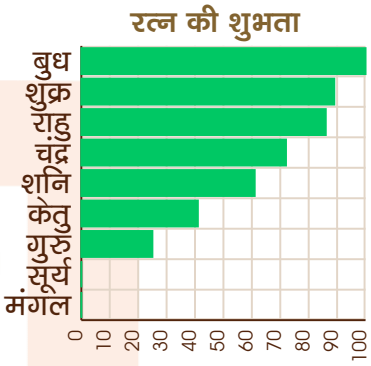

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	24/09/2026	0%	59%	0%	100%	25%	100%	67%	93%	52%
सूर्य	23/09/2032	13%	78%	0%	100%	38%	77%	47%	74%	16%
चंद्र	24/09/2042	1%	84%	0%	100%	25%	89%	61%	74%	16%
मंगल	23/09/2049	1%	78%	6%	100%	38%	89%	61%	74%	52%
राहु	24/09/2067	0%	59%	0%	100%	25%	95%	67%	99%	16%
गुरु	24/09/2083	1%	78%	0%	100%	50%	77%	61%	86%	41%
शनि	25/09/2102	0%	59%	0%	100%	25%	95%	73%	93%	16%
बुध	25/09/2119	1%	59%	0%	100%	25%	95%	61%	86%	41%
केतु	25/09/2126	0%	59%	0%	100%	25%	95%	47%	74%	58%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

गोमेद आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मोती एवं नीलम रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया व पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

माणिक्य व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति

बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। बुध रत्न पन्ना आपकी बौद्धिक योग्यता, ज्ञान क्षमता एवं शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि को जागृत करेगा। तथा पन्ना रत्न लेखन एवं कला का विकास करेगा। यह रत्न भाई-बहनों का स्नेह देगा एवं आप शत्रुओं को चातुर्य से परास्त कर सकेंगे। यह रत्न व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं लाभ प्राप्ति के सुअवसर देकर व्यापार में आपको अच्छी सफलता देगा। पन्ना रत्न मित्रों से संबंध मजबूत करेगा। संचार क्षेत्रों से आय मार्ग शुभफलकारी होंगे।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको

समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए है। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे है जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी

प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती आपको अपने कुल में यथायोग्य अधिकार देगा। आपको वाहनों का सुख देगा। रत्न की शक्तियां आपमें परोपकार की भावना का विकास करेंगी। आत्मविश्वास बढ़ेगा। माता की ओर से संपति प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही यह मोती रत्न आपको माता के द्वारा भाग्योदय देगा। आजीविका क्षेत्र में योग्यता अनुसार सम्मान और पद की प्राप्ति होगी। मोती रत्न से आपको घर का सुख प्राप्त होगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। आप चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति के लिए मोती रत्न धारण कर सकते है। मोती रत्न धारण से आपको धन अर्जित करने के नवीन साधन प्राप्त हो सकते है। यह रत्न धन संचय में सहयोग सिद्ध हो सकता है। इसके साथ ही मोती रत्न आपके बड़े भाई से संबंधों में सुधार करेगा। आयु पर आने वाले असमय संकटों को भी टालने में मोती रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह रत्न आपको राजसिक जीवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। आय भाव के स्वामी चंद्र का रत्न मोती आपको धन और आय योग्यतानुसार देने में समर्थ है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। शनि त्रिकोण भाव के स्वामी है और लग्नेश बुध के मित्र भी है। अतः नीलम रत्न आपके लिए अनुकूल और शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न धारण करने से आपकी संतान का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। यह रत्न संतान सुख भी प्रदान कर सकता है। नीलम रत्न धारण से आपको विद्या ग्रहण या शैक्षिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त हो सकती है। भूमि व संपति से लाभ पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न शत्रुओं पर विजय पाने में सहयोगी रत्न सिद्ध हो सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपका व्यापारिक क्षेत्र में धन अधिक खर्च हो सकता है। कई बार आपका धन नष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको आर्थिक चिंताएं दे सकता है। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आपके द्वारा पिता का संचित धन भी नष्ट हो सकता है। यह रत्न वैवाहिक सुख कम कर सकता है। मित्रों से आपको कष्ट दिला सकता है। रत्न धारण करने के बाद यात्राएं कष्टकारी या असफल हो सकती है। केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपको शत्रुओं का भय हो सकता है। मित्रों से कष्ट मिल सकते है। कुसंगति के मित्र मिल सकते है। साथ ही यह रत्न वैवाहिक सुख में भी कमी कर सकता है।

केतु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु द्वादश भाव में स्थित है। अतः

लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण कर आपमें आशावादिता भाव की कमी आ सकती है। दूसरों के लिए आपमें सहानुभूति तो बहुत होगी परन्तु आप चाहकर भी किसी के काम नहीं आ पाएंगे। कई बार आप दुष्ट लोगों पर भी सहानुभूति रखेंगे। पुखराज रत्न आपको जीवन में हानि करा सकता है। आर्थिक स्थिति में बढ़ोतरी के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। आपको सम्मान की कमी का सामना करना पड़ सकता है। पुखराज रत्न आपकी प्रसन्नता, सुख एवं सौभाग्य में कमी करेगा। यह रत्न रोग, ऋण और शत्रु आपके प्रबल कर सकता है। आयु और मातृ सुख में कमी कर सकता है। विदेश स्थानों से आपको धन हानि हो सकती है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर सुखों का ह्रास हो सकता है। आपको माता की सेवा के अवसर कम ही मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको सरकारी नौकरी में बाधाएं दे सकता है। धन-धान्य और वाहन सुख में भी यह रत्न कमी कर रहा है। गुरु रत्न पुखराज आपकी तीर्थयात्राओं को सीमित कर सकता है। आपके द्वारा माता-पिता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको इष्टमित्रों से दूर रख सकता है। रत्न प्रभाव से आपके वायु रोग प्रभावी हो सकते है। रत्न आपके धन में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न पहनने पर आपको पराश्रय में रहना पड़ सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आपको शुभ कार्यों में सम्मिलित होने के अवसर कम ही मिल पाएंगे। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते है। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते है। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते है। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते है। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यो में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते है। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों से आय प्राप्ति के अवसर दे सकता है। आपके बड़े भाई में अत्यधिक क्रोध भाव आ सकता है। आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है। मूंगा रत्न आपको संतान से संबंधित परेशानियां दे सकता है। इस रत्न से संतान की पैदाइस में विलम्ब या गर्भपात जैसी स्थितियां भी आ सकती है। आपके बड़े भाई बहन वादर्-विवाद में सम्मिलित हो सकते है। मूंगा रत्न आपको मित्रों से मतभेद और विरोध दे सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आपके विरोधी प्रबल हो सकते है। आपको रोग, ऋण और शत्रुओं की अधिकता से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके कुटुंब में वादर्-विवाद का कारण बन सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते है। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(26/08/2015 - 24/09/2026)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(24/09/2026 - 23/09/2032)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना, मोती व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(23/09/2032 - 24/09/2042)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना, हीरा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(24/09/2042 - 23/09/2049)

मंगल की दशा में आपका पन्ना, हीरा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(23/09/2049 - 24/09/2067)

राहु की दशा में आपका पन्ना, गोमेद व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(24/09/2067 - 24/09/2083)

गुरु की दशा में आपका पन्ना, गोमेद, मोती व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(24/09/2083 - 25/09/2102)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(25/09/2102 - 25/09/2119)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(25/09/2119 - 25/09/2126)

केतु की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शुक्र - 24/09/2026

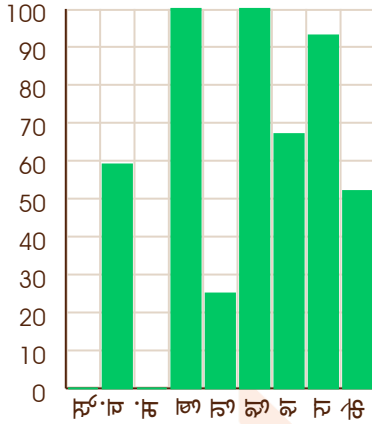

सूर्य - 23/09/2032

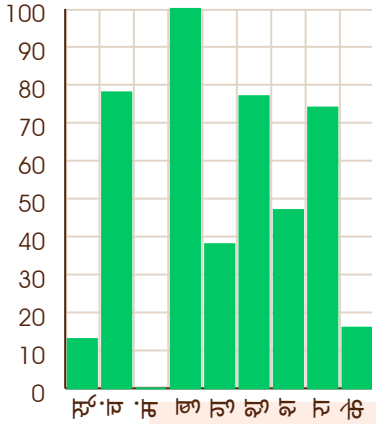

चन्द्र - 24/09/2042

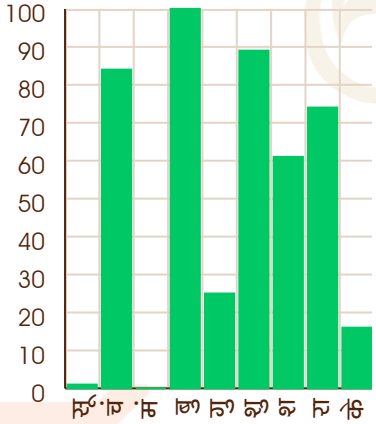

मंगल - 23/09/2049

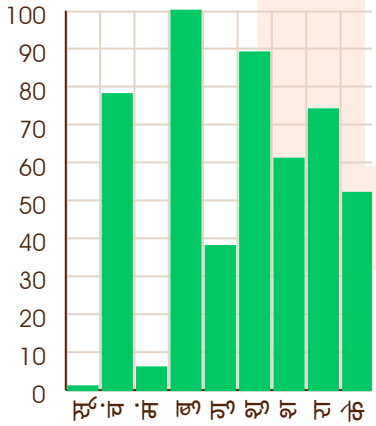

राहु - 24/09/2067

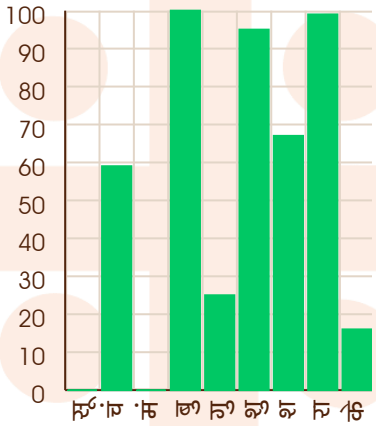

गुरु - 24/09/2083

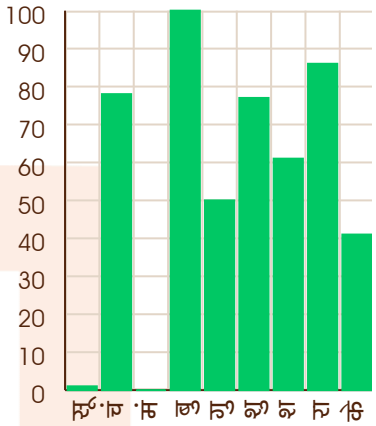

शनि - 25/09/2102

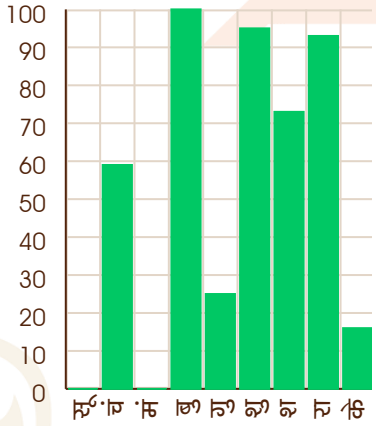

बुध - 25/09/2119

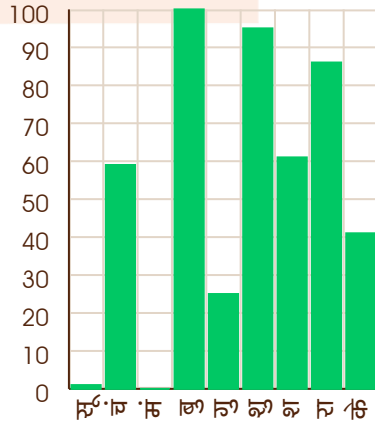

केतु - 25/09/2126

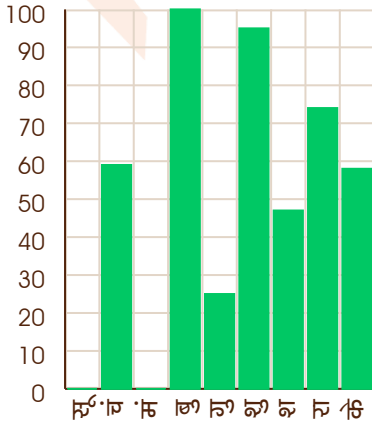

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ऊँ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ठ व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते है। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता हैं।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता हैं।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता हैं, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता हैं।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपति का नाश और माता -पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	26/08/2015-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	अल्प बचत

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगी। पति का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है। अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। अतः आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 26 है। दो और छः के योग से आपका मूलांक आठ होता है। मूलांक 8 का स्वामी शनि ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा अंक छः का शुक्र है। अतः आपके जीवन में अंक दो, छः एवं आठ के स्वामी ग्रह चन्द्र, शुक्र एवं शनि का विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होगा।

मूलांक 8 के स्वामी शनि ग्रह के प्रभाव से आपकी उन्नति धीरे-धीरे होगी। आपके प्रत्येक कार्य में रुकावटें अवश्य आयेंगी। लेकिन आप इनसे बिना विचलित हुए अपनी सफलता का मार्ग स्वयं के कठिन परिश्रम तथा बुद्धि विवेक एवं ज्ञान के द्वारा प्राप्त करेंगी। आलस्य आपके अन्दर अवगुण के रूप में रहेगा। इसी कारण कई बार आप सफलता प्राप्त करते-करते ऐसी चूक कर देंगी जिसका बाद में पछतावा होगा। शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपने जीवन मे कई महत्वपूर्ण एवं स्थायी उपलब्धियां अर्जित करेंगी। जिससे आपका सामाजिक स्तर ऊँचा होगा और आपको समाज में नाम, यश तथा कीर्ति प्राप्त होगी। आपके कार्य करने का ढ़ंग कुछ इस प्रकार का रहेगा कि आप अपने विरोधी, आलोचक स्वयं तैयार करेंगी।

आप दिखावा पसन्द नहीं करेंगी। इससे आपको रूखा, शुष्क एवं कठोर हृदय महिला समझा जायेगा। जबकि आप अन्दर से भावुक एवं दयालु हृदय की होंगी। आपकी रुचि अपने काम तक ही सीमित रहेगी एवं कठिन से कठिन कार्य को भी आप अंजाम देने की क्षमता रखेंगी। इससे आपके सहयोगी आपके आलोचक बन जायेंगे। आप श्रमशील, त्यागी महिला के रूप में जानी जायेंगी एवं आपकी प्रगति में आने वाली रुकावटों को आप आपनी इच्छा शक्ति के बलबूते पर दूर करने में सफल रहेंगी।

अंक दो का स्वामी चन्द्र आपको विभिन्न क्षेत्रों में असफलता देगा लेकिन अंक छः का स्वामी शुक्र आपके अन्दर कलात्मक भाव की वृद्धि करेगा जो कि आपकी कार्य शैली में दृष्टिगोचर होगा।

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगी। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगी। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण की शौकीन रहेंगी। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रही हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनती हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

आपका मूलांक 8 है तथा भाग्यांक 6 है। मूलांक 8 का स्वामी शनि है तथा भाग्यांक 6 का स्वामी शुक्र है। मूलांक 8 एवं भाग्यांक 6 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश कभी आपको मूलांक का प्रभाव प्राप्त होगा, तो कभी-कभी दोनों के प्रभाव परिवर्तनशील रहेंगे। शनि धीरे-धीरे सफलता प्रदान करता है तथा शुक्र कला का दाता है। इन दोनों के संयुक्त प्रभाववश आपके रोजगार-व्यापार में आपकी मेहनत एवं आपके अंदर छिपी हुई कलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। जीवन के प्रारंभिक काल में आपकी आर्थिक स्थिति अधिक अच्छी नहीं रहेगी। लेकिन मध्य अवस्था से उत्तरोत्तर आपकी आर्थिक स्थिति में अनुकूल सुधार होता चला जाएगा। आपके भाग्य का निर्माण आपकी मेहनत तथा कला के द्वारा होगा एवं आपको जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जो भी उपल्ब्धियां प्राप्त होंगी, उनमें आपके व्दारा किये गये प्रारंभिक श्रम की स्पष्ट झलक देखने को मिलेगी। आपके कार्यों में कार्य समापन के पूर्व ही अवरोध आएंगे, जिन्हें आप तन, मन एवं धन के द्वारा दूर करने में सफल होंगी। लेकिन वांछित सफलता गयी अवधि के बीतने के बाद ही प्राप्त होगी। जीवन के मध्य भाग से आपकी स्थिति उच्च कोटि की बनेगी, जो अतिंम अवस्था तक स्थिर रहेगी। सामाजिक क्षेत्र में आप एक कर्मठ एवं संघर्षशील महिला के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगी।

आपका भाग्योदय 24 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 33 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 42 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 8 की 1 एवं 4 से मित्रता है तथा भाग्यांक 6 की 3 एवं 9 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष, या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे तथा आप कोई नया काम ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही स्थान पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 8 एवं भाग्यांक 6 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9

होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक होंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य दिनांक 23 दिसंबर से 19 फरवरी तक, पाश्चात्य मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में रहता है तथा 14 जनवरी से 13 मार्च तक, भारतीय मत से, सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में होता है जो शनि की अपनी राशियां है तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक सूर्य तुला राशि में रहता है, जो शनि की उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक आठ के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहेंगे।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह में पड़ने वाले शनिवार, रविवार एवं सोमवार आपके लिए अनुकूल दिवस हैं। आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, विशिष्ट अधिकारी से संबंध आदि अपनी शुभ तारीखों में पड़ने वाले उपर्युक्त दिवसों में ही प्रारंभ करेंगे तो आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार सम्बंधी कार्य, पत्र या दस्तावेज लिखने हेतु किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। अतः आप कोशिश करें कि कोई भी महत्वपूर्ण कार्य उपर्युक्त तारीखों में ही संपन्न हो।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 3, 6, 12, 15, 21, 24 एवं 30, आपके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे। इन तारीखों में आप कोई भी नया कार्य, व्यापार, पत्र लेखन एवं उच्च तथा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 14 जनवरी से 13 मार्च तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर के बीच हुआ हो, ऐसे व्यक्ति आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगे। इनके सहयोग से आपको अच्छी उपलब्धियां प्राप्त होंगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आप अपने रोजगार, व्यवसाय या प्रेम, विवाह संबंध इत्यादि में ऐसी स्त्री का चुनाव करें, जिसका मूलांक 1, 4, 8 हो तथा उसका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीख को हुआ हो। ऐसी महिलाएं आपके रोजगार, व्यवसाय तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरेजी रंग शुभ होंगे। अपने घर के दरवाजे, पर्दे, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप करें। यदि आपका स्वास्थ्य ठीक न हो तब आप इन्हीं रंगों के कपड़े पहनें एवं रुमाल हर समय अपने पास रखें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य करते समय भी इन्हीं रंगों के वस्त्रों को धारण करना आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आप अपने लिए कॉम्पलेक्स, फ्लैट या मकान का चुनाव पश्चिम दिशा में करें। आपका मूलांक 8 होने से आपके लिए पश्चिम दिशा उपयुक्त रहेगी तथा भवन क्रमांक का योग 8 हो तो अच्छा रहेगा। अतः आप इस दिशा में फ्लैट या मकान खरीद सकते हैं। आप चाहें तो शहर में पश्चिम दिशा, या भवन के पश्चिम क्षेत्र में निवास करें ऐसा करना आपके लिए लाभकारी रहेगा तथा अपने आवश्यक कार्य भी इसी दिशा की ओर बैठ कर संपन्न करेंगे तो लाभ होगा।

शुभ वाहन नं

आपके मूलांक 8 के 1 और 4 मित्र हैं। अतः आप जब भी कोई नया वाहन इत्यादि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण का योग इन्हीं अंकों में से एक होना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उदाहरणार्थ वाहन पंजीकरण क्रमांक 5237 = 8। आप यदि वाहन में यात्रा करते हैं तब भी आपके लिए शुभ अंक 1,4,8 ही रहेंगे और यदि आप होटल में कमरा आदि बुक करवाते हैं तब उसके लिए आपका कमरा नंबर 107 = 8 का चयन करना ही उचित रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको वायु रोग, वात रोग, शारीरिक क्षीणता, अंध रोग, हृदय की कमजोरी, रक्त की कमी, मलबद्धता, कब्जियत, गठिया, रक्तचाप, सिर की पीड़ा, कुष्ठ रोग, मूत्र के रोग, गंजापन तथा कान-नाक में पीड़ा होगी। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शनि की पूजा एवं आराधना करनी चाहिए।

व्यवसाय

कसरत, खेल-कूद, कूद-फांद, पुलिस और सैन्य विभाग, ठेकेदारी, टीन-चद्दर आदि का कार्य, कुलीगिरी, लघु उद्योग, वकालत, ज्योतिष कार्य, वैज्ञानिक कार्य, मुर्गी पालन, बागबानी, कोयला और लकड़ी का व्यवसाय, घड़ीसाज, न्याय वेत्ता, नेतृत्व, नीति निर्धारक, धर्म-कर्म, यज्ञादि कर्त्ता, अध्यापन, संगीतज्ञ आदि कार्य।

व्रतोपवास

शनिवार को शनि अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए नीलम सबसे अधिक लाभकारी रहेगा। इसके न मिलने पर आप बैंकॉक नीलम, लाजवर्त, काला नीली इत्यादि धारण कर सकते हैं। इसे आप शनि के दिन, शुक्ल पक्ष में, चौघड़िया मुहूर्त में, त्रिधातु या चांदी की अंगूठी में सवा तीन से सवा पांच रत्ती का नीलम बनवा कर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली की त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें। यह आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

अनुकूल देवता

आप शनि ग्रह की उपासना करें अथवा आपको बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा। आप नित्य रुद्राक्ष की माला पर बटुक भैरव के मंत्र का एक सौ आठ बार जप किया करें। इससे आपकी सभी समस्याएं, रोग इत्यादि दूर होंगे। बटुक भैरव का मंत्र इस प्रकार है- 'ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं'। यह इक्कीस अक्षर का मंत्र सर्वसिद्धिदाता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शनि के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु शनि के गायत्री मंत्र का, प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शनि गायत्री मंत्र - ऊँ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शनि का ध्यान करें, मन में शनि की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शनि को अनुकूल बनाने हेतु शनि के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान दो सौ तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः दबर्चिन्रप्रप नमः।। जप संख्या 23000।।

वनस्पति धारण

आप शनिवार के दिन एक इंच लंबी विच्छु की जड़ ला कर, काले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या शीशे या लोहे के ताबीज में भर कर गले मे धारण करें। इससे शनि के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावो में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आप प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शनि के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शनि की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शनि के पदार्थ-तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शनि को अनुकूल बनाए रखने हेतु शनि यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चन्दन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

ज्योतिषीय आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपका जन्म हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में कन्या लग्नोदय काल हुआ था। आपके जन्म समय पर मेदिनीय क्षितिज पर कन्या लग्न के साथ-साथ कर्क राशि का नवमांश एवं वृषभ राशीय द्रेष्काणा भी उदित हुआ था। प्रस्तुत समन्वित ज्योतिषीय प्रभाव इस विन्दु की संभावना व्यक्त करता है कि आपका जीवन एक प्रस्तर चक्र के समान शोभनीय है जो सदैव एक परत से दूसरी परत तक परिवर्तित होता रहता है। अर्थात् आप काम को बदल-बदल कर सम्पादन करती रहती हो। आपकी महत्वकांक्षा है कि आपके नाम बैंक में मोटी रकम जमा रहे। परन्तु आप अपनी महत्वकांक्षा के प्रति अनिवार्य रूप से चिन्तन करना आवश्यक नहीं समझती हैं। लेकिन आप अपनी पहुँच के बारे में अच्छी प्रकार अध्ययन नहीं कर पाती कि आखिर आपकी पहुँच कहाँ तक है।

आपकी ऐसी आदत है कि आप अपने स्तर पर अनिवार्य अधूरे कार्य को त्याग कर नये कार्य प्रभार को ग्रहण कर लेती हो। यह साहसिक कार्य आपके लिए सदैव लाभदायक नहीं रहता है। क्योंकि आप वैद्यानिक रूप से यह निर्णय नहीं कर पाती हैं।

परन्तु प्रायः आप अस्वाभाविक रूप से बुद्धि को प्रेरित कर अपनी कार्य योजना का विकल्प की तलाश करने लगती हैं। यदि आप विशेषता पूर्वक निर्णय लेकर पूर्ण रूपेण सक्रिय हो जाएं तो आप पूर्ण लाभ प्राप्त करेंगी।

आपकी दूसरी समस्या यह है कि आप अपने विचारों को अत्यनत संकट ग्रस्त मोड़ दे देती हों। इस कारण ऐसा घटित हो सकता है कि आपके मित्र अथवा व्यवसायिक सहयोगी निरन्तर आपकी कमजोरी के सम्बन्ध में सदैव आलोचना करें। इस प्रकार वे लोग आपको पूर्ण रूपेण तिरस्कृत कर दें। परिणाम स्वरूप वे लोग इस सम्बंध में प्रयास करके आपके विरूद्ध न्यायालय में आपकी त्रुटि को उजागर करे। अतः आपको धैर्य पूर्वक अपनी उस आपतिजनक गुर्राने की आदतों को सदा के लिए त्याग देना चाहिए। आपको नाना प्रकार की घरेलू विषयक दुर्बलता का भी त्याग कर देना चाहिए। अन्यथा वातावरण दुषित हो जायगा। वास्तव में आपको अत्यन्त ही आरामदायक भवन तथा पति चाहिए जो हर हालत में प्रेम सम्बंध प्रदान करते हुए आपका समर्थन एवं सहयोग करे।

आप विपरीत योनि के प्रति आकर्षित तथा सम्बंधित व्यग्रता या घबराहट उत्पन्न करने वाली रोग प्रणाली के प्रति सतर्कता बरते। ये दोनों रोग उच्चस्तरीय स्पन्दित है। यदि आप पूर्व सतर्कता नहीं बरत सके तो आप इन रोगों से ग्रसित एवं प्रभावित हो जाएंगी। आप को वृद्धावस्था की प्राप्ति होगी। आप को भोजन के अतिरिक्त शाक-सब्जी का भोज्य करने के उपरान्त सम्बंधित रोगों के भार से मुक्त हो जाएंगी।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन बुधवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। शनिवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सूआपंखी, पीला, हरा एवं सफेद रंग भाग्यशाली एवं प्रभावक हैं। कृपया काला रंग लाल एवं नीला रंगों का त्याग करें।

आपके लिए अनुकूल संभावित एवं स्पष्ट अंक 2, 3, 5, 6 एवं 7 अंक है। इन तारीखों को महत्वपूर्ण समझें। अंक 1 एवं 8 अंक आपके लिए सर्वथा त्याज्य है।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अजित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी,

वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। कन्या लग्न में उत्पन्न जातक सामान्यतया अध्ययनशील होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञान अर्जित करने में उनकी रूचि रहती है। सदगुणों से ये युक्त रहते हैं। ये जातक सौभाग्यशाली होते हैं तथा इनके सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही सम्पन्न हो जाते है फलतः धनैश्वर्य एवं सांसारिक तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ होते है। समाज में ये सम्मानित तथा प्रतिष्ठित रहते हैं। यद्यपि राजनीति में इनकी रूचि अल्प रहती है परन्तु अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा प्रशासनिक कार्यों में सहयोग प्रदान करते हैं तथा कठिन समस्याओं को सुलझाने में समर्थ रहते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा समस्त कार्य बुद्धि से संचालित होते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। अध्ययन के प्रति आपके हार्दिक रूचि होगी फलतः कला संगीत लेखन आदि कार्यों में आपको परिश्रमपूर्वक सफलता की प्राप्ति हो सकती है। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा अपने सांसारिक कार्यकलापों तथा अन्य कार्यों को सम्पन्न करने में सफल होंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा गूढ़ विषयों या समस्याओं का समाधान करने में दक्ष होंगी। आप कोई भी कार्य भावुकता के वश में होकर सम्पन्न नहीं करेंगी अपितु अत्यंत ही सोच समझकर अंतिम निर्णय लेंगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग सर्वदा प्रशस्त रहेंगे।

लग्न में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप भी आकर्षक होगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगी। आपके वाणी में मधुरता रहेगी तथा सर्वदा मधुर शब्दों का ही उपयोग करेंगी। समाज में आप प्रतिष्ठा तथा सम्मान अर्जित करेंगी तथा आपकी लोक प्रियता बनी रहेगी। संगीत में आप काफी रूचि लेंगी तथा एक गायिका के रूप में आपकी ख्याति हो सकती है। इसके अतिरिक्त भौतिक सुखों एवं धनवैभव से युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगी।

आपके स्वभाव में उदारता का भाव भी रहेगा तथा समय समय पर अन्य जनों की आप सेवा एवं सहायता कार्य करने में तत्पर होंगी श्रेष्ठ एवं अच्छे कार्यों को करने में आपके रूचि रहेगी तथा इन सब कार्यों से समाज में लोग आपको पूर्ण आदर प्रदान करेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगी। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में आप समर्थ होंगी तथा वे आपसे प्रभावित रहेंगे। मित्र वर्ग में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा इनसे आप समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इस प्रकार आप अपनी विद्वता बुद्धिमता

कार्यशीलता तथा चतुराई से जीवन में वांछित सुखों को अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ होंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में तुला राशि उदित हुई है जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मधुर एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अपने वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में भी सम्पन्न रहेंगी। इसके साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट की भी अनुभूति कर सकती हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य उत्सवों की भी प्रिय होंगी तथा ऐसे उत्सवों के आयोजन भी समय समय पर होते रहेंगे। जीवन में आपको पैतृक सम्पति भी अर्जित होगी। साथ ही अपने परिश्रम पराक्रम एवं सौभाग्य से भी वांछित मात्रा में धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में सफल रहेंगी। परिवार को सुख सुविधा तथा प्रसन्नता प्रदान करना आपका मूल उद्देश्य रहेगा। समाज में आप एक आदरणीया महिला होंगी तथा सौभाग्य से अपना जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति प्रबल रहेगी तथा किसी भी वस्तु को आप चिर काल तक नहीं भूलेंगे। आप एक आत्म विश्वासी, साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने इन्हीं गुणों से सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको इच्छित सफलता भी प्राप्त होगी। मंगल के प्रभाव से आपकी निर्णय लेने की शक्ति दृढ़ रहेगी तथा मस्तिष्क भी हमेशा सक्रिय एवं सजग रहेगा।

जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी उनका पूरा ध्यान रखेंगी एवं सुख दुख में उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके प्रति वे हमेशा आज्ञाकारी, विश्वसनीय तथा कर्तव्य परायण रहेंगे। अतः पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भी क्षमा कर देंगी। साथ ही जमीन जायदाद आदि से भी युक्त रहेंगी एवं इससे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। आप परेशानी, क्रोधावस्था तथा अनावश्यक वादविवाद आदि में अप्रिय स्थिति से बचने में समर्थ रहेंगी। अपनी नेतृत्व प्रतिभा तथा अन्य गुणों से समाज में आप एक गणमान्य महिला होंगी। आधुनिक संचार संबंधी महत्वपूर्ण उपकरण यथा टेलीफोन, टेलीविजन तथा वाहन आदि से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी । यदा कदा संगीत के प्रति भी आप रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगी । दूर समीप की यात्राओं से भी आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त आप पराक्रमी कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा अन्य जनों से यदा कदा विवाद भी होगा अतः सतर्क रहें।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा चन्द्रमा भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सुखों की यथोचित समय पर प्राप्ति होगी तथा भौतिक सुख-संसाधनों एवं उपकरणों से भी युक्त होंगी तथा जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। समाज में आपका उच्चस्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त रहेंगी। माता के प्रभाव एवं सहयोग से भी आपको विशिष्ट सम्पत्ति के योग बनते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम पराक्रम एवं योग्यता से भी आप प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगी।

आप प्रारंभ से ही उत्तम घर में निवास करेंगी। आपका घर विस्तृत होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण का आप विशेष ध्यान रहेंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से भी संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी आप युक्त होंगी तथा इसका पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। आपको युवावस्था में ही अपने वाहन की प्राप्ति होगी।

आपकी माता जी सुन्दर सुशील एवं शान्त स्वभाव की महिला होंगी तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा परिवार के सदस्य भी उन्हें वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको आर्थिक तथा नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी तथा आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इससे आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके परीक्षाएं उतीर्ण करेंगी। स्नातक परीक्षा भी आप ससम्मान उतीर्ण करेंगी तथा इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी एवं भविष्य भी उज्ज्वल होगा। इसके अतिरिक्त आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से कोई व्यावसायिक डिग्री भी अर्जित कर सकती है।

चतुर्थ भाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से सामान्यतया आपका रक्तचाप अनुकूल होगा परंतु वृद्धावस्था में आप किंचित परेशानी की अनुभूति कर सकती है। लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा अतः ऐसी अनावश्यक परेशानियों से बचने के लिए पथ्यापथ्य का अवश्य पालन करना चाहिए।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आपकी बुद्धिमता से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आप शीघ्रनिर्णय लेने तथा कठिन से कठिन समस्या को आसानी से सुलझाने में भी आप समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र आदि में आपकी रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। विज्ञान, गणित या ज्योतिष के क्षेत्र में भी आपकी रूचि होगी एवं इनके ज्ञानार्जन में आप पूर्ण परिश्रम करेंगी। इससे आपकी विद्वता में वृद्धि होगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढेगी।

शनि की राशि के पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी। आप मनोरंजन एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगी। आपके प्रेम में मर्यादा तथा नैतिकता का भाव बना रहेगा तथा एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। अतः ऐसे सम्बन्धों की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा सन्तति में कन्या सन्तति की अधिकता होगी। आपके बच्चे बुद्धिमान, गुणवान एवं चतुर होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनके आज्ञापालन में सदैव तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सद्भाव एवं विश्वास बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही करना पसन्द करेंगे लेकिन दोनों के प्रति सम्मान बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा आपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली मानी जायेंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियां अर्जित करेंगी। आप भी बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा उन्हें आधुनिक संस्थाओं में पढ़ाएंगी। अतः आपके परिश्रम एवं बच्चों की लगन से वे अपनी आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। वे अपने उत्तम कार्य-कलापों तथा व्यवहार से अन्य जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सम्मान अर्जित करेंगे। अतः बच्चों की ओर से आप सुखी रहेंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आयु भी दीर्घ होगी। आप एक दयालु प्रवृत्ति की महिला होंगी परन्तु यदा वार्तालाप में कठोर शब्दों का प्रयोग कर सकती है इससे कई लोग आपसे विरोध की भावना रखेंगे। साथ ही लोग आपके वैभव एवं खुशाहली से ईर्ष्या के कारण भी आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। यद्यपि आप एक सम्मानीया महिला होंगी तथापि आपका विरोधी पक्ष भी प्रबल रहेगा। आप अपने पारिवारिक सदस्यों पर अत्यधिक व्यय करेंगी। अतः इसी परिपेक्ष्य में आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। इसके भुगतान में विलम्ब के कारण ऋणदाता द्वारा आपके सम्मान में हानि की संभावना हो सकती है लेकिन अपनी प्रतिभा तथा अधिकार के बल पर आप इन समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

आपका सेवक वर्ग आज्ञाकारी रहेगा तथा पूर्ण ईमानदारी से आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। अपने कार्य से वे आपको सन्तुष्ट रखेंगे लेकिन यदा कदा इनसे मान हानि की भी संभावना रहेगी अतः इनसे व्यक्तिगत कलह तथा कीमती वस्तुओं को हमेशा दूर रखना चाहिए। मुकद्दमे आदि कार्यो के प्रति आप लापरवाह रहेंगी परन्तु आपको ऐसे मामलों का सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अवलोकन करना चाहिए तथा अपने व्यापारिक तथा अन्य हिसाब को सही रखना चाहिए। यदि आप इस प्रकार से नियमानुसार कार्य सम्पन्न करती रहें तो आपको किसी भी क्षेत्र में कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। साथ ही फौजदारी मुकद्दमे में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

मामा मामियों से आपके संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। प्रत्यक्ष रूप से तो आपके प्रति वे सदभावना का प्रदर्शन करेंगे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आपके सहयोग आदि में कोई भी रूचि नहीं रहेगी। अतः संबंधों में मधुरता रखने के लिए बुद्धिमता का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आप गुर्दे तथा उदर संबन्धी परेशानी की अनुभूति कर सकती है। अतः युवावस्था में खान पान संबंधी परहेज अवश्य रखें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा केतु भी स्वराशि में सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया सप्तम भाव में मीन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रकृति, आस्तिक एवं धनवान होता है तथा स्वराशिस्थ केतु के प्रभाव से वह तेजस्वी शिक्षित एवं सांसारिक कार्यो में दक्ष होता है एवं महत्वाकांक्षा के भाव की उसमें प्रबलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथापि तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। महत्वाकांक्षा की उनमें प्रबलता रहेगी तथा सांसारिक कार्य कलापों को करने में चतुर होंगे एवं अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। स्वगृही केतु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता की भावना उनमें होगी तथा ईमानदारी से समाज एवं परिवार के प्रति कर्तव्यों का पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर एवं गौरवर्ण के आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना में पतलापन होगा लेकिन शरीर में पुष्टता रहेगी जिससे उनका सौन्दर्य दर्शनीय होगा एवं व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। भौतिक उपकरणों एवं सुख संसाधनों के प्रति भी आकर्षण होगा एवं यत्न पूर्वक इनकी प्राप्ति में तत्पर होंगे साहित्य एवं कला में भी उनकी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा तथा समयानुसार आप स्वयं भी वर का चुनाव कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा स्नेह की भावना होगी जिससे सुख दुख में एक दूसरे का पूरा ध्यान रखेंगे। अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आप आपसी सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे परस्पर विश्वास एवं समानता का भाव बना रहेगा एवं संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

आपका विवाह किसी सामान्य परिवार से होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वह साधारण होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आप मधुर संबंध स्थापित करने में समर्थ होंगी तथा वे भी आपको यथोचित सहयोग तथा स्नेह प्रदान करेंगे जिससे आपस में सदभाव बना रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति का सेवा भाव बना रहेगा एवं स्वगृही केतु के प्रभाव से वह उनको अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे तथा सुख दुख में पूर्ण ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियों को भी अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगे। अतः वह भी उन्हें वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी परन्तु साझेदार का बुद्धिमता पूर्वक चुनाव करना चाहिए तभी इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति हो सकते है।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आध्यत्म ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति विशेष रूचि नहीं रहेगी। इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण व्यस्त रहेंगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म पर ही अधिक विश्वास करेंगी। इस प्रकार व्यस्तता तथा तत्परता के कारण आपके पास समय का अभाव रहेगा। यदि आपके पास समय बचे तो आप अन्यत्र उसका सदुपयोग करना पसन्द करेंगी लेकिन आध्यात्म संबन्धी प्रवचनों का आप यदा कदा श्रवण कर सकती हैं। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी तथा विस्तृत जमीन जायदाद की स्वामिनी बनेंगी। यदि आप इसका विक्रय भी करेंगी तो इससे आपको वांछित कीमत मिलेगी। इसकी कीमतों में निरन्तर वृद्धि के कारण इसे इच्छित कीमत पर बेचकर वांछित धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा ससुराल में किसी प्रकार की कमी नहीं होगी तथा सर्वप्रकार के सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगे। बीमा आदि करने से भी आपको इच्छित लाभ होगा। अतः समय समय पर आप अपना तथा महत्वपूर्ण वस्तुओं का मकान या अन्य का बीमा करवाती रहें। आपकी कुंडली में घर में चोरी आदि की समस्याएं अल्प रहेंगी तथापि सुरक्षा वश आपको बहुमूल्य वस्तुओं को सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए लेकिन दुर्घटना आदि के प्रति आपको पूर्ण रूप से सचेत रहना चाहिए अन्यथा न्यूनाधिक रूप से ऐसी घटना जीवन में घट सकती है लेकिन उससे कोई विशेष हानि नहीं होगी। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया अपना सांसारिक जीवन सुख पूर्वक ही व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा यह गुण आपको पैतृक एवं पारिवारिक संस्कारों से प्राप्त होगा। धार्मिक कार्य कलापों को आप श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न करेंगी तथा दैनिक पूजा या पाठ आदि में भी तत्पर रहेंगी। यद्यपि युवावस्था में दैनिक पूजा या ध्यान करने में असमर्थ सी रहेंगी परन्तु ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था विद्यमान रहेगी। साथ ही आध्यात्मिक तथा ध्यान योग के प्रति भी रूचिशील रहेंगी तथा उपरोक्त विषयों के ग्रंथों का रूचि पूर्वक अध्ययन करेंगी। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी तथा ज्यौतिष आदि शास्त्रों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा इनका न्यूनाधिक ज्ञानार्जन में भी रूचिशील रहेंगी इसके अतिरिक्त आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां भी सत्य सिद्ध होंगी।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगी तथा इसके द्वारा समाज में इच्छित मान सम्मान तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की भी आप यात्रा करेंगी जिससे आपको ज्ञान तथा लाभ अर्जित होगा। वैदिक साहित्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा वृद्धावस्था में अपना अधिकांश समय भगवत भजन में व्यतीत करेंगी आप अपने परिश्रम एवं सौभाग्य से वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में भी समर्थ रहेंगी।

पौत्रों के द्वारा आपको इच्छित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के द्वारा इस जीवन में सुख एवं वैभव अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप दीनों की सहायता करने वाली, दानी, सर्व अलंकरों से युक्त तथा अतिथि सेवा में तत्पर रहकर धार्मिक प्रवृति का अनुपालन करती हुई अपने जीवन को आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने की इच्छुक होंगी तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगी जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्याख्याता, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासानिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा या ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगी। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहती हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकती हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ रहेंगी तथा अन्य क्षेत्रों में भी सौभाग्यशाली रहेंगी। माता के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित मात्रा में धन लाभ प्राप्त करेंगी या वे किसी उद्यम आदि में आपको किसी प्रकार का सहयोग प्रदान कर सकती है। साथ ही आप जल से उत्पन्न पदार्थो के द्वारा यथा रत्न या वस्त्र आदि के व्यापार अथवा कार्य से धनार्जन करेंगी। यदि आप कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त आय स्रोतों से आपके पति लाभ अर्जित करेंगे। इस प्रकार स्वपरिश्रम एवं सौभाग्य से अपनी आकाक्षांओं तथा इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ होंगी।

आपकी कुंडली के अनुसार ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से आपको इच्छित सहयोग लाभ एवं स्नेह की प्राप्ति होगी साथ ही माताजी से भी आप वांछित स्नेह एवं सुख की प्राप्ति होगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा मित्र मंडली में आदरणीया रहेंगी। आपके सभी मित्र गुणवान शिक्षित तथा बुद्धिमान होंगे। अवस्था के साथ साथ सभी सामाजिक जनों एवं मित्रों के प्रति आपके मन स्नेह एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होगी तथा उन सबकी सेवा एवं सहायता के लिए तत्पर रहेंगी। परिवार के प्रति आपके मन में पूर्ण आकर्षण रहेगा तथा अपने अधिकाशं समय को पारिवारिक जनों के मध्य ही व्यतीत करेंगी। साथ ही अपने क्षेत्र एवं समाज में आपकी प्रसिद्धि रहेगी। जीवन में आपको कोई विशिष्ट सामाजिक सम्मान भी प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सपरिवार सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी कार्य क्षेत्र की उन्नति में सुदृढ़ता रहेगी तथा भूमि से उत्पन्न उत्पादों के द्वारा आपको वांछित लाभ होगा। आप शीघ्रातिशीघ्र धनवान होने की कामना करेंगी। अतः इस उददेश्य की पूर्ति के लिए आप अथक परिश्रम करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यंत ही सतर्कता का परिचय देंगी तथा पैसा कहां से आकर कहां जा रहा है इसका आपको पूर्ण ध्यान रहेगा। साथ ही अत्यधिक सोच विचारकर आप व्यय करेंगी इस प्रवृति से आप पूंजी निवेश में अधिक धन लगाएंगी जिससे अनुकूल बचत भी बनी रहेगी। आप मध्यमवस्था तक समाज के समक्ष अपने आपको एक धनवान महिला के रूप में स्थापित करने में समर्थ रहेंगी।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी एवं बैंक में आपका स्थान सम्मानीय रहेगा। आपके पास सामान्यतया कोई व्यसन नहीं होंगे तथा शौक भी विशेष नहीं रहेगा। अतः आपका व्यय उचित एवं अनुकूल मात्रा में होगा जिससे आर्थिक बचत बनी रहेगी। परिवार के प्रति आप अपनी पूर्ण जिम्मेवारी निभाएंगी तथा उनकी सुख सुविधाओं के लिए समय समय पर आवश्यक व्यय करती रहेगी साथ ही बच्चों के रहन सहन, खान पान तथा अन्य स्तर में भी वृद्धि करने में तत्पर रहेंगी।

आपको यात्रा करना रूचिकर लगेगा वैसे आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय रहेगी आपकी यात्राएं व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी। साथ ही यदा कदा भ्रमण या दर्शनीय स्थानों की सैर के लिए भी यात्रा करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में एक बार आपकी अवश्य ही विदेश यात्रा होगी जिसके प्रभाव से आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी तथा सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आप पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी मध्य, गण मनुष्य, वर्ण क्षत्रिय, वर्ग सर्प तथा योनि वानर होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "ध" या "धा" से प्रारम्भ होगा यथा- धनवती।

आपका जीवन सुख एवं समृद्धि से सदैव सुसम्पन्न रहेगा तथा जीवन में समस्त सुख संसाधनों का आप आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगी। समाज में अन्य लोगों के साथ आपका व्यवहार अत्यन्त ही शालीनता युक्त रहेगा जिससे सभी लोग आपसे सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। इसके साथ ही आपकी वाणी भी अत्यन्त ही मधुर होगी जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा यथोचित मान सम्मान को प्रदान करेंगे। आप एक निर्भय चरित्र की महिला होंगी तथा अन्य सामाजिक जनों के लिए एक उदाहरण रहकर धनधान्यादि से भी आप सुसम्पन्न रहकर इनका अभाव महसूस नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रकट करेंगी।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चत्रचद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आप एक सर्वमान्य बुद्धिमान तथा गुणवान पुरूष को पति के रूप में प्राप्त करेंगी जिससे आपका गृहस्थ सुख अत्यन्त ही उत्तम रहेगा। आपके मन में भेदभाव की भावना का सर्वथा आभाव रहेगा। अतः समाज के सभी वर्गो में आप सम्माननीय रहेंगी तथा लोकप्रियता को भी प्राप्त करेंगी। आप स्थिर मित्रता करना ही श्रेयकर समझेंगी । अतः आपके सभी मित्र बुद्धिमान तथा शिक्षित रहेंगे। इसके अतिरिक्त विपुल धनैश्वर्य की भी आप स्वामिनी रहेंगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आपके मन में दूसरे लोगों की भलाई करने की इच्छा की प्रबलता स्वभाविक रूप से ही विद्यमान रहेगी। अतः स्वजनों तथा संबंधियों के अतिरिक्त किसी अनजान व्यक्ति की भी भलाई करने में आप किसी प्रकार की आशंका नहीं करेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक उसे अपनी सहायता प्रदान करेंगी। इस प्रकार आपको समाज में हार्दिक सम्मान प्राप्त होगा।

आप एक भाग्यवती महिला भी सिद्ध होंगी तथा अधिकाँश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्पपरिश्रम से ही स्वतः सिद्ध होते रहेंगे जिसमें भाग्य का प्रमुख सहयोग रहेगा। आप की तीव्र बुद्धि रहेगी तथा विविध प्रकार के शास्त्रों के ज्ञान प्राप्त करने तथा कार्यों को सिद्ध करने में अत्यन्त ही निपुण होंगी जिससे लोग आपको विदुषी के रूप में आदरणीय मानेंगे।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप स्वभाव से सुशील रहेंगी तथा सभी स्त्रियोचित्त सद्गुणों से युक्त रहेंगी तथा जीवन में अधिकांश वैभव एवं ऐश्वर्य से सुशोभित रहेंगी। हृदय से आप हमेशा प्रसन्न रहेंगी तथा चिन्ता करने की सर्वथा उपेक्षा ही करेंगी। इसके साथ ही आप में स्वभाविक शान्ति भी होगी तथा विपत्ति काल में भी शान्ति एवं धैर्य के साथ सामना करने में सक्षम रहेंगी।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक प्रायः रोगी धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में दुःख प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुडंली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। आप जलोत्पन्न पदार्थो से नित्य लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। आप धनवान महिला होंगी तथा चल अचल सम्पतियों की स्वामिनी होंगी। विविध प्रकार के नवीन परिधानों से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में वाहन सुख को भी प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपको उचित सहायता तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। माता की आप प्रिय रहेंगी तथा आप भी उनको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगी। जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में सदैव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त जलक्रीङा में भी आपकी हार्दिक रूचि रहेगी।

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका कण्ठ तथा मुखभाग दीर्घ रहेगा तथा ओठ, कान तथा दान्त भी सुन्दर होंगे। एवं भुजाएं पुष्ट रहेगी। आप दानशीलता की भावना से युक्त रहेगी तथा समय के अनुसार अपनी इस प्रवृति का समाज में अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करती रहेंगी। लेखन कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा

काव्यलेखन में आप ख्याति अर्जित कर सकेंगी। आप एक उत्तम श्रेणी की वक्ता होंगी तथा अपने ओजस्वी भाषणो से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अतः शारीरिक बल का आप में अभाव नही रहेगा। साथ विभिन्न प्रकार के कार्यो को सम्पन्न करने में भी आप अपनी बुद्धिमता का परिचय देंगी। आप चित्रकला के प्रति विशेष रूचि रखेंगी तथा इसमें विशेष योग्यता को अर्जित करेंगी। आप का स्वभाव गम्भीरता से भी युक्त रहेगा तथा धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा भाव रहेगा फलतः धर्म की आप अच्छी ज्ञाता होंगी। अपने बन्धुवर्ग से आप के सामान्य संबंध रहेंगे। आप प्रेम एवं स्नेह से किसी भी कार्य को प्रसन्नतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए तत्पर रहेगी परन्तु दबाव या बलपूर्वक आपसे कुछ भी नही करवाया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्वाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपके नेत्र सुन्दर एवं गोल आकृति के रहेंगे तथा हाथ एवं कन्धों में भी दीर्घता का आभास होगा। आपका वक्षस्थल विस्तृतता को प्राप्त होगा। अवस्था के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव आ सकता हैं। आप नदी या जल के किनारे निवास करने या घूमने के लिए अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा ऐसे अवसर प्राप्त करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील भी रहेंगी। आप गूढ़ से गूढ़ विषयों का ज्ञान आसानी से प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगी तथा सामान्यतया प्रसन्नता से ही रहने की कोशिश करेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके प्रति कृतज्ञता का भाव अवश्य ही प्रकट करेंगी तथा उनका हार्दिक आभार भी मानेंगी।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक परिश्रमी महिला होंगी तथा नित्य अपने कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। आप में वाक्चातुर्य की प्रधानता रहेगी तथा इसी गुण से अपने अधिकाँश कार्यो में सफलता अर्जित कर सकेंगी। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल इसका पालन भी करती रहेंगी। आपका शारीरिक कद भी मध्यम रहेगा। साथ ही आप शूरवीर एवं साहसी महिला भी होंगी। शत्रुओं को पराजित करने में आप हमेशा सफल रहेंगी तथा शत्रु भी आपसे हमेशा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी तथा धनाढ्य लोगों के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा इनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप विभिन्न प्रकार की कलाओं में भी प्रवीणता का प्रदर्शन करेंगी तथा स्वभाव से विनम्र तथा सुशील होंगी। आप एक सदाचारी महिला होंगी जो अन्य जनों के लिए अनुकरणीय रहेंगी। आप अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करेंगी जिससे अन्य जन आपकी स्पष्टवादिता से प्रभावित होंगे। इसके साथ ही आप अपनी आय को देखकर ही सोचविचारकर व्यय करेंगी फलतः अनावश्यक आर्थिक संकट से सुरक्षित रहेंगी।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के सामान्यतया सभी अंग सुन्दर एवं सुडौलता को प्राप्त रहेंगे तथा अपने कुल अथवा परिवार में श्रेष्ठ एवं सम्माननीय समझी जाएंगी तथा सभी परिवारिक जन आपको यथोचित सम्मान तथा स्नेह प्रदान करेंगे। चित्रकला के क्षेत्र में आप आशातीत सफलता प्राप्त कर सकती हैं।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप स्वभाव से ही निर्भय होंगी तथा जीवन में सत्य का पालन करने के लिए सदैव यत्नशील रहेंगी। आप स्थिर कार्यों को करने के लिए ही उत्सुक रहेंगी। समाज में अन्य लोगों के प्रति आपके मन में स्नेह तथा आदर का भाव ही विद्यमान रहेगा। आप गुणवान तथा बुद्धिमान पुरुष की पत्नी होने का गौरव प्राप्त करेंगी तथा जीवन में सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगी। साथ ही आप की वाणी भी कर्णप्रिय रहेगी। आपका शरीर स्थूलता से भी युक्त रहेगा

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप सर्वप्रकार के गुणों से सुशोभित होकर समाज में पूर्ण रूपेण आदरणीय तथा सम्माननीय रहेंगी। आपके मन में ब्राहमण देवता तथा गुरुजनों के प्रति अत्यन्त ही श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा जिसका आप समय समय पर पालन भी करती रहेंगी। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करेंगी। लेकिन सहनशीलता का आप में अभाव रहेगा। अतः यदा कदा इससे आप को कष्ट की अनुभूति भी होगी।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरुपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।

बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति से युक्त रहेंगी। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समयानुसार आप इनका पूजार्चन करती रहेंगी। यदा कदा आप बिना किसी कारण के ही उत्तेजित हो जाएंगी तथा छोटी छोटी बातों में अभिमान का प्रदर्शन करेंगी। मन से आप दयालु रहेंगी तथा शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी। साथ ही आप अन्य कलाओं के क्षेत्र में भी पूर्ण ज्ञान रखेंगी। आप अत्यन्त बुद्धिमती महिला होंगी तथा शरीर की कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। आपके द्वारा अन्य कई लोग भी सुख को प्राप्त करेंगे।

आप देखने में अत्यन्त ही सुन्दर होंगी तथा दानशीलता का भाव आपके मन में सर्वदा विद्यमान रहेगा एवं अवसरानुकूल आप दीन दुःखियों की सहायता करती रहेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए यत्नशील रहेंगी अनावश्यक भौतिकता आपको पसन्द नहीं रहेगी। इसके अतिरिक्त आप उच्चकोटि की विदुषी होंगी तथा समाज में आप का इस रूप में उचित आदर सत्कार होता रहेगा।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति में कभी कभी चंचलता का प्रभाव रहेगा। आपको मीठा खाना अत्यन्त ही प्रिय लगेगा। अतः इसके लिए आप यत्नशील रहेंगी। धन सम्पत्ति के प्रति आपके मन में आसक्ति अधिक रहेगी तथा इसे प्राप्त करने के लिए व्याकुलता का भी प्रदर्शन करेंगी। कभी कभी आपका अन्य जनों के साथ में परस्पर विवाद भी सम्पन्न होगा। कामभावना की प्रबलता भी आप में रहेगी। साथ ही आपकी सन्ततियां गुणवान एवं बुद्धिमान रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक शूरवीर तथा साहसी महिला होंगी तथा साहस पूर्वक विषम परिस्थितियों का मुकाबला करेंगी एवं अन्ततः उनका समाधान करने में सफल सिद्ध होंगी।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का

लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा अरिष्ट फल दायक हैं।

अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान से 16000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप घर के बाहर जाकर साधवी बनना चाहो तो साधवी न बन कर जागीरदार बनेंगी। आपको बड़े-बड़े कामों से धन मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के कामों से लाभ मिलेगा। सुख की नींद सोएंगी। नौकरी-व्यापार में शुभ फल मिलेगा। आपके ऊपर बुजुर्गों का आशीर्वाद मिलेगा। आपके मकान में रौनक रहेगी। आप अंतिम समय में भी सुख से समय बिताएंगी। आध्यात्म और ध्यान मार्ग में सफलता मिलेगी। गुप्त विद्याओं में रुचि, विदेश संबंधी कामों से लाभ मिले या विदेश में निवास का योग है। आटा या चक्की के कामों से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आपकी बिना आंगन के मकान में रिहाईश होगी, नीच या विधुर पुरुष से संबंध होंगे, अमानत में खयानत की, बिजली का सामान मुफ्त लिया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आप अधम, नेत्र रोगी, दिमागी खराबी, आग की तरह जलते रहने वाली होंगी। आंखों की रोशनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आप काली चीजों लकड़ी, बिजली के काम से संबंधित नौकरी-व्यापार में नुकसान उठाएंगी। आपको मैकेनिकल काम से भी नुकसान होगा। मकान बनवाने, लोहे, तेल, राशन, कच्चे कोयले के काम में भारी नुकसान होगा। नीच या विधुर पुरुष से आपका संबंध रहने से आपकी और बुजुर्गों की संपत्ति का नाश होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. किसी की अमानत में खयानत न करें।

उपाय :
1. भूरी चीटियों को त्रिचौली डालें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा चौथे घर में है। आपका भाग्य को जगायेगा। आपको जमीन, जायदाद, भवन और वाहन का उम्दा सुख मिलेगा। पैतृक कारोबार से लाभ होगा। आपको कपड़े के व्यवसाय से लाभ होगा। आपको माता-पिता का पूर्ण सुख मिलेगा। बुढ़ापा सुखपूर्वक गुजरेगा। पैतृक संपत्ति अवश्य प्राप्त होगी। सरकारी खर्चे से विदेश की यात्रा करेंगी। आपके पास धन का दरिया होगा जितना खर्च करेंगी उतना ही धन बढ़ेगा। माता/सास और लोगों की सेवा करने से माया का दरिया समुद्र बन जाएगा। आपकी उम्र लंबी होगी आपके पास कोई व्यक्ति अमानत रखे तो लेने के लिए वापस नहीं आएगा। पुत्र पैदा होने के बाद आपकी

हालत अच्छी हो जाएगी। आपकी सरकारी नौकरी या सरकारी ठेकेदारी करेंगी तो अच्छी दौलत मिलेगी। समुद्री सफर में भी लाभ प्राप्त होगा। माता/सास व पति दोनों से सहयोग प्राप्त होगा। आप राजसी ठाठ भोगेंगी। आपको बुजुर्गों का व्यापार बदलना हानिकारक होगा। आप न्यायमूर्ति या जज भी हो सकती हैं। अच्छी सलाहकार साबित होंगी और आप अपना कोई भी कार्य करने से पहले किसी की सलाह जरूर लेवें।

यदि आपने दूध-पानी बेचने का काम किया, माता/सास या बूढ़ी स्त्री से झगड़ा किया, दादा पिता के समय का कारोबार बदला, घर आये मेहमान की सेवा न की तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से यदि आप माता/सास को कष्ट देंगी और उसका विरोध करेंगी तो धन और मन की शान्ति खराब होगी। बुजुर्गों की संपत्ति नष्ट होगी। आप किसी का एहसान न मानेंगी, माता/सास को कष्ट देना या उसका विरोध करने से, वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। यदि आप बुजुर्गों का व्यापार बदलेंगी तो हानि होगी, दूध का बेचना या डेयरी फार्म के काम में हानि होगी और संतान सुख न होगा। मेहमानों की सेवा करने की बजाए उनसे कुछ धन सामान की आशा रखेंगी। यह आपके परिवार के लिए हानिकारक है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. माता/सास का विरोध न करें।
2. दूध-पानी मोल न बेचें।

उपाय :

1. शुभ कार्य शुरु करते या जाते समय पानी या दूध का कुंभ रखें।
2. घर में आये मेहमानों को दूध या मीठा पानी जरूर पिलायें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप न्यायप्रिय, साहसी, पशुपालक, व्यापारी होंगी। आपका स्वास्थ्य उम्दा रहेगा। अपनी किस्मत स्वयं बनाने वाली होंगी। आप अधिक लाभ प्राप्त करेंगी। आपके जीवन में आपकी 28वें वर्ष से लगातार 42वें वर्ष तक की आयु तक खूब धनागम होगा। आर्थिक दशा में राजा के समान होंगी। आपके भाग्य के कारण छोटी उम्र में ही पिता के घर धन का भंडार लग जायेगा। आपका व्यवसाय या नौकरी ऊंचे दरजे की होगी। आपको पुत्र-पौत्र का सुख मिलेगा। आपके जीवन में बुरा असर कम पड़ेगा। कई प्रकार से आमदनी का स्रोत होगा। अपनी कमाई से भूमि-भवन प्राप्त करेंगी। आपको शत्रुओं को दबा कर रखना पड़ेगा। आपको सुख-सुविधाओं की कमी नहीं रहेगी। फकीरी वेश-भूषा में रह कर भी आपकी आध्यात्मिक शक्ति अच्छी होगी।

यदि आपने माता-पिता, संबंधियों से झगड़ा किया, भाई-बन्धुओं से जमीन जायदाद के लिये मुकद्दमा किया, किसी से काम करवा कर उसका मेहनताना नहीं दिया तो आपका

मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से भाई-बंधुओं से जमीन-जायदाद, धन संबंधी झगड़े का भय रहेगा। अगर आपका चाल-चलन ठीक न रहे तो आमदनी होते हुये भी कर्जदार होंगी, संपत्ति बर्बाद होगी। आपके बच्चे झगड़ालू होंगे या परिवार में बच्चा गोद लेना भी पड़ सकता है। उसके आगे के जीवन में कुछ भी बुराइयां नहीं रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. भाई-बंधुओं पर भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :

1. जीजा-साला-भांजा या दोहता की सेवा करें।
2. मिट्टी के बर्तन में शहद या सिंदूर भर कर घर में रखें।

बुध

आपकी जन्म कुंडली के पहले खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपको ज्योतिष विद्या से लगाव रहेगा और आप पूर्णरूपेण इस विषय की ज्ञाता भी होंगी। आपको लाभ विदेश यात्रा या विदेश व्यापार से रहेगा। शिल्पकला, दस्तकारी से भी लगाव रहेगा। आपकी बुद्धि भी तेज होगी। आप द्विस्वभावात्मक प्राणी हैं। आप पर दूसरों का असर तेजी से पड़ता है। दो शत्रुओं के मध्य रह कर भी सुरक्षित रहेंगी। फलस्वरूप आप अच्छे कार्य एवं अच्छी बुद्धि से प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेती हैं। आप सामर्थ्य और शक्तिशाली महिला की पक्षधर हो कर उसे शक्ति प्रदान करती हैं। भयातुर धीरे-धीरे चलने वाली, मधुरभाषिणी, आकर्षक व्यक्तित्व की, अनेक रूपों वाली हैं। आप बातचीत करना पसंद करती हैं। आप कल्पना जगत की प्राणी हैं। हर महिला को अपना बना लेने की कला विद्यमान है। आपकी ऊंची बातें भाग्य बनाने में सहायक हैं। आपके मुंह से निकली बुरी बात का असर पड़ता है। आप के अंदर आन्तरिक शक्ति है एवं काम कला में प्रवीण हैं। आप दूसरों की परवाह नहीं करती हैं, स्वार्थपरायण, अपनी प्रशंसा चाहने वाली हैं।

यदि आपने नेकी का रास्ता छोड़ बदी का रास्ता अपनाया, अण्डे खाये, राग गाने का शौक रखा, शराब पी और मांस-मछली खायी, अधर्म के काम किये या जादू-टोना वशीकरण आदि विद्या में रुचि रखी तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपकी कुछ आदतें बुरी हैं। धीरे-धीरे सोच-समझ कर बोलने की आदत से बुद्धिमानी का प्रतीक बनेंगी। आप चलते-चलते या काम करते-करते बातें करना पसंद करती हैं। अकारण कंजूसी बरतना प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है। संतान सुख में बाधा की आशंका है। चमड़ी का रोग या पेट में खराबी रहेगी। जादू-टोना विद्या में रुचि रखने से धन-परिवार की हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. अंडा या अंडे बनी चीजें न खावें।
2. शराब-मछली का सेवन न करें।

उपाय :
1. धर्म-कर्म करें।
2. घर आये मेहमानों की सेवा जरुर करें।

गुरु

आपकी कुंडली के बारहवें खाने में वृहस्पति पड़ा है। जिसकी वजह से आप उत्तम ज्ञानी होंगी। आप दूसरों का भला करेंगी इससे आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आपका अधिक समय पूजा-पाठ में व्यतीत होगा और पूजा-पाठ से भी आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आपको धन से बहुत लगाव नहीं रहेगा आप त्यागी महिला होंगी। अपार धन आपके पास रहेगा मगर आप धन के पीछे नहीं भागेंगी। आपमें सेवा भावना रहेगी। आप ध्यान-समाधि की आदत डालें तो आपके घर सोने की वर्षा होगी। आप हृदय से वैरागी और ज्ञानी होंगी। आपका साधू जैसा स्वभाव होगा। आपका धन शुभ कर्म में खर्च होगा। आप खर्च के बोझ से दुःखी नहीं रहेंगी। बुरा कर्म आप नहीं करेंगी, यदि बुरे काम करने की प्रवृत्ति हुई तो बहुत नुकसान होगा। यदा-कदा औलाद के विषय में चिंता होगी। आप धन-दौलत के संबंध में राजा जनक की तरह त्यागी होंगी। गृहस्थ में हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। आपका परिवार बढ़ेगा, खुशहाल रहेगा। खुद भी निश्चिंत रहेंगी। आप किसी को आर्शीवाद दें तो उसको आपका आर्शीवाद फलेगा। पर आपका किसी को दुर्वचन नहीं लगेगा। दलाली का काम लाभकारी होगा।

यदि आपने जनता विरोधी कार्य किये, झूठी गवाही दी या किसी से धोखा फरेब किया, धन के लिये किसी के आगे हाथ फैलाने की आदत रखी तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आप दूसरों को सता कर स्वयं कष्ट और मुसीबत में पड़ जाएंगी। आप अधिक न बोला करें यह आपके लिए अच्छा नहीं है। आध्यात्म का मार्ग नुकसानदेह रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. ऐसे काम न करें जिससे आपका विरोध हो।
2. किसी के साथ धोखा-फरेब न करें।

उपाय :
1. गुरु/पिता-ससुर की सेवा करें।

2. पीपल को जल से सींचें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या संतान अधिक होगी। आपके पति दिखने में भोले-भाले परंतु काम धंधे में स्वभाव से अच्छे होंगे। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपके पति में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागती रहेंगी। आप भोले स्वभाव की महिला होंगी। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने की आदी हो जाएंगी। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगी। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहीं, चाल-चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य/हकीम से सलाह करके आयुर्वेद दवाई लेना लाभदायक रहेगा)। आपके पति के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या पति द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा। सरकार द्वारा दंड-जेल यात्रा का भय, चाल-चलन आपका शक्की होगा। आप यदा-कदा मूर्खता भी कर बैठेंगी। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. पति को घर का खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार बार-बार न बदलें।

उपाय :
1. पति से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि तीसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप स्वस्थ, विद्वान, विवेकी और खर्चीले स्वभाव की होंगी। धन की कमी नहीं रहेगी। आपके पास बहुत धन आएगा। आप पराए लोगों की मदद करेंगी। आपको चोरी और धन नाश के लिए सतर्क रहना चाहिए। आप सबकी मदद करेंगी मगर वह व्यक्ति दूसरों का काम बिगाड़ेगा, और खुद आराम पाएगा। आपके जीवन में अड़चने भी पैदा हो सकती हैं। आप साहसी होंगी। भाई-बहन से सामान्य सुख के आसार हैं। आप दुःसाहस करने में भी बाज नही आएंगी। लोहा/मशीनरी से संबंधित कामों से धन लाभ होगा।

यदि आपने चोरी-ठगी की, घर का मुख्य दरवाजा पूर्व या दक्षिण दिशा में हुआ, दूसरे लोगों के काम बिगाड़े तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से शराब पीना, मांस खाना अच्छा फल नहीं देगा। नगद धन का अभाव रह सकता है। नर संतान को कष्ट की आशंका है। आपकी आंखों की नज़र कमजोर हो सकती है। छोटे भाई से दूरी या उसका सुख न होगा। भाई-बंधु आपकी नेकी को भूल जाएंगे। चोरी-ठगी करने पर भी धन की कमी रहेगी। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। मकान बनाने में बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मछली का सेवन न करें। मछली का शिकार न करें।
2. कीकर-बेरी का वृक्ष घर में न लगावें।

उपाय :

1. तीन कुत्तों को भोजन का हिस्सा देवें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी बनावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान तथा श्रेष्ठ शासनाधिकारी होंगी। अगर सरकारी अधिकारी हुईं तो राजदरबार में आपका बहुत सम्मान होगा। आपके ननिहाल वाले आपके जन्म के बाद अमीर होंगे। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में हुआ होगा, या आकाश पर बादल छाये होंगे ऐसी आशंका है। 42 वर्ष की उम्र तक समय मध्यम रहेगा, जो कुछ भी बुरा हुआ होगा, इसके बाद बहुत अच्छा और शुभ रहेगा। आपका जन्म जिस घर में होगा उस घर के सामने के घर में उजाड़ हो जाएगा। आपकी रोजी-रोटी के लिये दूसरा काम भी चालू रहेगा। यदि एक काम या नौकरी छूटेगी तो दूसरी नौकरी या व्यवसाय चालू हो जाएगा। आप धनी होंगी। आपको संतान सुख अवश्य मिलेगा अच्छी या बुरी। आपके लिए हर समय बोलते रहना अच्छी बात नहीं है। आपमें बेईमानी और धोखेबाजी की आदत भी विद्यमान रहेगी। जीवन में कई परिवर्तन आएंगे। माता/सास और मन की शांति के लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने विवाह के बाद पिता से लोहा, बिजली का समान, काले-नीले कपड़े मुफ्त या दान में लिये, मकान के आंगन में धुआं किया, बिल्ली के जेर चमड़े के पर्स में रखी तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके बनते कामों में रुकावट, तरक्की कम मगर बदला-बदली अधिक बार होगी। 11-21-42 वर्ष आयु में पिता/ससुर के लिए समय अशुभ, परिवार में किसी को दमा-मिरगी का रोग हो सकता है। आप शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव की होंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और

उपाय करें।

परहेज :
1. आंगन में धुआं न करें।
2. पेट मोटा न हो, विशेष ध्यान रखें।

उपाय :
1. धर्म स्थान में गुड़-गेहूं दान करें।
2. दूध से स्नान करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप 24 वर्ष की उम्र से ही धन कमाने में जुट जाएंगी। जैसे-जैसे आपकी संतान की उम्र बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे धन में बढ़ोत्तरी होती जाएगी। आजीविका का साधन बना रहेगा। रोजगार द्वारा अच्छी कमाई होगी। आपकी संतान बलशाली होगी। आप अपनी बात की पक्की होंगी। आप सब तरह से सुखी और संपन्न रहेंगी फिर भी पश्चात्ताप करते ही रहेंगी। आपकी संतान शेर का मुकाबला करने वाली होगी। आपके पति के जितनी संख्या में भाई-बहन होंगे उतनी ही संख्या में आपकी संतान होंगी। 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। परंतु इसके बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। धनधान्य में बरकत होगी। 24 साल की उम्र में इतना धन आएगा जो कि 40 वर्षों तक आने वाले समय के लिए काफी होगा। आपके दुश्मन आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे। दुश्मन अपने आप तबाह हो जाएंगे। जीवन में कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपने हर समय लिखने का काम किया, झूठा वायदा किया, परपुरुष गमन किया। अपने पति से झगड़ा किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 7 वर्ष तक ननिहाल की हालत खराब, 34 वर्ष बाद सुख नष्ट होना शुरु हो जाएगा। झूठ बोलना, झूठा वायदा करना आपको अवनति देगा। शरीर में दर्द या बीमारी होगी। आपकी संतान पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपका मन पति और पुत्र के संबंध में अशांत रहेगा। आप अपनी जुबान से गंदी बातें बोलेंगी। आप अभिमान के कारण बर्बाद हो जाएंगी। किसी को दिया गया आश्वासन पूरा न करना आपके लिए हानिकारक होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. परपुरुष से अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का अधिक काम न करें।

उपाय :
1. 4 केले 4 दिन जल में प्रवाह करें।

2. 4 नीबू 4 दिन जल में प्रवाह करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि सप्तम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुनवम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि दशम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि एकादश भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि दशम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में आपको कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी। अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरुएवं शनि ग्रह अनुकूल स्थान में होना चौमुखी विकास के संकेत हैं। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्षारम्भ में आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर भी खर्च करेंगे।

मई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों एवं रिश्तेदारों के यहां मांगलिक कार्यों में आपके धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मई के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

पंचम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य व परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे।

यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा। अप्रैल के बाद आपके बच्चे उन्नति करेंग। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरुकी पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी, जिससे स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद सप्तम स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उस समय स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। स्वस्थ शरीर के लिए अनुशासित दिनचर्या व उचित खान-पान ग्रहण करें साथ ही व्यायाम करना भी लाभदायक होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थी मनोनुकूल उपलब्धि प्राप्त करेंगे।

मई के बाद राहु ग्रह का गोचर छठे स्थान में होगा उस समय प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी एवं नौकरी भी मिल सकती है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में गुरुग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए उन्नतिकारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

14 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है या पूरे परिवार साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द उठाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरुके कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरुके द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे।

- नित्य स्नानादि के निवृत होकर सूर्य को अर्घ्य दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ का करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप सामान्यतया कष्ट से व्यतीत करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा अन्य ओर से भी कष्ट प्राप्त होंगे। इस मास में आपके शत्रु प्रबल रहेंगे। अतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी फलतः मानसिक रूप से आप परेशान तथा अशान्त रहेंगी। इस समय पारिवारिक जनों से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में मन मुटाव रहेगा। आपके व्यापार या कार्य क्षेत्र में भी इस समय व्यवधान आएंगे तथा उन्नति मार्ग भी अवरूद्ध होगा। इस मास आपके स्थान परिवर्तन की भी संभावनाएं रहेंगी साथ ही कोई अस्थाई कार्य भी छूटेगा। सामाजिक जनों से आपका वैमनस्य का भाव अधिक रहेगा अतः सामाजिक सम्मान में अल्पता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग भी उत्पन्न होंगे तथा धन भी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप अशान्त एवं दुःखी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप ठंड या वातोत्पन्न रोगों से अस्वस्थ रहेंगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे समाज में आपके सम्मान में कमी आएगी तथा बाद में आपको पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी कोई हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक एवं बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा। अतः शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप बुद्धिमता से सम्पन्न करने में सफल रहेंगी।साथ ही पुत्र से आप सुख प्राप्त करेंगी एवं अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। समाज में भी आपकी प्रभुता में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं आपको हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। इस मास आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे तथा किसी शुभ समाचार की प्राप्ति भी होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं निष्ठा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय एवं सहयोग प्राप्त करेंगी फलतः समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त मानसिक चिन्ताओं से भी आप मुक्त रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों या ठंड से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपकी समाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके साथ ही आग के द्वारा किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शारीरिक दुर्बलता बनी रहेगी। साथ ही शत्रु पक्ष से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी जिससे मानसिक रूप से उद्विग्न तथा अशान्त रहेंगी। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा दंड मिलने की भी संभावना रहेगी। इस समय आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से आप कष्ट प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए प्रवृत होगी जिसके लिए बाद में पश्चाताप करेंगी। साथ ही मित्रों एवं संबधियों से भी मधुर संबध नहीं रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज से भी आप अपने को उपेक्षित समझेगी एवं आपकी आशाएं भी इस मास में अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी होंगे। अतः आप पति एवं पुत्र का वांछित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति कर सकती हैं। इससे आप अल्प मात्रा में मानसिक रूप से सन्तुष्टि एवं शान्ति की अनुभूति कर सकेंगी।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथा कई प्रकार से परेशानियां भी होगी। इस समय आप पति तथा अन्य बन्धुजनों से कष्ट प्राप्त करेंगी साथ ही आपके शत्रु भी बलवान रहेंगे जिससे उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके उत्साह के भाव में अल्पता आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः शारीरिक रूप से भी आप काफी अस्वस्थ रहेंगी तथा शरीर निर्बलता से युक्त रहेगा। इस समय आपके मन में लोभ के भाव की भी अधिकता रहेगी। मित्रों तथा बन्धुवर्गो से संबधों में तनाव उत्पन्न होगा तथा सभी मित्र शत्रु की तरह आपसे व्यवहार करेंगे जिससे आप मानसिक रूप से भी अशान्त एवं उद्विग्न रहेंगी। समाज में भी अन्य जनों से वाद विवाद या संघर्ष की स्थिति रहेगी जिससे समाजिक सम्मान में अल्पता आएगी। अतः सावधानी तथा बुद्धिमतापूर्वक इस समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पितोत्पनन रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी तथा रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। इस समय आप अग्नि द्वारा भी किसी प्रकार क्षति प्राप्त करेंगी। अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ सिद्ध होगा।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अधिकाशं अशुभ फल प्राप्त करेंगी परन्तु शुभफल भी न्यूनाधिक अवश्य ही घटित होंगे। इस समय आप शत्रुवर्ग से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी तथा घर में

किसी प्रकार की चोरी की घटना भी हो सकती है। इस मास में आपका धन व्यय अधिक होगा अतः आर्थिक रूप से आप कमजोर होंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी फलतः शरीर में भी दुर्बलता रहेगी। इस मास में आप दूर समीप की किसी प्रकार की यात्रा भी कर सकती हैं। साथ ही अपने सांसारिक कार्यों को पूर्ण करने में आप असमर्थ रहेंगी फलतः मानसिक रूप से आप अत्यंत ही चिन्तित तथा उद्विग्न रहेंगी इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक इस मास को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी होते रहेंगे। अतः आप पति का पूर्ण सुख अर्जित करेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होगा। इस समय आप की बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा धन लाभ एवं सुखार्जन करने में भी आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी कीर्ति में भी वृद्धि होगी।

जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आप किसी सम्मानित पद को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा सरकार या अधिकारी वर्ग से भी लाभ एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी इस समय आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। साथ ही पति एवं पुत्र से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस मास में समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकांश भाग्योदय सम्बन्धी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी तथा दूर समीप की लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी। इस प्रकार इस समय आपकी सर्वत्र यश तथा सम्मान में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी एवं उनमें लाभ अर्जित करके सुखानुभूति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी असीम श्रद्धा रहेगी। इस प्रकार इस महीने को आप अत्यंत ही सुख एवं आनंदपूर्वक व्यतीत करेंगी।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में पूर्ण सफलता अर्जित करेंगी। साथ ही आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे अतः आप पदोन्नति भी प्राप्त कर सकती हैं। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा

सहयोग अर्जित करेंगी तथा उनकी भलाई के लिए भी तत्पर रहेंगी। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा शान्त रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस मास में समाज में आपके प्रभुत्व तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपके यश में भी विस्तार होगा साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभ योग बनते रहेंगे। इस समय आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त विगत असफल अशाओं में भी आप सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा पुरूषवर्ग से भी लाभ हो सकता है। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ या सुखार्जन करने में सफल रहेंगी तथा धर्म में आपकी श्रद्धा रहेगी एवं समाज में यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। सौभाग्य से युक्त हो कर आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगी। साथ ही उच्चाधिकरी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त होता रहेगा। इस मास आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अध्ययन या ज्ञानार्जन में आप रूचिशील रहेंगी तथा इसको प्राप्त करने में सफल भी रहेंगी। मित्रों तथा संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इस समय आप वांछित द्रव्य पदार्थो को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। सन्तति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा तथा उनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगी। इस मास में समाज में आपके पराक्रम एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी तथा आपकी विगत असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप शान्त एवं प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग के आश्रय से आप उन्नति करेंगी। इस समय आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न कर सकती हैं तथा पति से पूर्ण सहयोग, नवीनवस्त्रों की प्राप्ति तथा अन्य प्रकार के सुखों को अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगी। अतः यह मास आपके लिये अत्यंत ही सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगी। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक कष्ट आपको होते रहेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में अत्यन्त ही परिश्रम तथा पराक्रम से अल्प

मात्रा में सफल हो सकेंगे। धर्म के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती हैं। आपके संबधियों तथा मित्रों से मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आजीविका संबधी कार्यों में भी इस मास में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे।शत्रुपक्ष से भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इस समय जिस कार्य को आप प्रारंभ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी जिससे मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट तथा अप्रसन्न रहेंगी।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ आप को यदाकदा शुभफल भी प्राप्त होंगे। इससे आप पति का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धि बल से सम्पन्न हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप किसी धार्मिक आचरण करनेमें भी सफल हो सकती हैं।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में सुख एवं प्रसन्नता अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक समय को व्यतीत करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग आपसे पराजित एवं भयभीत रहेगा। साथ ही विविध प्रकार से आय स्त्रोतों में वृद्धि होगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से लाभार्जन भी कर सकेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। सामाजिक जनों तथा मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप उचित सहयोग तथा सम्मान अर्जित करने में सफल रहेंगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में भी सफल सिद्ध होंगी। इस मास में आप सौभाग्य शाली रहेंगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी समय सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो को पूर्ण करने में भी आप सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त किसी धार्मिक कार्य को भी आप इस समय सम्पन्न कर सकती हैं। साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे आप यथोचित सहयोग एवं सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अधिकाशं रूप से शुभ फलों को ही प्राप्त करेंगी तथापि अल्प मात्रा सें अशुभ फल प्राप्त होंगे। इस समय आप अपने उत्साह एवं पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। इस मास में समाज बन्धु तथा मित्रों के मध्य भी आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा इनसे आपके संबध भी मधुर रहेंगे। साथ ही इनसे वांछित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित सहयोग तथा सम्मान अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप मिष्ठान का उपभोग इस मास में अधिक मात्रा में करेंगी

परन्तु स्वास्थ्य मध्यम ही रहेगा। इस मास में शत्रु वर्ग को पराजित तथा भयभीत करने में आप सफल मानी जाएंगी। साथ ही पति से भी आप मनोवांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त व्यापार या अन्य कार्यो के द्वारा भी आप धनार्जन करने में समर्थ रहेगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगी।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी होंगे। अतः आप गर्मी या पित्तोत्पन्न रोगों से शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगी तथा किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा अपने कार्य कलापों को भी सावधानी पूर्वक सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा अन्य प्रकार से भी सुखोपभोग करने में सफल सिद्ध होंगी। साथ ही समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगी। अन्य लोगों की भलाई के लिए भी कार्यो को करने के लिए आप तत्पर रहेंगी। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय भी प्राप्त करेंगी जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी। इस मास भाई बहिनों का आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपसी संबध भी मधुरता से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय में पूर्ण होंगे जिससे आप हृदय से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र द्रव्य या स्वर्णादि के आभूषणों को भी प्राप्त कर सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक सिद्ध होगा।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।02 जूनके बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने है। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहींरहेंगे। वर्ष के पुर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगीपरन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्य र्थियो के लिए समय अच्छा है। तकनीकि शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएंहोती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्राद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी जिससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करती रहेंगी। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। साथ ही मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगी। इस मास में आपकी नौकरी या व्यापार में मंदी आयेगी तथा अनावश्यक बाधाएं भी उत्पन्न होंगी जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान होंगी। इसके साथ ही आपका कोई जीविका संबधी कार्य बंद होगा या उसमें कोई परिवर्तन होगा। समाज में लोगों से भी आपके विवाद तथा संघर्ष होते रहेंगे अतः आपके सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि एवं शरीर में किसी रोग के उत्पन्न होने की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में आप ठण्ड या बात से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे बाद में पछताना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि द्वारा भी आपको किसी प्रकार की हानि पहुँच सकती है। अतः इस मास में सोच समझकर अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में वृद्धि होगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगी। सन्तति पक्ष से आपको इस मास में पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ की भी संभावना बनेगी। आपके प्रभुत्व को इस समय सभी लोग स्वीकार करेंगे तथा हार्दिक सम्मान भी प्रदान करेंगे। साथ ही अच्छे समाचार आपको मिलेंगे। इस समय आपके सभी सांसारिक कार्य पूर्णतया सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा निष्ठा पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा एवं इनसे धनार्जन भी प्रचुर मात्रा में होगा।आपकी महत्वपूर्ण आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्रों से भी पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्र या स्वर्णादि के आभूषण भी प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अतः यह माह आपके लिये अत्यंत शुभफलदायक रहेगा तथा आप सुख पूर्वक इसे व्यतीत करेंगी।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर से आप कमजोर रहेंगी। साथ ही शत्रुपक्ष के बलवान होने के कारण आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है। अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। इस मास में आप अपने उच्चाधिकारियों का पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करें तथा उनकी उपेक्षा न करें अन्यथा उनसे आप किसी प्रकार दंडित भी हो सकती है।आपके शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य इस मास में कम ही सफल होंगे तथा असफलता ही अधिक मिलेगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकती है जिसके बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। आपके बन्धु एवं मित्रों से इस समय संबध तनाव पूर्ण रहेंगे एवं मधुरता का अभाव रहेगा। साथ ही समाज में भी आपके सम्मान में कमी आएगी। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पित से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा रक्त विकार का भय भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आपको किसी प्रकार की क्षति या नुकसान हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक आप अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अल्प तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय पति या पुरूष वर्ग से आप कष्ट की अनुभूति करेंगी तथा शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनकी तरफ से भी नित्य भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में होगा।साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। जिससे आप मानसिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा धनाभाव की समस्या का भी सामना करना पड़ेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लालच की प्रवृति में वृद्धि होगी। फलतः सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से तनाव पूर्ण संबध होने के कारण उनसे भी आपको कोई सहयोग प्राप्त नहीं होगा तथा वे मित्र होकर शत्रु की तरह आपसे व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त आपका सामाजिक जनों से वाद विवाद भी होगा। अतः धैर्यपूर्वक समस्याओं का सामना करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप पति तथा बन्धुओं से सहयोग प्राप्त कर सकेंगी तथा अपनी बुद्धि के द्वारा महत्वपूर्ण कार्यो को भी सम्पन्न करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचि का प्रदर्शन करेंगी।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप मध्यम रूप से व्यतीत करेंगी तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों

को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा। अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। साथ ही धर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। इस महीने में आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट की अनुभूति करेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा ही रहेगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक एवं मानसिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी जिससे शरीर में दुर्बलता भी रहेगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्राएं भी कर सकती है। इस समय आपके सांसारिक कार्यो में व्यवधान उत्पन्न होंगे फलतः इनमें आपको अल्प सफलता ही प्राप्त होगी। इसके कारण आप मानसिक रूप से तनाव तथा अशान्ति का अनुभव करेंगी। इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमता पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की अभिवृद्धि होगी जिसके कारण महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त धन भी आप प्रचुर मात्रा में अर्जित करेंगी तथा धर्मानुपालन में प्रवृत रह कर समाज में यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में न्यूनाधिक सफल रहेंगी।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अतः आपका धनार्जन पूर्ण मात्रा में होगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग तथा सामाजिक लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। सन्तति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित होता रहेगा। आपकी बुद्धि में इस मास निर्मलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही समय आप यात्रा से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको सम्मान प्राप्त होगा तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप वांछित सहयोग अर्जित करेंगी एवं उनसे आपके मधुर संबध रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वत्र सम्माननीया रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख अर्जित करेंगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। इस प्रकार समस्त सुखों से युक्त होकर आप समाज से यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आप प्रोन्नति

भी प्राप्त कर सकती है। मित्रों एवं बन्धुओं से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी तथा उनके कल्याण संबधी कार्यो में भी तत्पर रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके साथ ही अन्य साधनों द्वारा भी आप धनार्जन करेंगी तथा अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं को इस समय पूर्ण करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा अपने शुभ कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में यात्रा के द्वारा भी लाभ प्राप्त करेंगी। इस समय आपको नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या स्वर्णाभूषणों की उपलब्धि भी हो सकती है।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी तथा पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप इच्छित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगी। बन्धुवर्ग एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको उचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही वे आपको अपना पूर्ण सहयोग भी प्रदान करेंगे। इस समय आप वांछित द्रव्यों को प्राप्त करेंगी एवं उनके उपभोग से सुखानुभूति प्राप्त करेंगी। संतति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगी तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप पति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा उनसे आपको अपेक्षित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा वांछित धन लाभ तथा सुख अर्जित करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आपको समाज से पूर्ण सम्मान तथा यश प्राप्त होगा एवं धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका व्यय अधिक होगा तथा दुष्ट व्यक्तियों से आपका मेल जोल रहेगा जिससे आप कष्ट प्राप्त करेंगी ।साथ ही धनाभाव की समस्या भी उत्पन्न होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आप बैचेन तथा अशान्त रहेंगी। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यधिक परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के

प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि के योग बन सकते है। इस मास में आपके मित्र तथा बन्धुवर्ग से अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे। शत्रु पक्ष से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारंभ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। फलतः कष्ट पूर्वक आप इस मास को व्यतीत करेंगी।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इस समय पुरूष वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगी तथा आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी आप इस मास में कर सकेंगी।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आाप शारीरिक रूप से सामान्यतया स्वस्थ रहेंगी तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। आपके आय स्त्रोंतो में इस समय उन्नति होगी फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष दुर्बल रहेगा एवं आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेगा। इस समय आप अपने उच्चाधिकारी वर्ग से सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। अपने प्रमुख कार्य के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोंतो से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस मास में समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे।आपके सौभाग्य में भी इस समय वृद्धि होगी तथा कई विलम्बित महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक समय को व्यतीत करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। अतः आप यदा कदा गर्मी या पितदोष से उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय किसी किसी प्रकार का रक्त विकार भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त अग्नि के कारण भी कोई हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह से प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में सफल रहेंगी। सामाजिक जनों के मध्य इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही पारिवारिक लोगों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे उचित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा।उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सम्मान अर्जित करेंगी तथा आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होते रहेंगे। इस समय आपकी मिष्ठान्न भक्षण में भी अधिक रूचि रहेगी। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा

रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस मास में शत्रुपक्ष आपसे पराजित, भयभीत तथा चिन्तित रहेगा तथा व्यापार एवं अन्य कार्यो से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल सिद्ध होंगी। इस प्रकार आपका पारिवारिक जीवन भी सुखी तथा शान्त रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या स्वर्णादि के आभूषणों को भी अर्जित करने में सफल हो सकती हैं। अतः यह मास आपके लिये अत्यन्त ही शुभ एवं कल्याणकारी रहेगा।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फलों को भी प्राप्त करेंगी। इस समय आप स्व पराक्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगी तथा विभिन्न प्रकार से सुख का उपभोग भी करेंगी। सामाजिक जनौं के मध्य इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इसके साथ ही आप सामाजिक लोगों के परोपकार संबधी कार्यों को भी इस मास में सम्पन्न करेंगी। आपका स्वास्थ्य इस समय सामान्य रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपने महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगी। आपके मित्रों तथा बन्धुओं से इस समय मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे। अतः मानसिक रूप से आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ आप अशुभ फल भी प्राप्त करेंगी। अतः आप वात जनित या ठंड से उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी इसके अतिरिक्त आग द्वारा भी आपको किसी प्रकार की क्षति हो सकती है। अतः सोच समझकर सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्नकरेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़े क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रूका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गूरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रूकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध मे छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे । चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते है।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दुर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आ सकता है, परन्तु 17 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ बड़ी उपलब्धियां लेकर आएगा।

पूर्ण रूप से यह वर्ष आपके लिए हितकर ही रहेगा। कार्यस्थल में भी आपका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। जो लोग रोजगार के लिए परेशान है उन्हें जल्द ही सुखद समाचार मिलेगा। 23 सितम्बर से आप अपने काम को लेकर उत्साहित रहेंगे और अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास व मेहनत करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मनचाहा परिणाम मिलेगा। आपको केवल अपनी एकाग्रता बनाए रखनी है और फिर देखिए यह साल आपके लिए कितना लाभदायक होता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम नहीं रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल करने में आपका व्यय होगा परन्तु अप्रैल के बाद व्यापारिक अनुकूलता के चलते आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में भी सफल रहेंगे

गुरु एवं राहु की युति प्रभाव के चलते फरवरी से अप्रैल तक आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा। आने वाले महीनों में आपको निश्चित ही लाभ होगा। व्यवसायियों को व्यवसाय का विस्तार करने के लिए अवसर मिलेंगे। इस साल आप जमीन-जायदाद पर भी खर्च कर सकते हैं। यदि आप पिछले कई महीनों से घर लेने की सोच रहे हैं तो आप अपनी इस योजना को पूरा कर सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। राहु ग्रह

का गोचर आपके भाईयों के लिए भी अच्छा नहीं है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

01 मई से सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों पक्षों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। आपकी सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से अप्रैल तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

मई से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष की प्रारम्भिक तिमाही छोड़ दें तो पूरे वर्ष आप स्वस्थ रहेंगे। आप मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहेंगे अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आप नियमित रूप से व्यायाम या योगा करते रहेंगे जिससे आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहेगा।

कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें। 23 सितम्बर के बाद अपने खान-पान पर अधिक ध्यान दें और आलस्य न करें। यह आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 17 अप्रैल के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

01 मई से विद्यार्थियों का नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व टेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी यात्राओं

के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है। विदेश यात्रा के भी योग हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि पर ज्यादा विश्वास करेंगे। तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी।

बेरोजगार युवकों को अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 15 अक्टूबर के बाद आपको रोजगार सम्बंधित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्य की तरफ पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। हालाँकि जिस तरह के चपल और बुद्धिजीवी व्यक्ति आप है, इन चनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। 18 फरवरी के बाद आप भूमि, भवन एवं वाहनादि पर भी अच्छा निवेश करेंगे। इस समय के अंतराल में आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए। एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से परिजनों के स्वास्थ्य के ऊपर भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष कम अनुकूल है। द्वितीय स्थान के मंगल पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य

बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। आपके पिता के लिए समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। आपकी माता के लिए समय काफी शुभ है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपका सामाजिक स्तर बढ़ेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के शुरु में संतान के लिए समय अच्छा है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

9 अगस्त के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं। तो यह समय श्रेष्ठ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे। क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना एवं व्यायाम आदि।

यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है। इसलिए आपके लिए खास सलाह है कि आप एकाग्रता से अपने भीतर एक सशक्त भाव उत्पन्न करें और अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 18 फरवरी के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये सयम बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थार पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को भी चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं नवम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रहीहै। 5 मार्च से कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

12 अगस्त से व्यावसायिक स्तर आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक उन्नति में रुकावटें डाल सकते हैं। आय की राह में रोड़ा खड़ा करसकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं। 5 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है।धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

12 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप के सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान

होगा क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

द्वितीयस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किंचित परेशानी आ सकती है परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। 23 अक्तूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। 5 मार्च के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे परन्तु 5 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

12 अगस्त से आप प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। 23 अक्तूबर से आप अपनी दिनचर्या बहुत सशक्त रखेंगे और व्यायाम भी करेंगे जिससे अपने आपको आरोग्य व तंदरूस्त महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत शुभ है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरू करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

शनि के गोचर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 5 मार्च के

बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के चलते आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

23 अक्तूबर के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- तांबे के लोटे से प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष के प्रारम्भ के तीन माह श्रेष्ठ रहेंगे। आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। 18 मार्च के बाद दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। परन्तु व्यापारिक व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो आपका साझेदार धोखा दे सकता है। उसके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। आप अपने अनुभवों से खुद का विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इसमें आपको सफलता भी मिलेगा। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकती है।

8 अक्टूबर से मंगल ग्रह का गोचर आपके आय के स्रोत में बढोत्तरी करेगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। धर्मपत्नी के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा। 18 मार्च के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

8 अक्टूबर के बाद आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यह समय काफी शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। लोग आपका सम्मान करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है। जिससे कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप उनका तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाए रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 18 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न होती रहेगी। अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुदृढ़ रखें।

सारे ग्रह प्रतिकूल होने से आप अत्यधिक उद्वेग व मानसिक चिंता से ग्रस्त रहेंगे। शत्रुओं से सावधानी भी हितकारी रहेगी। मुख रोग, नेत्र विकार आपका शारीरिक कष्ट बढ़ा सकते हैं। अपने क्रोध, हठ, जिद व अहं भाव का त्याग करें। कार्य को स्वास्थ्य से अधिक अहमियत न दें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को और उत्तम बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 18 मार्च से समय आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

18 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि होने के कारण आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं एकादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय बहुत उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यवसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

जुलाई के बाद समय और भी ज्यादा अनुकूल हो रहा है। व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छा लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें और अपने कार्यों के प्रति दृढ़ संकल्पित रहें।

जुलाई के बाद एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे एवं तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख-सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। मार्च के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई-बहनों के लिए बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। फिर भी अपने बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिसके फलस्वरूप आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ्य महसूस करेंगे। फिर भी आपको अपने खान-पान पर संयम रखना चहिए। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। मार्च के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको जुलाई के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 28 मार्च से आप अपने जीवनसाथी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्रा भी आपको लाभ देकर जाएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 28 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, ध्यान करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका लगाव और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-
  ऊँ गं गणपतये नमः ।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(26/08/2015 - 24/09/2026)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 26/08/2015 को आरम्भ और 24/09/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र सामान्य रुप से एक शुभ ग्रह कहा जाता है जो संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का होता है। आपकी कुण्डली में यह एकादश भाव में स्थित है। यह आपकी जन्म कुण्डली के पंचम भाव को देख रहा है तथा उस पर भाव के कारकत्व का प्रभाव पड़ रहा है। यह विवाह का कारक भी है। भाव जिसमें यह स्थित है मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, समृद्धि, बड़े भाई, भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र एकादश अर्थात् आय भाव में स्थित है जहाँ से यह पंचम भाव को देख रहा है। इसके फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा तथा इस दशा काल में आपको कोई बड़ी या छोटी समस्या नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र एकादश भाव अर्थात् आय भाव के अतिरिक्त चतुर्थ अर्थात् अपने ही भाव में स्थित होकर भाव के कारकत्व को प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आपकी आय में वृद्धि होगी। आप वाहन खरीद सकते हैं और चल-अचल संपत्ति अर्जित करेंगे।

व्यवसाय :

आप अपना व्यवसाय स्वयं आरंभ करेंगे। आप मवेशियों की खरीद-विक्री और जमीन-जायदाद का कारोबार करेंगे जो आपके लिए लाभदायक होगा। आपके मित्रों के अतिरिक्त आपके बड़े भाई सहयोगी स्वभाव के होंगे जो आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आप स्त्रियों के प्रति आकर्षित होंगे। आप पुरुषों से अधिक स्त्रियों से मित्रता करेंगे और स्त्रियों का साथ पाने को उत्सुक रहेंगे। आपके बच्चे आपके सहयोगी होंगे जो अपनी मेहनत के बल पर समाज में आपका नाम रौशन करेंगे। यह दशा अति आनन्ददायक होगी।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(24/09/2022 - 24/07/2025)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 26/08/2015 को प्रारंभ हुई थी और वद 24/09/2026 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 24/09/2022 जो आपके लिए 24/07/2025 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

प्रथम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप ज्ञानवान होंगे। ज्ञान में वृद्धि के लिए फिर से अध्ययन प्रारंभ कर सकते हैं। मानसिक उत्कृष्टता और हाज़िर जवाबी में वृद्धि होगी। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 6 रत्ती का पन्ना सोने की अंगूठी में बुधवार के दिन प्रातःकाल मध्यमा अंगुली में प्रार्थना के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - केतु
(24/07/2025 - 24/09/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 26/08/2015 को प्रारंभ हुई थी और 24/09/2026 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 24/07/2025 को प्रारंभ होकर 24/09/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमें, विदेश में प्रभाव ओर जीवन को खतरों का परिचायक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के लग्न भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको अपमान और उलझनों का सामना करना पड़ सकता है। विषय-वासनाओं में रुचि बढ़ेगी जिससे पारिवारिक जीवन में विवाद हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- गरीबों को या मंदिर में कंबल दान दें।

- भूरा कुत्ता पालें।
- कुत्तों को भोजन दें।

महादशा :- सूर्य
(24/09/2026 - 23/09/2032)

सूर्य की महादशा 24/09/2026 को आरंभ और 23/09/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य द्वादश स्थान में अवस्थित है। सूर्य दर्प, आत्मा, सात्विक स्वभाव तथा का चेतनता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि द्वादश भाव मोक्ष, व्यय, यात्रा तथा धार्मिक विचारों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपकी धर्म के प्रति प्रवृत्ति होगी, आप यात्राओं पर जाएंगे और आपको शक्ति और प्रभुत्व की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। केवल आपकी आँखों को सावधानी की आवश्यकता है। आँख की पीड़ा और कष्ट से ग्रसित हो सकते हैं। अन्यथा आपका स्वास्थ्य और जीवन शक्ति उत्तम होंगे।

अर्थ :

आपका व्यय होगा, किन्तु फलदायी उद्देश्यों के लिये होगा। आपको विदेशी स्रोतों से भी धन की प्राप्ति होगी। षष्ठम भाव पर सूर्य की दृष्टि के कारण शत्रुओं, प्रतिस्पर्धियों और नौक्री से लाभ हो सकता है।

व्यवसाय :

आप दूसरों की सेवा कर उनसे मान्यता प्राप्त करेंगे। कुछ उतार-चढ़ाव की सम्भावना है, किन्तु कुल मिलाकर आप अपनी जीवन वृत्ति में अच्छा करेगे। आपको सरकार तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से प्रतिष्ठा मिलेगी। विदेश प्रवास अथवा विदेश में जीवन-वृत्ति भी हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सहकर्मियों और साझेदारों से लाभ मिलेगा। आपके सम्बन्ध उनके साथ मित्रवत् होंगे। आप इस दशा में अनुबन्ध-पत्र, करारनामा आदि पर हस्ताक्षर कर सकते हैं जिनका संबंध विदेश से हो सकता है। आप सरकारी, पशासनिक आदि कार्यों में सफल होंगे। तकनीकी तथा विज्ञान-सम्बन्धी सेवाएं लाभदायक होंगी। आप रत्नों, सोने, संगमरमर आदि का व्यापार कर सकते हैं। आप आयात निर्यात का व्यापार भी कर सकते हैं जिसमें कुछ यात्राएं होंगी।

परिवार :

कुछ दिनों के लिये आप अपने बच्चों से दूर जा सकते हैं। आपको उनसे सुख आनन्द की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।, कार्य-क्षेत्र में स्थिति उनके अनुकूल रहेगी, धन की प्राप्ति होगी तथा शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपकी माता के लिये समय भाग्यशाली रहेगा और आपको उनसे धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके पिता की एक अचल सम्पत्ति होगी तथा सुख और धन की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों का जीवन सफल रहेगा और बड़े भाई-बहनों को सभी प्रकार के लाभ मिलेंगे।

शिक्षा :

योग में आपकी रूचि होगी और आप धार्मिक प्रवचन देंगे या उनका आयोजन

करेंगे।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(24/09/2026 - 11/01/2027)

आपके लिए सूर्य की महादशा 24/09/2026 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 11/01/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में नगर में परिवर्तन संभव है। दूरस्थ स्थान या विदेशों की यात्रा भी संभव है जिससे लाभ और यश की प्राप्ति होगी। विदेश में जीविका प्राप्त हो सकती है या निर्यात व्यापार से लाभ होगा। अध्यात्म, प्राच्य विद्या में रुचि बढ़ेगी या शोधकार्य करेंगे। पराविद्या की सिद्धि हो सकती है। दान और मानवता की सेवा में ध्यान लगेगा।

शत्रु परास्त होंगे। मातहतो और सेवकों द्वारा धनप्राप्ति में सहायता मिलेगी। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। माता-पिता से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी की व्याधिओं के विरुद्ध प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। अध्यात्म में आपकी रुचि बढ़ेगी। संतान के लिए अप्रत्याशित परिवर्तन संभव है। आपके छोटे भाई-बहन अपने कार्य में प्रगति करेंगे। बड़े भाई-बहनों को लाभ मिलेगा।

शुभत्व की वृद्धि और व्याधिओं के उन्मूलन के लिए सूर्य मंत्र का जाप करें, लाल गाय को चारा खिलाएं और लाल वस्तुओं का दान करें।

ॐ घृणि सूर्याय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(11/01/2027 - 13/07/2027)

आपकी सूर्य की महादशा 24/09/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 13/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप धन, जायदाद, वाहन आदि प्राप्त करेंगे। आप धन-धान्य से पूर्ण होकर प्रसन्न रहेंगे। आपके फैसलों पर आपकी माता का प्रभाव पड़ेगा। आप सुख-शांति और सब सुविधाओं से युक्त रहेंगे। वाहन की प्राप्ति संभावित है। आप मकान का निर्माण या वर्तमान मकान का नवीनीकरण करेंगे। जायदाद संबंधी गतिविधियां अधिक रहेंगी।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी। जीवनसाथी के व्यवसाय में बदलाव आ सकता है। सेवारत जातकों को लाभ होगा, मगर उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। आपके विरोधी अधिक हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। आपके पिता के भाग्य में अचानक परिवर्तन हो सकता है। आपका निवास खुशियों और शांति से भरपूर रहेगा। आपकी रुचि बागबानी में हो सकती है।

स्वास्थ्य आपका उत्तम रहेगा मगर खांसी से बचने के लिए एलर्जी वाले पदार्थों से

दूर रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए सोमवार के दिन व्रत रखें और सफेद वस्तुओं का दान दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(13/07/2027 - 18/11/2027)

आपकी सूर्य की महादशा 24/09/2026 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 18/11/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से लाभ प्राप्त होगा। साहस, प्रसन्नता और धन की वृद्धि होगी। व्यवसाय/कार्य, सरकार, मातहतों और शुभेच्छुओं से लाभ प्राप्त होगा। मुकदमें में विजय प्राप्त होगी। प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। धन सरलता से आएगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार की मेहनत की कमाई में वृद्धि होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं। माता को जायदाद प्राप्त हो सकती हैं। छोटे भाई-बहनों की लंबी यात्राएं हो सकती हैं। बड़े भाई-बहनों को सफलता मिलेगी। सेवारत जातक विरोधियों को परास्त कर देंगे। परामर्शदाता मेहनत से धन कमाएंगे। व्यापारीगण व्यस्त रहेंगे। आपके बच्चे सक्रिय और स्फूर्तिवान रहेंगे और पढ़ाई में प्रगति करेंगे। अगर वे सेवाकार्य में हैं तो प्रगति करेंगे।

मामूली व्याधियां जैसे बायां कान या बायें ऊपरी अंग के रोग, ज्वर, घाव आदि आपको परेशान कर सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्तुओं का दान दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(18/11/2027 - 11/10/2028)

आपके लिए सूर्य की महादशा 24/09/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 18/11/2027 को प्रारंभ होकर 11/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। सुख-संपत्ति उत्तम होंगे। घर में उत्सव या विवाह हो सकता है। जीवनसाथी को धन और उच्चपद प्राप्त होंगे। पिता को निवेश से लाभ होगा। उन्हें आप से सुख मिलेगा। माता की तीर्थयात्रा होगी। भाई-बहनों को अर्थलाभ के अवसर मिलेंगे। उन्हें अचानक धन मिल सकता है। वे परिश्रम द्वारा आकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे।

आपकी संतान को भौतिक सुख-साधन प्राप्त होंगे। उनकी रुचि ज्ञान-विज्ञान में होगी। आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके शत्रु के क्रियाकलापों का भंडाफोड़ होगा। परिवर्तन आपके लिए लाभकारी हो सकता है। इससे सुख-साधन बढ़ेंगे। व्यापारियों को निर्यात और विदेश से लाभ होगा। परामर्शदाता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शत्रुओं पर विजय होगी। शरीर के ऊपरी भाग की

भावनात्मक व्याधियों से बचें। अरिष्ट से बचने के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(11/10/2028 - 31/07/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 24/09/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 11/10/2028 को प्रारंभ होकर 31/07/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपकी कई यात्राएं हो सकती हैं। धन का संचय हो सकता है मगर शुभ कार्यों पर खर्चा भी होगा। धर्म-अध्यात्म में रुचि होगी। बहुत से सराहनीय कार्य करेंगे। सफलता बाधाओं के बाद ही मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी; स्वास्थ्य उत्तम होगा। पारिवारिक सुख मिलेगा, माता-पिता से तसल्ली मिलेगी। पिता से कुछ संपत्ति मिल सकती है। वाहन प्राप्त हो सकता है। जायदाद से किराया और आमदनी बढ़ेंगे। नयी जायदाद क्रय कर सकते हैं। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। दानी बन सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है। उनकी विरोधियों पर विजय होगी, कार्य में अच्छे अवसर मिलेंगे, धन का लाभ होगा। आपके पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि हो सकती है; उन्हें अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। माता को लाभ होगा, स्वास्थ्य बेहतर होगा, यात्राएं होंगी। भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी। आपकी संतान शोधकार्य में सफल हो सकती है। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। कभी-कभी निराश हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे। परामर्शदाता स्वयं को संगठित करेंगे ; उनकी आय उत्तम रहेगी। व्यापारियों को लाभ अधिक, हानि कम रहेंगे।

नेत्र, कान, जिगर के रोगों से बचें। शुभत्व में वृद्धि हेतु विष्णुजी की पूजा करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(31/07/2029 - 13/07/2030)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 31/07/2029 को प्रारंभ होगी और 13/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी धर्म और सेवा कार्य में रुचि होगी। छोटे भाई-बहनों का विवाह हो सकता है। पिता के साथ मधुरता बनाये रखने के लिए प्रयास करना होगा। संतान के साथ भी संबंध बिगड़ सकते हैं। इस अवधि में किये निवेश की समीक्षा सावधानीपूर्वक करनी होगी। आपकी संन्यास और योग में रुचि होगी। खर्चे अधिक होंगे, मगर आय भी बनी रहेगी।

जीवनसाथी भाग्यशाली होंगे, धन प्रचुर होगा। आपके पिता को साझेदारों से लाभ होगा, उच्च पद प्राप्त करेंगे। माता को धन मिलेगा, लंबी यात्राएं होंगी। भाई-बहनों के विवाह हो

सकते हैं या शिशु का जन्म संभव है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा। परामर्शदाता स्पर्धा में विजयी रहेंगे। व्यापारियों को ठोस लाभ होगा।

कान और श्वसन तंत्र के रोगों से सावधान रहें। कष्ट से छुटकारे के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(13/07/2030 - 19/05/2031)

आपकी सूर्य की महादशा 24/09/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 13/07/2030 को प्रारंभ होकर 19/05/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद और अधिकार प्राप्त करेंगे। जीवनसाथी से सुख और आराम की प्राप्ति होगी। जमीन, जायदाद और पिता से लाभ मिलेगा। मामा पक्ष के लोग धनधान्य से परिपूर्ण होंगे। माता से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यापार या सट्टेबाजी से अच्छी आय संभव है। जीवनसाथी या साझेदार का साथ विचार विनिमय सकारात्मक रहेगा। लेखकों और विचारकों के लिए यह समय शुभ रहेगा। जीवन साथी को व्यवसाय, लेखन, पत्रलेखन से अच्छी आय हो सकती है। साझेदार को लाभ होगा।

आपके पिता को सट्टेबाजी या निवेश से धन मिलेगा। उन्हें संतान से सुख मिलेगा और उच्चपद मिल सकता है। माता को कार्यों में सफलता, धन का लाभ और शत्रुओं पर विजय संभावित हैं।

छोटे भाई-बहनों को धन मिलेगा, बड़ों की लघु यात्राएं हो सकती हैं। संतान को उच्चशिक्षा के अवसर प्राप्त होंगे और वर्तमान शिक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी। जीवनस्तर पहले जैसा रहेगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। स्नायविक थकान से सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(19/05/2031 - 24/09/2031)

आपके लिए सूर्य की महादशा 24/09/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/05/2031 को आरंभ होकर 24/09/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों

का कारक है।

इस अवधि में व्यापार से धनागम होगा। साझेदारी लाभप्रद रहेगी। कार्य-व्यवसाय हेतु यात्राएं होंगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से लाभ होगा। शत्रु और स्पर्धी आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं।

दांपत्य जीवन में कुछ समस्या आ सकती है या जीवनसाथी किसी कार्य-व्यवसाय के कारण घर से दूर जा सकते हैं। आध्यात्मिक कार्यों में आपकी रुचि होगी और परोपकार की भावना में वृद्धि होगी।

जीवनसाथी को लाभ होगा, संपदा बढ़ेगी, वाहन सुख रहेगा। पिता का समय प्रसन्नता से बीतेगा। उन्हें सफलता, प्रोन्नति, भूमिप्राप्ति, उच्चाधिकारियों से लाभ का संकेत है। माता को अचल संपत्ति, रिश्तेदारों से मदद मिलेगी। भाई-बहनों को निवेश से लाभ होगा।

आपकी संतान को सहयोगियों से लाभ होगा। उन्हें नये मित्रों से पहचान बढ़ाने से पहले सतर्क रहना चाहिए।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ प्राप्त करेंगे, दूसरों से व्यवहार करते वक्त सावधान रहें। परामर्शदाताओं की व्यस्तता बढ़ेगी, प्रसिद्धि मिलेगी। व्यापारी शत्रुओं पर विजयी होंगे।

उत्सर्जन तंत्र और आंतों के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, सतनता, तिल और कस्तूरी का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(24/09/2031 - 23/09/2032)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आप सफल होंगे। आपकी सभी आकांक्षाओं और इच्छाओं की पूर्ति होगी। संतान से सुख मिलेगा। संतान का जन्म भी हो सकता है। स्त्रियों से संबंधित कार्य बहुत लाभकारी रहेगा। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। कला में रुचि होगी। अपनी किस्मत का आभास आपको रहता है।

आपके जीवनसाथी को निवेश, संतान, कला आदि से लाभ होगा। पिता की लघु यात्राएं होंगी, पड़ौसियों से मधुर संबंध रहेंगे। माता को अप्रत्याशित धन मिल सकता है। भाई-बहनों का समय भाग्यशाली रहेगा; उनकी यात्राएं होंगी, ज्ञानार्जन होगा। आपकी संतान को सहयोगियों से लाभ मिलेगा; वे सुर्खियों में रहेंगे, सब सुख नसीब होंगे, उच्चपद मिल सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजय होगी, कार्यालय की स्थिति उत्तम होगी। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारी भी अधिक धन कमाएंगे।

कान, पैर और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मी

जी की आराधना करें।

महादशा :- चन्द्र
(23/09/2032 - 24/09/2042)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 23/09/2032 को आरम्भ और 24/09/2042 को समाप्त होगी।

चन्द्र मानसिक शान्ति और सुख का कारक है इसलिए दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति, समृद्धि तथा मानसिक शांति की प्राप्ति होगी। इस अवधि में आप पूरी तरह सक्रिय रहेंगे, आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और धर्म-ईश्वर की ओर आपका झुकाव होगा।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुखी, शान्तिपूर्ण व उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्त्तव्यों और दैनिक गतिविधियों को पूरे उत्साह के साथ पूरा करेंगे।

किसी बड़े रोग अथवा किसी अप्रिय दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

इस अवधि में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। गाड़ी और जमीन-जायदाद के क्रय की सम्भावना है। आपके बैंक बैलेन्स में पर्याप्त वृद्धि होगी और आप सुख-सुविधा के साधनों पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

नये विषयों और कार्यों की खोज में आपकी रुचि होगी। फलस्वरूप आपकी रचनात्मकता में वृद्धि होगी जिसकी आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे। आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति मज़बूत होगी और सम्मान में वृद्धि तथा पद में उन्नति होगी। आपको यश और ख्याति प्राप्त होगी और आपका सर समाज में ऊँचा रहेगा। आपकी कुण्डली में यात्रा का संकेत है जो आपकी भलाई के लिए होगी। आपको यात्रा के अनेक अवसर मिलेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चन्द्र चतुर्थ भाव का कारक है जो परिवार, सम्पत्ति, माता तथा वाहन का द्योतक है। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा। सगे-संबंधियों तथा माता के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। मामा या नाना के साथ भी आपका संबंध मधुर रहेगा और उनसे लाभ मिलेगा।

इस दशा के दौरान आपके मामा को भी लाभ होगा तथा संभव है कि आपके और आपके मामा के बीच परस्पर मधुर संबंध के कारण आप दोनों को लाभ होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

नये विषयों के अध्ययन के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है। आप कोई पाठ्यक्रम

आरम्भ कर सकते हैं अथवा अपने ज्ञान में सुधार के लिए अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं। आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(23/09/2032 - 24/07/2033)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 23/09/2032 को प्रारंभ होकर 24/09/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 23/09/2032 को प्रारंभ होकर 24/07/2033 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी राशि में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

मन के कारक चंद्र के चतुर्थ भाव में स्थित होने से आपके माता-पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अचल संपत्ति और वाहनसुख का योग है। नये आवास या संपत्ति का उपयोग कर सकते हैं या नया वाहन खरीद सकते हैं। शैक्षणिक योग्यता में वृद्धि के लिए किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र के 11000 जाप करें। केवल भावनाओं में बहकर कार्य न करें, बुद्धि का प्रयोग करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(24/07/2033 - 23/02/2034)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 23/09/2032 को प्रारंभ होकर 24/09/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 24/07/2033 को प्रारंभ होकर 23/02/2034 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। इसे लाभ भाव भी कहते हैं। मंगल ऊर्जा और अचल संपत्ति का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 2,5,6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा के दौरान आपके भाषणों में ओज रहेगा, मगर आप क्रोधी हो सकते हैं। आप धनवान बनेंगे और अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। आप साहसी होंगे और उच्चवर्ग में धाक होगी। धन प्राप्ति की आपकी लिप्सा संतृप्त नहीं होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन भौम गायत्री मंत्र का जाप 108 बार करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(23/02/2034 - 24/08/2035)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 23/09/2032 को प्रारंभ हुई और 24/09/2042 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18

मास रहेगी। आपके लिए यह 23/02/2034 को प्रारंभ होकर 24/08/2035 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। राहु छायाग्रह है और लगभग शनि के अनुसार कार्य करता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली में सप्तम भाव को दृष्टि द्वारा प्रभावित कर रहा है। सप्तम में केतु स्थित है।

इस अवधि में आप स्वार्थी, शक्की और निम्नकार्यों में रुचि रखने वाले हो सकते हैं। स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है। कार्यप्रणाली कुछ अजीब हो सकती है। विवाहित जीवन में विवाद संभव है।

नकारात्मक विचारों से बचें। स्वयं पर भरोसा करें ओर आगे बढ़े। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(24/08/2035 - 23/12/2036)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 23/09/2032 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 24/08/2035 को प्रारंभ होकर 23/12/2036 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति कुंडली के 4, 6, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके शुभत्व में वृद्धि कर रहा हैं

इस अवधि में आपकी धर्म में रुचि घट सकती है। दुराचार और वासनापूर्ण जीवन से बचें। सुख-सुविधाओं, वाहन, वस्त्र, आभूषण आदि के लिए आपका आकर्षण तीव्र होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 (रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(23/12/2036 - 25/07/2038)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 23/09/2032 को प्रारंभ हुई और 24/09/2042 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 23/12/2036 को प्रारंभ होकर 25/07/2038 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का

परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप साहसी और धनी होंगे, मगर कुछ एकांतप्रिय हो सकते हैं। उच्चाधिकारी आपको सम्मानित करेंगे। स्थानीय संस्थाओं के अध्यक्ष आदि बन सकते हैं। बहुत से व्यक्तियों को संरक्षण प्रदान करेंगे। सफलता बाधाओं को पार करने के बाद मिलेगी। मन उदास रह सकता है, पर कुछ समय बाद सुधार आएगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी में जड़ा नीलम शनिवार के दिन पूजा के बाद दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में अंगूठी को कच्चे दूध या गंगाजल से धोने के बाद शनि का वैदिक मंत्र पढ़ते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(25/07/2038 - 24/12/2039)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 23/09/2032 को प्रारंभ हुई थी और 24/09/2042 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 25/07/2038 को प्रारंभ होकर 24/12/2039 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। इस अवधि में आपकी रुचि हंसी-मजाक में रहेगी। मानसिक शक्ति प्रबल रहेगी। ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। प्राच्य विद्या और अध्यात्म का अध्ययन करेंगे। किसी पाठ्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें। भिक्षुक को मूंग की दाल, विशेषतया बुधवार को दान दें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(24/12/2039 - 24/07/2040)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 23/09/2032 को प्रारंभ हुई ओर 24/09/2042 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 24/12/2039 को प्रारंभ होकर 24/07/2040 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली में लग्न को दृष्टि द्वारा प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में दांपत्य संबंधों में कुछ कष्ट हो सकता है। आपकी वासना में वृद्धि के

कारण जीवनसाथी रुष्ट हो सकते हैं। चरित्र में गिरावट न आने दें। अपमान और वीर्यशक्ति में ह्रास के संकेत है। अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(24/07/2040 - 25/03/2042)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 23/09/2032 को प्रारंभ होकर 24/09/2042को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 24/07/2040 को प्रारंभ होकर 25/03/2042 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

इस अवधि में आपकी सैलानी प्रवृत्ति प्रबल रहेगी। इससे बहुत से मित्र बनेंगे और लोकप्रियता बढ़ेगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से भी संबंध प्रगाढ़ होंगे। सुख-सुविधाएं भरपूर रहेंगी। धन का लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(25/03/2042 - 24/09/2042)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 23/09/2032 को प्रारंभ होगी और 24/09/2042 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 25/03/2042 से प्रारंभ होकर 24/09/2042 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका के 12वें भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है और आत्मा व पिता का कारक है।

इस अवधि में आप अनैतिक जीवन की ओर उन्मुख हो सकते हैं। कार्यों में असफलता प्राप्त हो सकती है। आपकी संतान भी आपकी चिंताएं बढ़ाएगी। नेत्ररोग से सावधान

महादशा :- मंगल
(24/09/2042 - 23/09/2049)

मंगल की महादशा 24/09/2042 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 23/09/2049 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। मंगल की दशा में आपको शुभ फल मिलेगा इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपको हर प्रकार का लाभ, आराम ओर सुखमय पारिवारिक जीवन मिला होगा। इस दशा के दौरान आपको सफलता और हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आप लोकप्रिय होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मंगल के कारण आपमें स्फूर्ति, जीवन शक्ति और रोग से लड़ने की क्षमता होगी। आप स्वतंत्र विचार के व्यक्ति हैं और आप अपना विरोध बरदाश्त नहीं कर सकते। इस दशा के दौरान आप अपने नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। आप कृत संकल्प होंगे और आप में शक्ति व आत्मविश्वास होगा। आप दाँत और ताप से सम्बद्ध संक्रामक बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।

अर्थ और व्यवसाय :

जहाँ तक अर्थ का प्रश्न है, आपके लिए यह दशा अति उत्तम होगी। आपको निवेश तथा सट्टे से लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनसंचय करेंगे और आपकी सम्पत्तियों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। आपके अधीनस्थ तथा सहकर्मी आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपके अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी। हर प्रकार का लाभ मिल सकता है। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी। संगठन में परिवर्तन हो सकता है जो अन्ततः लाभदायक सिद्ध होगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध, व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। योजना और प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में आप अच्छा करेंगे। आप रसायन, समुद्री उत्पाद या कुटीर उद्य ोग का चयन कर सकते हैं। आप एक सफल दन्तचिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं या आपका तकनीकी या कृषि जीवन सफल होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल और बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी यात्राएं होंगी। शनि तथा शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्राएं हो सकती हैं। इस दशा में आपको जमीन जायदाद और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको

कुछ पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। तकनीकी विषय, गणित, विधि, इन्जीनियरिंग या चिकित्सा के विषय आपके लिये उपयुक्त होंगे। खेल तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में आपकी रुचि होगी। आप कार्यक्रमों के आयोजन में अग्रणी होंगे तथा अपने नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनकी आय, सम्पत्ति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनकी छोटी यात्राएँ होंगी और सम्बन्धियों से लाभ प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी, उनकी लम्बी यात्राएँ होगी और पिता से लाभ प्राप्त होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की परियोजनाएं सफल होंगी, उन्हें यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आप के मित्रों की संख्या विशाल होगी जो आपकी बहुत सहायता करेंगे। आपको थोड़े प्रयास से ही सफलता मिलेगी और अनेक मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आपके लिये शुभ होगी, आपकी आय तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आपका निवेश सफल होगा। आगे राहु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको साझेदारी में कुछ लाभ तथा जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। शनि की अन्तर्दशा कुछ मिश्रित फल देगी और आपके कार्य में परिवर्तन होगा और यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। लग्नेश बुध के कारण आपको यश, ख्याति, सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। केतु कुछ मानसिक तनाव दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा तथा निवेश सफल रहेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएँ हो सकती हैं तथा भाइयों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिल सकता है, आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(24/09/2042 - 20/02/2043)

आपके लिए मंगल की महादशा 24/09/2042 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 24/09/2042 को प्रारंभ होकर 20/02/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप धनी, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। जीवन में खुशियां रहेंगी। आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है। संतान सुखकारी होगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आप शक्तिशाली और सफल होंगे। मातहत सहयोग करेंगे। धनागम होगा, मगर खर्चे भी बढ़ेंगे। कटु वचन बोलने से बचें।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा; जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है। उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम करना होगा; उन्हें छोटी-मोटी बीमारियों से बचाव करना चाहिए। माता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। भाई-बहन धन कमाएंगे; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपकी संतान को सफलता और प्रसिद्धि मिलेगी; परीक्षा में सफल होंगे, साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, हाथ-पैरों में कुछ कष्ट हो सकता है। मंगल के गायत्री मंत्र का जाप लाभदायक रहेगा।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(20/02/2043 - 09/03/2044)

आपके लिए मंगल की महादशा 24/09/2042 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 20/02/2043 को प्रारंभ होकर 09/03/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे और शीघ्रता से फैसले करेंगे। इससे शत्रु बढ़ सकते हैं, लेकिन आप उन पर विजयी होंगे। जीवनसाथी से धन प्राप्त हो सकता है। विदेश से व्यापारिक संबंध हो सकते हैं; व्यापार संबंधी लंबी यात्राएं हो सकती हैं। जीवनसाथी और साझेदार से मधुर संबंध बनाए रखने के लिए सावधानी की आवश्यकता है। अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता के धन में वृद्धि

होगी; उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपकी माता तीर्थयात्रा कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों को धन का लाभ होगा; उन्हें धनार्जन के बहुत से अवसर मिलेंगे। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे ; लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

आपकी संतान को भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। अगर से सेवारत हैं तो उच्चपद और धन प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो शुत्रओं से सावधान रहें, वे आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं। परामर्शदाता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारी अनुबंधों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(09/03/2044 - 13/02/2045)

आपकी मंगल की महादशा 24/09/2042 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 09/03/2044 को प्रारंभ होकर 13/02/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपके शत्रु परास्त होंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं। धार्मिक स्थलों की यात्रा होगी। स्पर्धियों पर विजय होगी; मातहतों और किरायेदारों से लाभ होगा। रोज़गार के नये अवसर मिलेंगे, कार्यालय में सुविधाएं बढ़ेंगी। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। अच्छे मित्र बनेंगे। अचानक धन प्राप्त हो सकता है। जीवनसाथी को चुनाव या स्पर्धा में विजय मिलेगी। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे; उन्हें घरेलू सुख मिलेगा। माता की लंबी यात्रा हो सकती है; खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपके भाई-बहन कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण हो सकती है; उन्हें अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, स्थान में परिवर्तन संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो किसी समझौते पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं की लघु यात्राएं और मामूली परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर आंखों और पैरों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र और हल्दी का दान करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

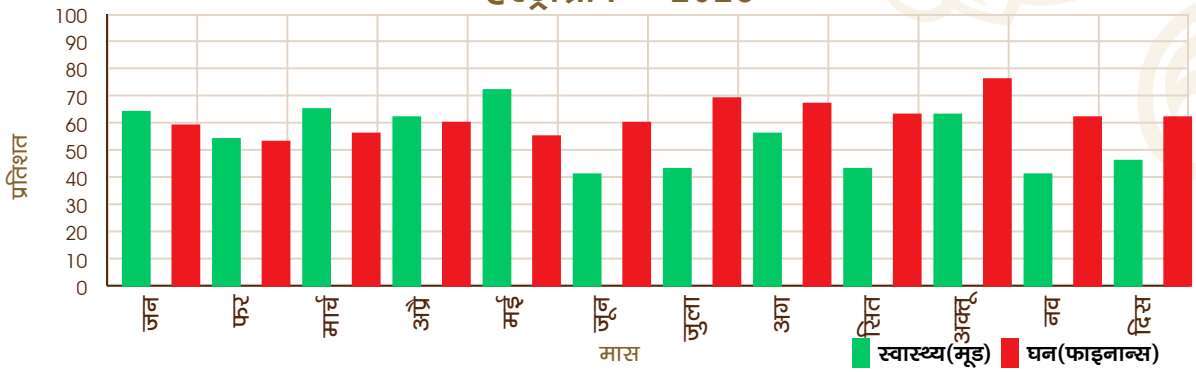

एस्ट्रोग्राफ - 2026

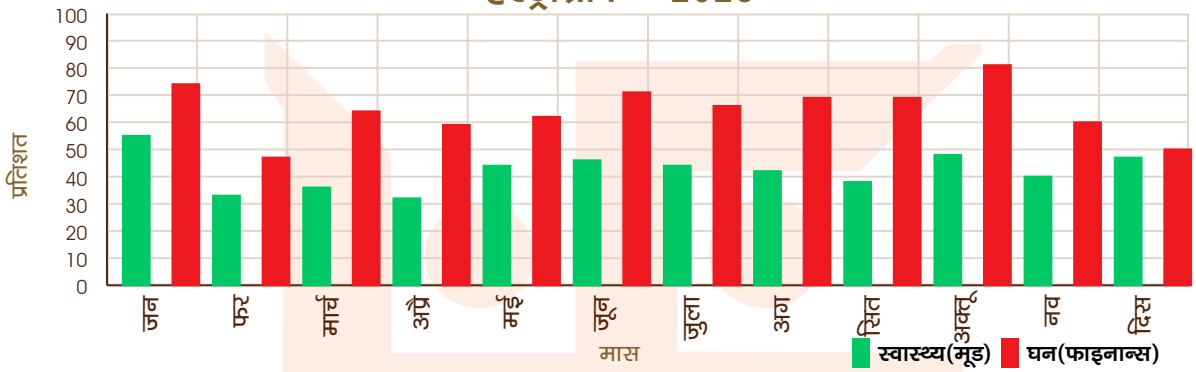

एस्ट्रोग्राफ - 2027

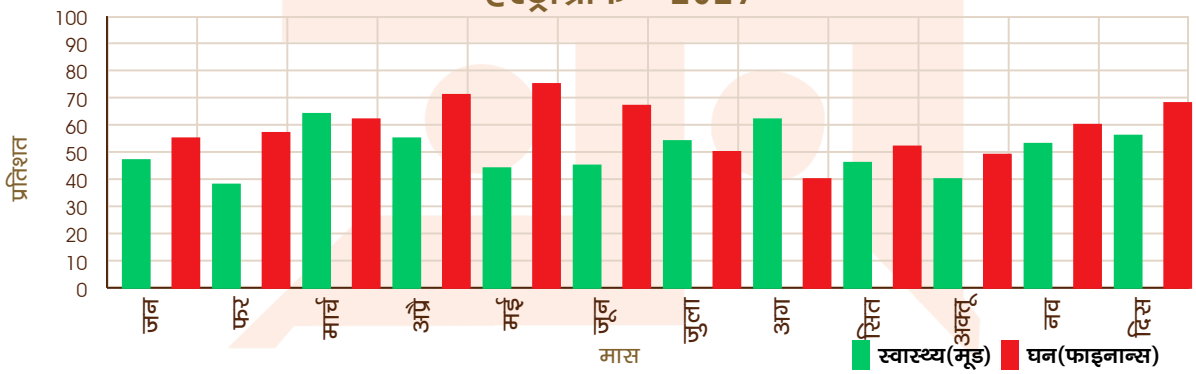

एस्ट्रोग्राफ - 2028

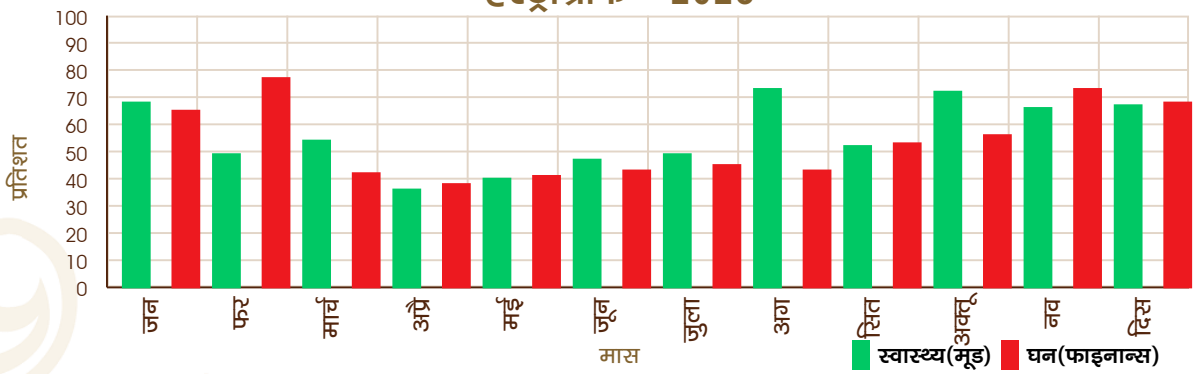

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ - 2029

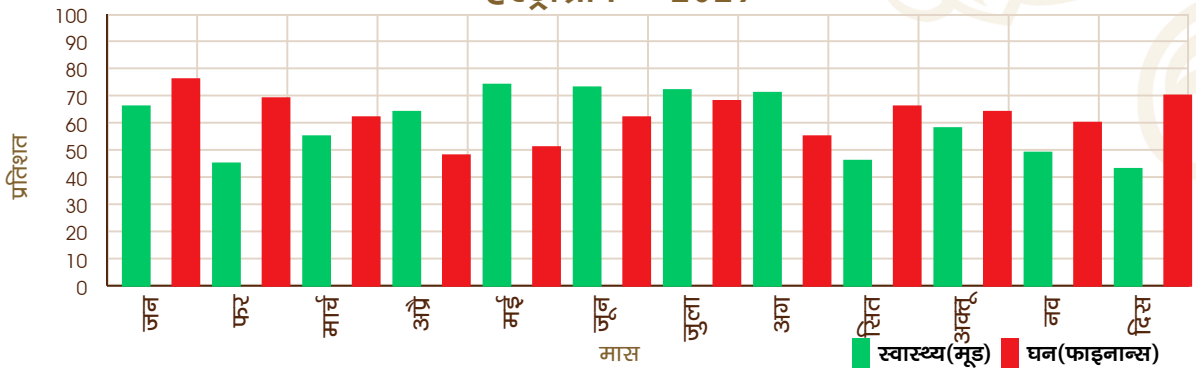

एस्ट्रोग्राफ - 2030

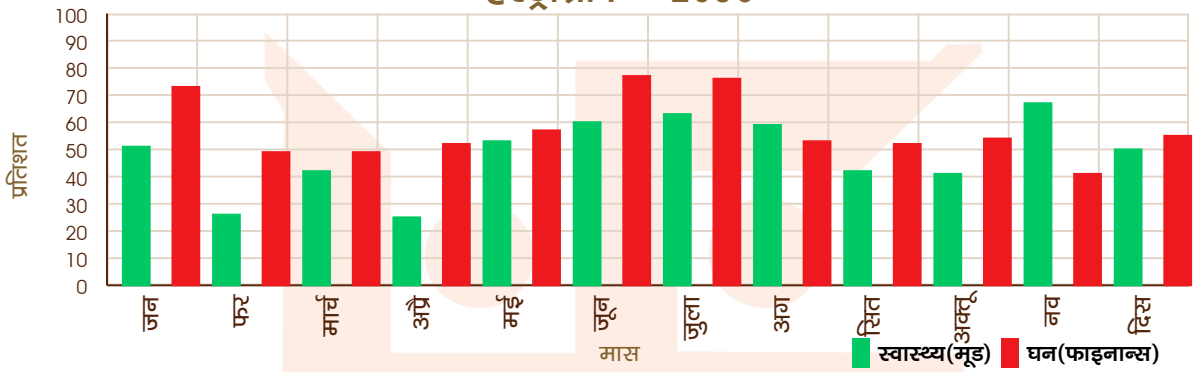

एस्ट्रोग्राफ - 2031

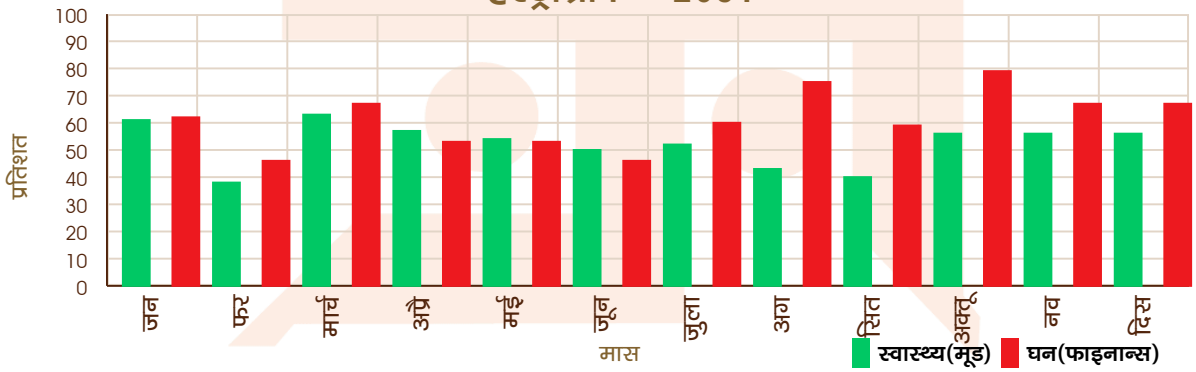

एस्ट्रोग्राफ - 2032

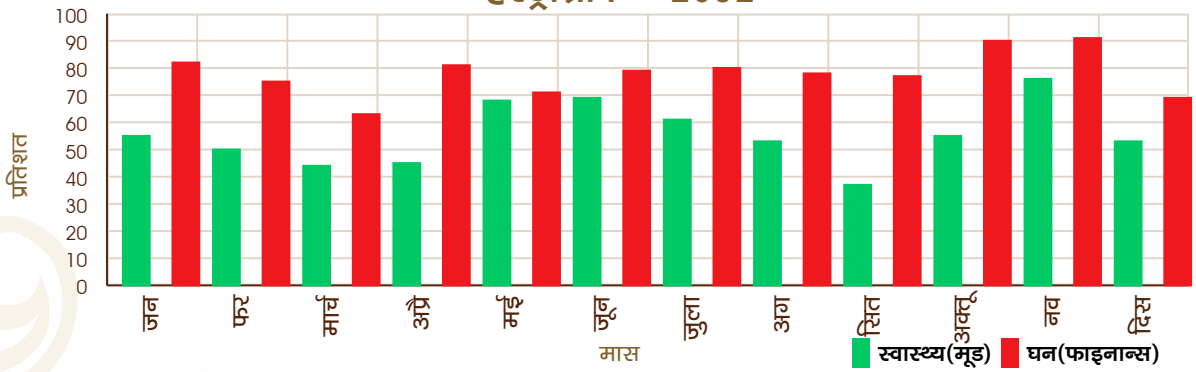

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ - 2033

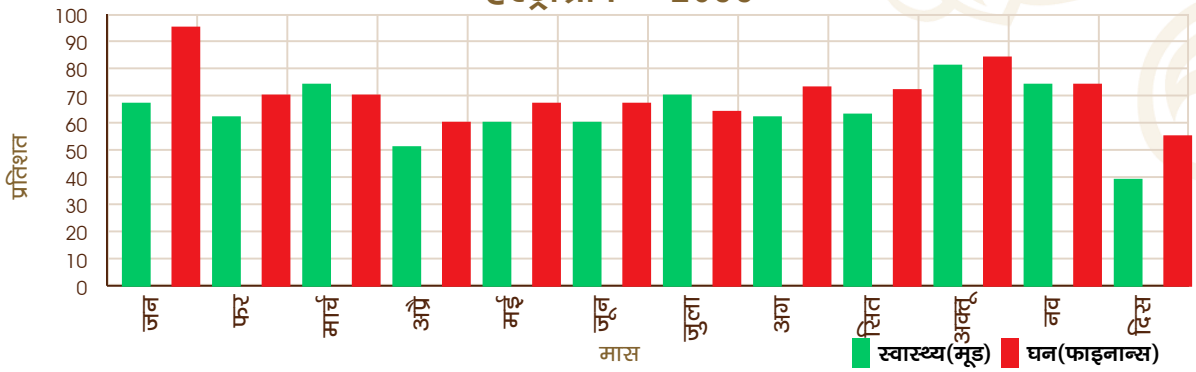

एस्ट्रोग्राफ - 2034

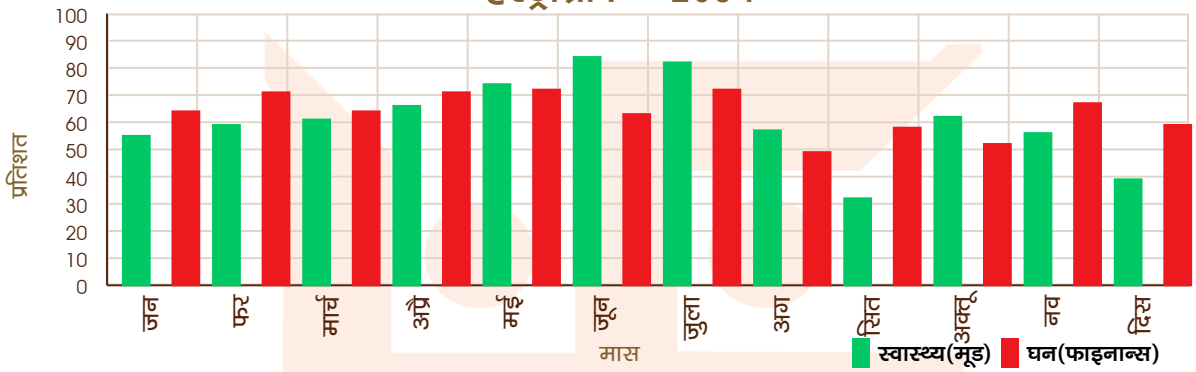

एस्ट्रोग्राफ - 2035

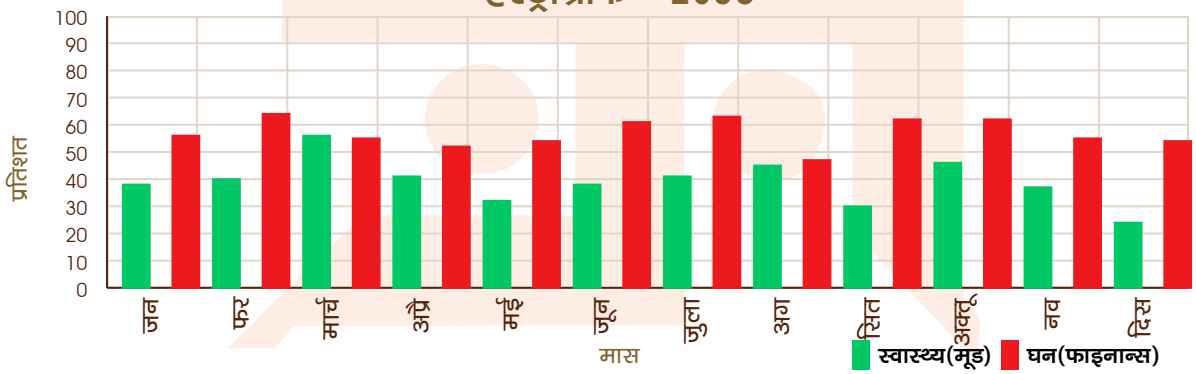

एस्ट्रोग्राफ - 2036

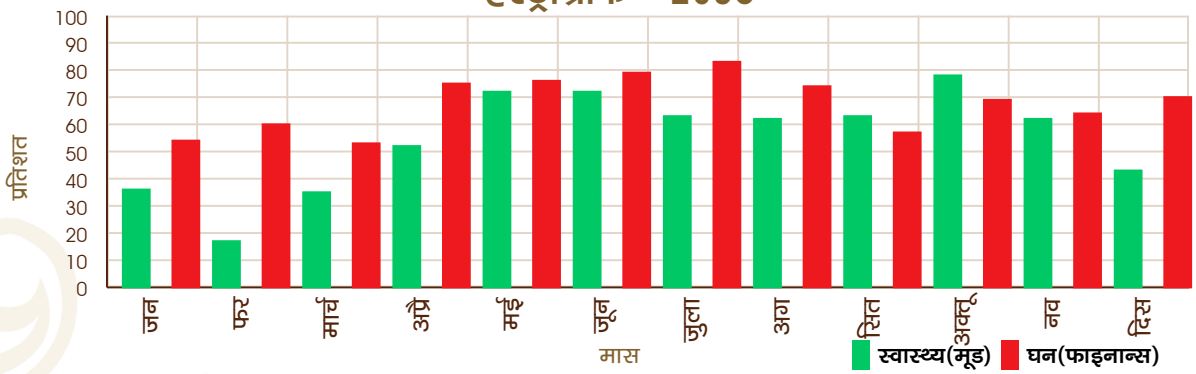

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ - 2037

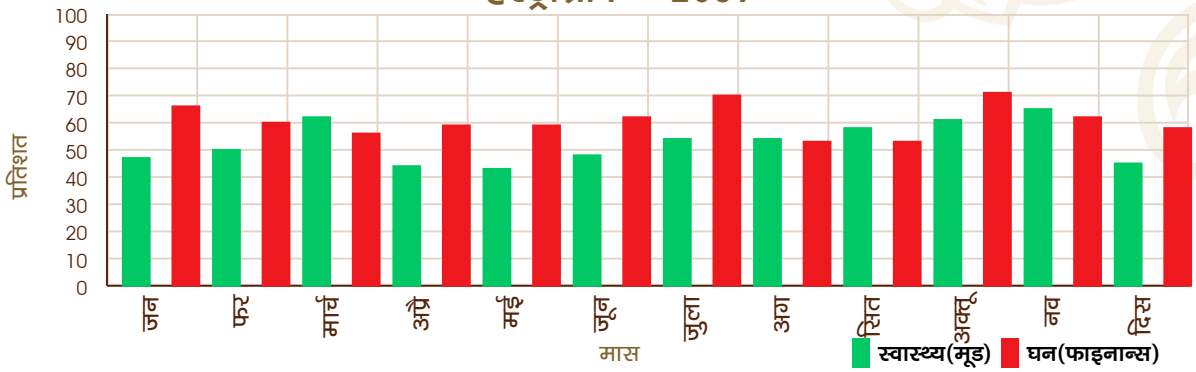

एस्ट्रोग्राफ - 2038

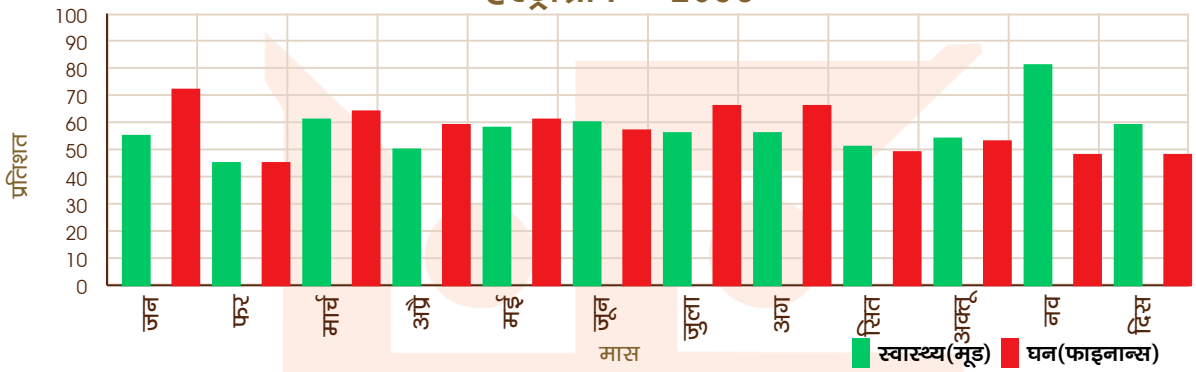

एस्ट्रोग्राफ - 2039

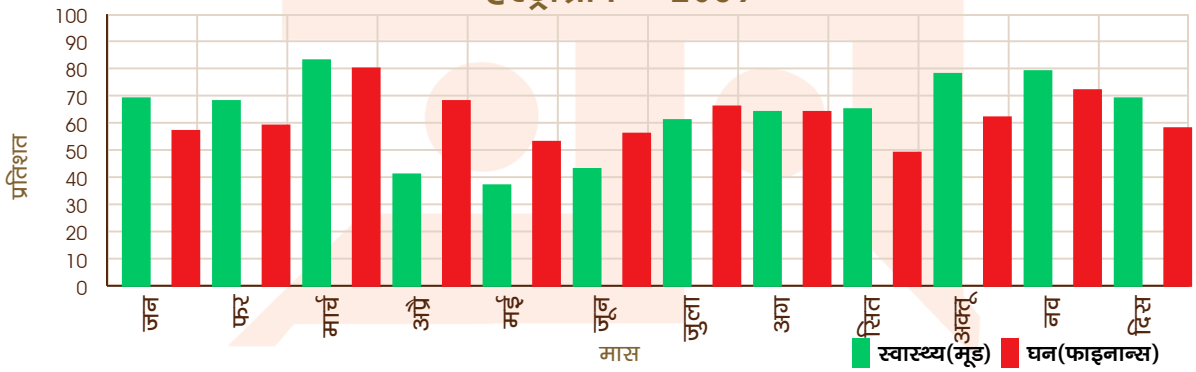

एस्ट्रोग्राफ - 2040

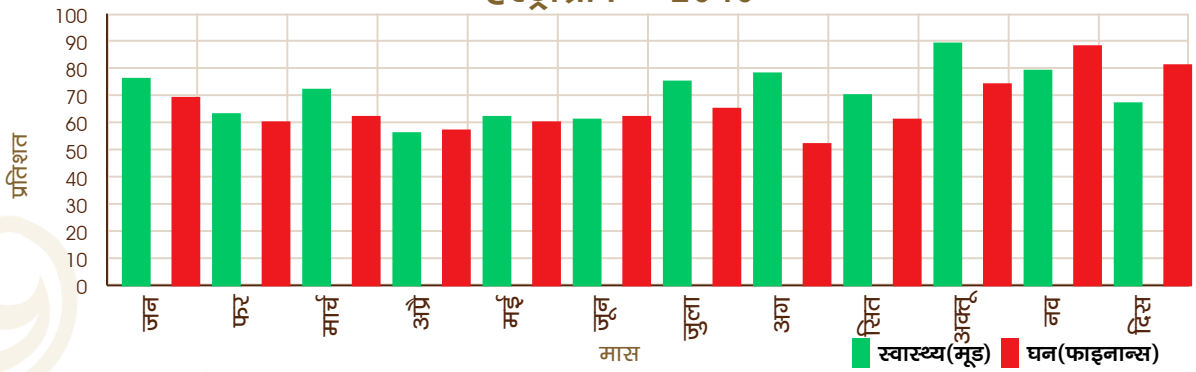

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ - 2041

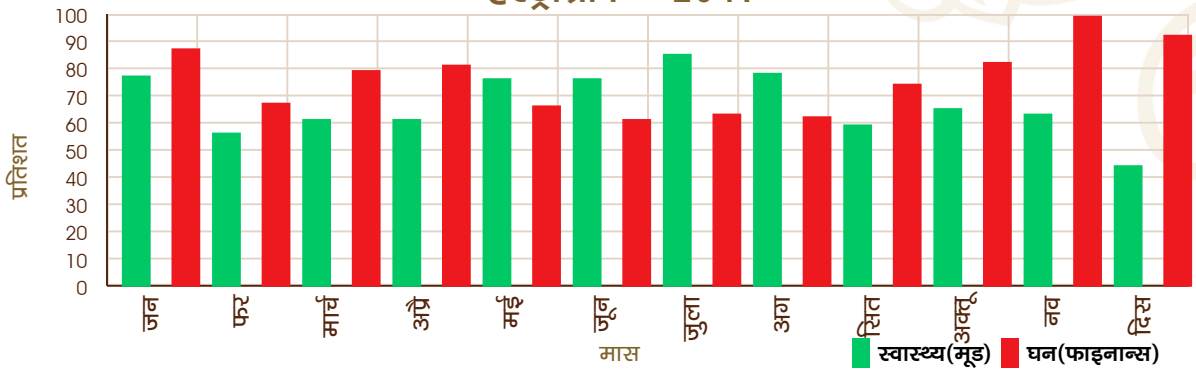

एस्ट्रोग्राफ - 2042

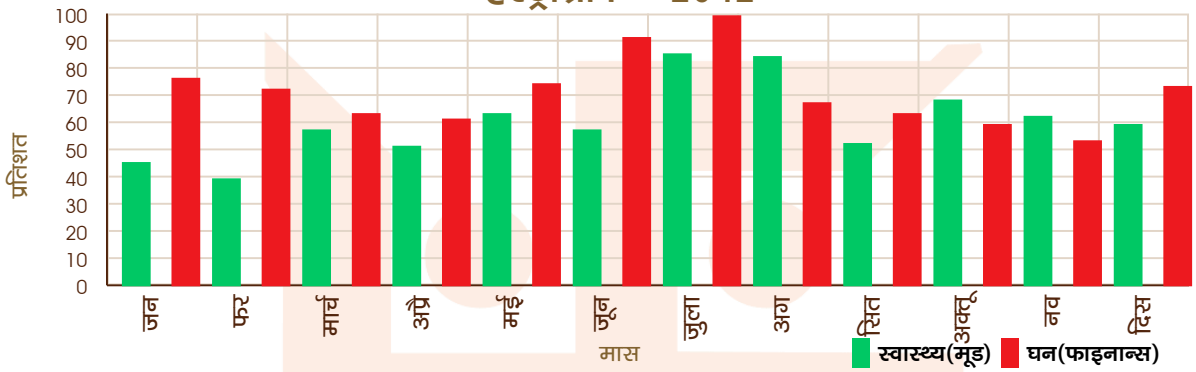

एस्ट्रोग्राफ - 2043

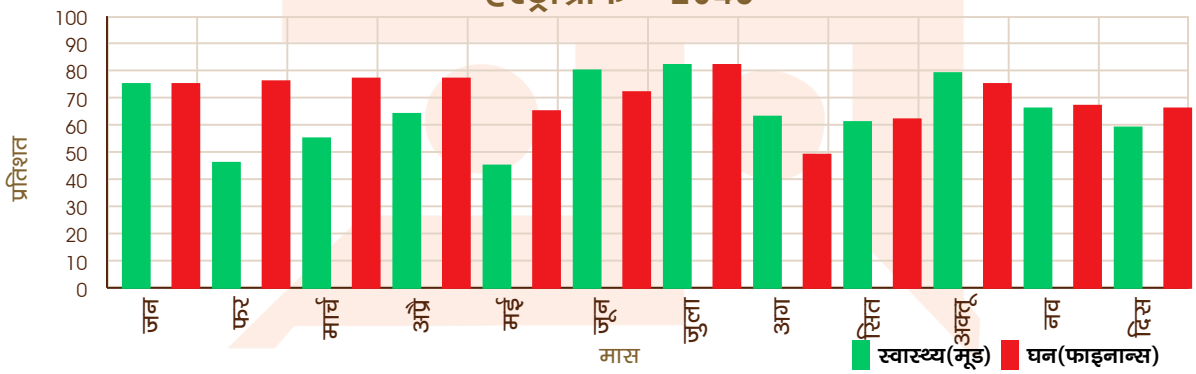

एस्ट्रोग्राफ - 2044

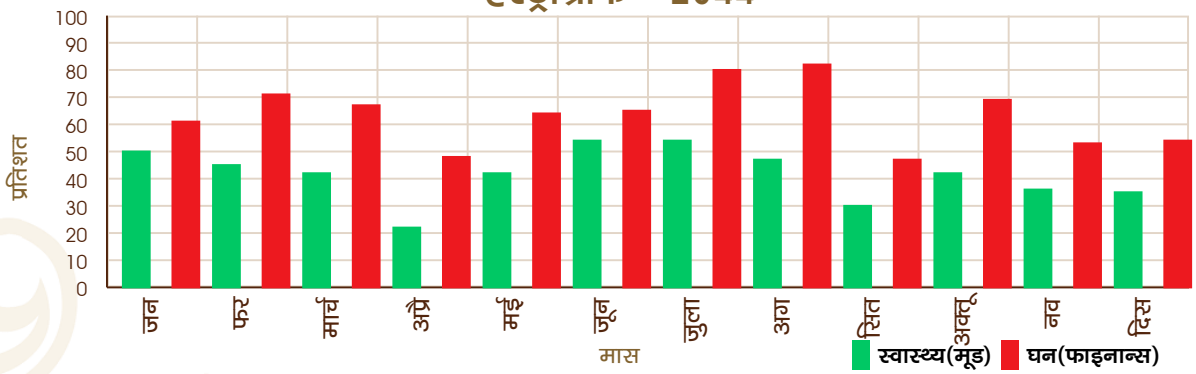

योग

भद्र योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षःस्थलो
रम्या पीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यगात्रोच्छ्रयः ।
कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगण्डस्थलः ।
प्राज्ञः पङ्कजगर्भपाणिचरणः सत्त्वाधिको योगवित् ।।
शङ्खासिकुंजरगदाकुसुमेषकेतु-
चक्राब्जलाङ्गलविचिह्नितपाणिपादः।
यात्रागजेन्द्रमदवारिकृतार्द्रभूमिः
सत्कुङ्कुमप्रतिमगन्धतनुः सुघोषः ।।
संभूयुगोऽतिमतिमान् खलुशास्त्रवेत्ता
मानोपभोगसहितोऽपि निगूढगुह्यः।
सत्कुक्षिधर्मनिरतः सुललाटपट्टो
धीरो भवेदसित कुंचित केशपाशः।।
स्वतन्त्रः सर्व कार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमी।
भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः।।
भारं तुलायां तुलयेत्प्रयत्नैः श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः।
भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो। जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम्।।

।। मानसागरी ।। अ. 4/श्लोक 2, 1-5 ।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर बुध केन्द्र में हो तो भद्रनाम योग बनता है।

इस योग वाला जातक सिंह के समान आकृतिवाला, हाथी के समान चलने वाला, स्थूल जंघा, विशालवक्षस्थल वाला, हृष्ट-पुष्ट मनोहर बांहो वाला, कामी, विद्वान्, बलवान तथा योगिचित् होता है। हाथ पांव में शङ्ख, चक्र, खड,ग हस्ती, गदा, पुष्प, वाण, पताका, चक्र, कमल, हल तथा चन्द्रमा आदि चिह्नों से युक्त जातक भाग्यशाली होता है। सुगन्धित शरीर वाला, मधुर आवाज वाला होता है। मानी, भोगी, रहस्य कार्य को छिपाने वाला, धार्मिक, धैर्यवान, इच्छानुकूल काम करने वाला, स्वजनों को क्षमा न करने वाला तथा उसकी संपत्ति को दूसरा भोग करने वाला होता है। तुला में भार (बोझ) तोलने वाला, पुत्र स्त्री से सुख भोगने वाला तथा दीर्घायु होता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप गणितज्ञ, प्रतिष्ठित व्यवसायी, उच्च श्रेणी के प्रकाशक, वाणिज्य विशेषज्ञ उच्चवक्ता तथा अपने

कार्य क्षेत्र में प्रभावशाली व्यक्ति होंगे।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,राहु,केतु योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य — योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः
स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।
योगः स पर्वताख्यः।
स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 35, 36।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना, कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

चामर योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
प्रत्यहं व्रजति वृद्धिमुदग्रां शूक्लचन्द्रइवशोभनशीलः।
कीर्तिमान् जनपतिश्चिरजीवी श्रीनिधिर्भवति चामरजातः।।
।। फलदीपिका।। अ.6/ श्लोक 44-45।।

यदि जन्मकुण्डली में लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न को शुभ ग्रह देखते हों तथा लग्नाधिपति अस्त न होकर उत्तम स्थान में अपनी राशि का या स्वस्थानीय होकर बैठा हो तो चामर योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप शुक्ल पक्ष की चन्द्रमा की तरह वृद्धि को प्राप्त करेंगे। उसी तरह सुशील और सुन्दर भी होंगे। आप लक्ष्मीवान्, कीर्तिवान, दीर्घायु और लोकपति होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।

।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि — योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : केतु,मंगल — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सर्प भय योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश राहु स्थित राशि पद से युक्त हो अथवा लग्न राहु युक्त हो तो जातक को सर्प का भय होता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सर्प का भय होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

भवन नाश योग

गेहाधिपे नाशगते यदि स्यात्पापेक्षिते तद्गृहनाशमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सुखभाव का स्वामी द्वादश भाव में पाप ग्रह से युत हो तो भवन नष्ट हो जाता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु योग की संभावना : 48 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको भवन सुख से वंचित होना पड़े ऐसा प्रतीत होता है।

विद्यावाहन सम्पत्ति विपुल धन योग

स्वोच्चराशिगतश्चान्द्रिः केन्द्रकोणसमन्वितः ।
विद्यावाहनसम्पत्तिं करोति विपुलं धनम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.-107 ।।

जन्मपत्रिका में बुध यदि केंद्र या त्रिकोण में अपनी उच्च राशि का हो तो विद्या, वाहन, संपत्ति और विपुल धन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको विद्या, वाहन, संपत्ति और विपुल धन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-10 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग योग

चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजः सदा।
रक्तपित्तेन हीनाङ्गो नानाव्याधिसमन्वितः।।
।। मानसागरी ।। अ.4/अरि.-57।।

यदि जन्मकुंडली में चन्द्र के क्षेत्र में मंगल स्थित हो तो जातक रक्त-पित्त के विकार से हीन अच्ग और नाना प्रकार की व्याधियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप रक्त-पित्त दोष से दुखी तथा विकलांग होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,राहु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,राहु,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।